

भी स्व० दरियाव महाराज की अनुभवागरा

प्यीर -

्रिप्तस्परागत आचाय्यों के संचिप्त जीवन-चरित्रों सहित अनन्त औ अर्तधान महन्त महार राज श्रीचमारामजी महाराज के

राज श्राचमारामजा महाराज क ंसमय में रामजी की प्रेरणा

> से छप कर ग्रका-शित हुई ।

All Rights Reserved



षि० सं २००४, कातिक शुक्ता १। प्रयसा एचि १०००

मूळ---रारका पर्सी सो करें (जांह) कारज करना होय ॥

यारयाक)

हा पूर विश्वचरणु दाम मायुर बाबई। अल्पों की गन्नी

पाठकों के जानने योग्य बातें—

(१)-वाणी को सदा-सर्वंदा पूच्य भाव से उच्च-स्थान पर शुद्ध-चस्त्र में वाँध कर विराजित करनी चाहिए, श्रीर सदा पवित्र शरीर, पवित्र वस्त्र श्रीर पवित्र भावों से वाणी का श्रर्थ

महित नित्य पाठ करना चाहिए।

(२)-पूरा प्रन्थ पढे विना वीचमें ही उपराम न होना चाहिए और ष्रतुवन्य-चतुष्टय, की खोर भी लद्दय रखना चाहिये कि बागी का विषय और प्रयोजन क्या है।

(३) 'श्रद्धाविरहित यज्ञ तमस परिचक्षते' के श्रनुसार स्थूल एवं सूद्म किस्मो भी विपरीत भावना से वाणी में श्रश्रद्धा हो जाय तो होप का श्रंशश्रा—जाता है, श्रत श्रश्रद्धा उत्पन्न होने के परचात् वाणी मिलने के पते पर पुस्तक शीव लौटा देने की छुपा करें।

(४) साची सङ्गत साथ की, नो करनाने कीय।

'इरिया' ऐसी सो करे (जेहि) कारण करना होय।

चा सन्ती है। यमा गुर के राज्य की सूँची सेटी वामच कोटरी सोसी, सो बाली के यमार्थ शास्त्र को समस्ते के सिव सीचे सेलातुमार दुव वार्ते सभी पाठकों का व्यान में शतनी बपित

(१) बायी के बार्शनिक विषयों को समझने के लिय भेदान्त के कठिल शब्दों का काब जो कम्बर्धे दिया है सो देखना

(२) इस सन्तों और यहां के बातुशव सरे इस उत्पाद बाली के बारतमें निषे हैं, बन को सनन पूर्व क-पर्म जारिए । (१) में प्रश्न सन्। रम क्यान (जुम तक अभित समाभाग स हो बाय) सामने रक्ते तो कावरय हो दमारे सब के तिए तान

(क) इसारे आधार्य देव का सिदान्त और भाहाएँ क्या 🖁 १ (का) शम क्लेब की बाखविक परिमाण क्या है ? (ग) इसको करना क्या भा भीर करते क्या हैं !(घ) हमा। बार्खावक क्षि किसमें है ?

साची सक्त साथ की भी कर शाने कीय। 'इरिया', ऐसी सी करैं (अहि) कारण करना दीय।

वस्तव में पूज्य चरण को कानुनव गिरा हो ' जन हरिया यह

प्रकथ क्या है, काक्य कहा क्या आई ?' बाकी दशा है, परसू

वस्वदर्शी सदगुरु देव की क्या से यह अक्य क्या भी समग्री

पालम होती हैं-

चाहिए

क्वाव है।

क दो शब्द क

शम

विषयानुक्रमणिका -

प्रथम परिच्छेद

ं नार	a	विषय	~	पृष्टाक
अथानुबन्ध	चतुष्टयम्	• •	• •	₹.
्नम्र निवेदन साम्प्रदाय-प		• •	•	१४
राम स्तेही		•	**	१६
	स्वा० शमानन्डजी	महाराज कुन	मानसी सेवा	२१
11 ~	्र सन्तदासजी	महाराज का	सक्षिप्त जीवन	78
e.v			चरित्र	
77		हुत विनय का		३१
श्री श्रनन्त	सद्गुरु पेमजी मह	हाराज की स <i>े</i>	भ्रप्त जीवनी	३७
33	**	श्रनुम	व गिरा	~Ro
"	दरियाव महाराज	का सिक्षप्त ज	ोधन चरित्र	85
13	~31	की श्रमुनव	गेग शर्मन	78
- tt -	17	सद्गुरु है	व का अग	52
"	12 ì	समर्ग क	अग	63
17	21	विरह का	37 /	१००
* 27	27	शूर का	37	१०२
G.	11	नाद परि	षर का खद्ग	309

हंस बहास ना

275

134

१२७

222

245

3-5

100

254

भी भनन्द रश्यिव महाराज का श्रक्ष परिश्वय का आह

**		श्यम	ect .	33	165
"		भनुमव	गिश साप	ना भ	m tan
,	P.	,	रिशामि	d H	446
		n	व्यवारस	14	\$50
	**		चप देश	10	132
1	,	**	पारस		188
17)		**	मेथ	3	184
	77	,	शिक्षत	साम्ब	***
19	19	91	पर मार्डन		448
*		H	शुरु महि	भा	२०च
की प्रक्रमस	सी मधाराज व	री याजी			२२ १

िरामशासकी

मुख्यामदासक्षी

= बतुक्।मजी

, मानक्यासओ

, टेमजी

दरगारामजी

, जमां नाई की वासी • शिक्त मामानधी

(fii)

इ्सरा परिच्छेद (राम नाम महिमा)

भो रामनाम महिमा ... १-१११ भी वेदास्त पदार्थ ... ११९



अथ-अन्वन्ध चतुष्टयम्

नानु प्रयोजनमनुहिश्यनमन्दोऽपि प्रवर्ततै

अधिकारी वर्णनः-

विरही, प्रेमी, मोम-दिल, जन 'दरिया' निष्काम। श्राशिक दिल दीदार का, जासों कहिये राम॥ जन 'दरिया' उपदेश दे, भीतर-प्रेम-सधीर। ग्राहक हो कोई हीग का, क्यों दिखावे हीर॥

ग्रन्थ सम्बन्धः-

'दरिया' साचा राम हैं, श्रौर सकल ही कुठ। सम्मुख रहिये राम से, दे मव ही की पूठ॥ माली और ज्ञान का-जल्य, जिनक भाग सम्बन्ध है। विषय ---

श्राधिकारी झोर विचार का-कर्तु-कर्चन्य भाव सम्बंध है।

भाग मिल्ले पर भाग से, परमाये पर माय। 'इस्पिया' मिल फर मिल रहै, तो आवागमन नशाय॥

॥ श्रमुबन्धे चतुष्टयम् ॥

गांच सत्य गुँख तीन से, सादम भया उदास। सर गाँग निर गाँख से मिला. चौंचे पद में वास।।

सर गुँग निर गुँग से मिला, चौषे पद में वास ॥ भीव भावको स्वागकर ब्रह्म मांबहोना वाखीका विषयहै।

इत्यनुबन्ध चतुष्ट्यम्

प्रयोजन

राम

जीव जात से वीछुड़ा, घर पंच तत्व का भेख। दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख।। जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम। घर हमारा शुन्न में, अनहद में विश्राम॥

श्रर्थ-मर्वे श्वनर्थे की निश्चित और परमानन्द की प्राप्ति चाणी का प्रयोजन है।

नम्र निवेदन

नित्यं शुद्धं निरासापं निराकारं निरमनम्। किन्य बीप विदानम्बं गुर्फः क्रमः नमा स्पदम्॥

श्चनक श्वानम्य यन सत्-चित्-श्वानन्य श्वा स्वरूप श्वनादि श्वनन्य परात्वर पर व्रद्धा राभ गुरुवेवनी व कोटिश नमस्कार करके समस्य सन्यस्थमायी महा पुरुषों को दर्यवन्त-प्रश्वाम करता हु कि परम्रस स्वरू राम गुरुवेवनी एवं संतमनों की श्वसीम श्रतुनित हुप कोर की प्ररखा से प्रेरित होकर परम पृत्र्य चर सहगुरुवेवनी भी 'दिया साहब की श्रनुमव गिर प्रकाशन करने की प्रेरखा स्वरूप श्वामा प्राप्त हुई।

भाम-मर्चमान् परम जुम्म वातापरख (सत्य सु फै दिपातक महनादके इस विकाश-पुग) में नहां ईम पूर्व ईसर पर्या को न्यर्थ यदलाम जीर परसीक क सिदास्य कल्पना प्रत समक्षा माता है, महा द्वार वैराग्य-भक्ति की वातों को श्रनावश्यक श्रीर देश-जाति की उन्नती में प्रतिबन्धक रूप वताया जाता है, जहां भौतिक उन्नति को ही मनुष्य जीवन का परम ध्यय समक्ता जाने लगा हैं, जहां केवल इन्द्रिय सुख ही परम सुल समभा और माना जाता है। इसके अतिरिक्त प्राय: समुचा साहित्य-तेत्र जड्-उन्नति के विधायक ग्रन्थों, मीन-ग्रीक के उपन्यासों श्रीर गत्यों एवं कुरुचि उत्पादक शब्दाडम्बर पूर्ण रसीली कविताओं भी वाढ़ से वहा जाता है, वहां भक्ति, जान, वैराग्य श्रीर नि-ष्काम राम भक्ति विषयक देशज-ग्राम्य-भाषा वद्ध (वेद-वेदान्त आर्प ग्रन्थ सम्मत) तात्त्विक विषयों की पुस्तक से सब की सन्तीप होना बहुत ही कठिन है, तथापि मुक्ते अपने जीवन की अनेक घटनाओं और श्रनुभव से मुक्ते यह पता चला है कि नास्तिकता की इस प्रवल आंधी के आने पर भी सन्त मुनि सेवित पुरुय भुमि भारत के सुदृढ़ मूल आध्यात्मिक सघन छाया युक्त विशाल तरुवर की जेंडें श्रभी नहीं हिली हैं। श्राशा है फिर भी उसका हिलना कठिन मालूम होता है फ्योंन कि सत्य की हिलाने की शक्ति धंवारी असस्य प्रवृत्ति में हो नहीं सकती।

इस समय भी भारत के भाष्यास्मिक जगत में सक्ये जिक्कापुओं भीर साध स्वयाव के मुमुझुओं का अस्तित्य

है, यद्यपि उनकी संख्या पट गई है। इस हशा में यह भाशा करना मयुक न होगा कि इस सरज भाषा में जिसी हुई तत्वपूछ पुस्तक (वाखी) का अच्छा मादर होगा भार जोग इससे निगेष जाम उठावेंग।

इन प्रक्रियों के जलक की हिन्स में इस ग्राम के रचिवता का स्थान बहुत ही ऊषा है। क्राध्यात्मक मगत में इस प्रकार के महान पुरुष बहुत ही योडे हैं। देवपि नारदमी ने कहा है—

'महत्सद्गस्तु वुर्नमोऽ गम्योऽ मोघम।'

अपर्गत महापुरुपों का सक्त दलर्ग, अप्रमध्य और

अमोघ है। यानी 'सच्चे पुरुष सहज में मिलते नहीं, मिलने पर पहचाने नहीं जाते तथापि उनका संग व्यर्थ नहीं जाता। इसी कथन के अनुसार मेरी यह धारणा है कि ब्राज वर्त्तमान में पूज्य चरण दिया साहव साकार स्वरूपसे नहीं है,पर उनके आध्यात्मिक अनुभव पूर्ण उद्गारों का सार सार संग्रह स्वरूप सरल देशज भाषा में वाणीरूप से साकार स्वरूप त्राज भी यह हमारे सम्मुख है। ऐसा होने पर भी इस वाणी के उपदेशों को धारण करना तो दूर रहा, भली भांति वाणी के तत्व को समभा या पहचाना जाना भी दुर्लभ है। कारण इसका यह है कि साधारण मारवाड़ी भाषा की वोल चालमयी प्रवन्ध शेली में निवन्धित होने से, एवं काव्य, रस, अलंकार तथा कविता, तथा व्याकरणादि नियमों का पालन न करने के कारण वेचारे विद्याभिमानी, काव्य रस रसिक-साहित्योपाशक जन वाणी के तत्त्वों को समम्तना, सुनना श्रीर पढ़ना तो दूर रहा पास

लाम्न भिष्यम

यहां प्रस्त यह होता है-कि महाराम सस्क्रत साहित्य के विद्वान होने पर भी उन्होंने फैनल मारवाडी ग्रामीय भाषा का अनुकरण करते हुए बाखी की रचना वर्षों की? इसका अनुमानठ सरस्रता प्रवक उधर यह है कि---

(१) विद्वानों के लिए पर, पेरान्त, ब्रह्म सूत्र

संहिताए पर्य स्मृतिष स्पापक रूप से प्रस्तुत हैं, परम्तु उन साधारख पढ़े जिले पर्य झपड़ अनुच्यों को उपर्युक्त ग्रम्यों के दशन ही तुर्कम हैं, ऐसी दशा में संस्कृत स्पना से साधारख मनुष्य केसे जाम उठा सकते हैं। विचार सागर में भी कहा है-

विन यह भाषा ग्राम किय, रंथन उपनी साज। तामें यह इक हेतु हैं, दया धर्म सिर ताम। अर्थात अपढ़ लोग भी राम जी को प्राप्त कर सकें यही कारण होते हुए भी विद्वानों एवं भावुक दार्शनिकों को भी इस वाणी में कल्याण प्राप्ति की सामग्री प्र-र्याप्त रूप से मिल सकती हैं।

[२] महा पुरुषों की उपदेश शैली समभने के लिए तर्क प्रधान नहीं है। यदि कोई महात्माओं के सिद्धान्तों को जानना चाहें तो सरल बन जाय तभी उनकी गति—विधि उन महापुरुषों की कृपा से जानी जाती हैं। कहां तक कहें, राम जी जाने जा सकते हैं, पर महा पुरूष उनकी कृपा विना। नहीं जाने जाते। अतः 'ब्रह्म रूप अह ब्रह्म वित ताकी वाणी वेद' के अनुसार महा पुरूषों के उदार किसी भी आषा में हो परम कल्याण करने वाले हैं।

अस्तु, अब सन्त महात्माओं एवं आचार्य प्रवरीं से तथा पाठक-पाठिकाओं से निवेदन है कि प्रस्तुत बाणी का नाम-करण 'श्री दरियाव महाराच की अनु-

मद गिरा' रखा है और अंग क्यों के स्पों रक्ते गये हैं। भव इस अनुकर्त्व व्रवाय में क्षेत्रक की ससा-वयानी भी हो सकती है. जिससे कई धुरामी प्रतिकों में मिला से पर शब्द गर अधीन ही संस्ता है. सी

साकत नुद्र अपनी रुचि और उत्तम शुद्धता समर्के देसा पठन पाठन करन में स्वतन्त्र है हीं। भाषार्थं पहाति की परम्परा की शैली के अनु-

सार फ्रमश प्रकरण रखे नये हैं और संचान जीवन चरित्र मी सन्त भी माननादासत्त्री बिरंचित इस्त-नि सित नगी के आपार से जिला गया है। [१] कई पुरानी प्रतियों से कुछ झंन हिये हैं बनमें भीयेदर एवं खेलकों की झसाकपानी से पद्य झ-परे बोड़े <u>इ</u>ए मिन्ने हैं, उनको भी प्रसङ्खानुसार पुरा कर विया नया है।

[४] मन्त में वेर पुराम, स्मृति और

महात्माओं के प्रवल प्रमाणों द्वारा श्री राम नाम की कुछ महिमा का वर्णन भी किया गया है। वास्तव में नाम । की, महिमा तो अपार है। मैंने तो केवल अपना इस बहाने से समय सार्थक किया है।

में न तो विद्वान् हूं और न अपने की उपदेश—
आदेश एवं शिक्ता प्रदान करने का अधिकारी ही समभता हूं। मैंने तो अपने अन्तः करण के सुख के लिए
वाणी के प्रकाशन कार्य का प्रयत्न किया है, अन्तरयामी की प्ररणां से जो कुछ हुआ सो उसकी वस्तु है।
मेरा इसमें क्या अधिकार समका जाय।

पाठक पाठिकान्नों से नम्र निवेदन है कि वे इस बाणी को मनन पूर्वक पढ़े श्रीर यदि किसी पाठक के चित्र में तनिक भी जान, वैराग्य एवं सदाचार का संचार होगा, तनिक सी भी राम भक्ति की भावना उन्पन्न होगी श्रीर मनके गंभीर प्रश्नों में दो एक का भी समाधान होगा तो बड़े श्रानन्द की बात है।

पुन	प्रार्थना है कि इस	दाखी	में जो	कहीं भी
बुटियं रही	ही उन्हें कृषासू सम	मम सुध	गर कर	पर्दे भीर
कृषा पूर्वक	मुक्ते स्वना दें ही व	रें भी उ	न-रतन	स्थलों की
सपार कर	पदता भीर समभूत	र रहे।		

। इति ॥

गुम

निग्र भित्रवृत्त

बिमीत सन्दर्भग्रहुरागी

साम्प्रदाय-पद्धतिः-

श्री अनन्त भक्ति-ज्ञान-वैराग्य के आदि आ-चार्य भगवान् विष्णु नारायण हैं, वयो कि समग्र ज्ञान-वैराग्य का उद्गम स्थान वही हैं। इसी लिए उन्हे पंडेश्वर्य सम्पन्न ईश्वर कहते हैं। यह परम्परा श्रनादि है।

व्यवहार एवं साम्प्रदा-विशेष के नियमों के अनुसार श्री आचार्यप्रवर विदूहरीष्ठान श्री रामा— नुजाचार्य जी से २३ पद्धित परत्व श्री रामानन्द जी महाराज हैं। तिच्छिष्य श्री स्वामी अग्रदास जी हुए। उनसे पञ्चम पद्धित परत्व श्रीअनन्त स्वामीं सन्तदास जी महाराज है, जिन की संचेषतः अनुभव माणी इसी के आदि में दी गयी है।

उन सन्तदास जी महाराज के शिष्य वैराग्य भूषण महाराज श्रेमदास जी महा पुरष हैं इन्हीं बास व्यास्त्रताच पद्रति

88

महाराज के प्रधान शिश्य परम विज्ञान सम्पन्न आ स्म निष्ठ शुष्ट् प्रार्गी महाराज परिया साहत्र हैं। ब्रस्तु, पुत्रमें चरवा भी वरियाय महाराज की

संक्षिय जीवन प्रस्तुत वार्षी िथी दरिमान महाराज की बनुसम में बादि में दी गया है। अब

प्रेमी पाठक-पाठिकाओं की उक्त कथित महा पुरु-पी के जीवन का अनुकरका एवं अनुशरक करके मानव-जीवन सफल बनाना धाहिए।

समय अत्यन्त अन्य है, उसमें भी बहुत रीग. निद्रा. मालस्य, अमाद प्रं सांसारिक न्यवहार में म्पर्य हो रहा है। ब्रव कम्याख-कामी मनुष्यों की

भनस्य ही अपन आपकी वड़ मारी (सम्म-प्रदेय कप) सतर से सुरक्षित करके, परम सुरक्षित स्पत-,सुली मीन नई भीर ग्रमाथा, जिमि इरि

शरया न एक हुनाभा। श्री हरि की चरवा शरया भीर राम माम का अभय ग्रहता करना चाहिए। किल्युग में राम नाम की वड़ी महिमा है, गो-स्वामी जी तो राम नाम के प्रताप से सदा सुख की प्राप्ति करके लोगों को आदेश दे गये है कि मेरी तरह तुम भी सुखी वन जाओ—'फिर सनेह मगन सुख अपने, नाम प्रसाद सोच नहीं स्वपने।' अस्तु: नाम से सब कुछ सुलभ है।

> **दिनय** सन्त चर्णानुरागी



राम स्नेही लचण

'दिर्या' ब्रह्मख साथ का , क्या गृहस्य क्या मेला। निष्कपटी विर्पेष्ठ रहे, बाहर शीवर एक॥२॥ रहनी करनी साथ की , एक राम का प्र्यान।

माहर मिंबता सीँ मिले, मीतर आतम होंग ॥३॥

हिष्परही — एस की में दोड़ रकते बक्ते बस्तुहर का तक्ष्मा वास्तव में काल्व है, पर व्यवहार है और रास्त्रों पर्य महा पड़की

पर्य महा प्रवर्षे क्षा कर्म क्षेत्र के क्षे

का सकते हैं। वया— (१) क्यत रहित (२) पछ रहित, (३) इंध-रहित, (४) सात स्ववहार, (४) स्तरूप का यसने सेक राम स्तेष्ठी लक्षण राम

साधू जल का एक्झंग, वर्ते सहज-रवभाव। ऊंची-दिशा न संचरे, निवन-जहां ढलजाय॥३॥

्साधू चन्दन यावना, एक राम की आशी।

नन 'दरिया' एक राम धिनु, सब जग आक पलास॥४॥ मान सरवर मोती चुंगे, दूना नाहिं रवान। ् 'दरिया' सुमिरे-राम को, सो निज हंसा जान॥४॥

(६) निरसत्तता, (७) छाह्यार रहित व्यवहार (६) श्रिभिनयो का सगत्याग, (६) जिज्ञापृत्रौं पर कृपा करें (१०) शानित म्यरूप, (११) एक निष्ठारूप, (१२) अम मिक परायस, (१३) जगवान का त्यारा (१४) परमहैन जीवन मुक्ता वा श्रानन्द।

विशेष'- ये १४ गुगा सन नारका में के पहिचान ने के विशेष'- ये १४ गुण सर्व शास्त्री श्रीर पुराणी द्वारा विहा हैं और साधक पुरुष इन तक्षणों का साहोपाह सम्पादक करके सदा सुख स्वरूप शमजी की प्राप्ति कर सकता

t= राम भागारि शास्त्र भ्रम-वानित जित्र । धार मर्पण से लदा सोक्ष पा सकता है। यही निविधीय सेंब

और छनी आणिमों का क्या गड़ी है, पर जमकरा मुख पार् के सामनों का विरस्कार या कातानवरा परिस्थान करवे विपरीत इक पर्धी से सुन्य प्राप्ति की व्यक्तियापा करके भ्रम चित्त हक्षा स्त्रीय सहक व्हा है। असू, निस्थामन्द-प्राप्ति क

मस्य साधम-रामभवन सरसंग, स्वाच्याय स्रोट स्रवतात व्य त्याग है-

साची संगत साध की जेकर आसे कीय। 'हरिया' येमा सो करें, कारच करना होय।।

'छप्पय

मिलतां पारख प्रसिद्ध विमल चित राम सनेही । उर कोमल मुख निर्मल प्रेम प्रवाह विदेही ॥ दरसण परसण भाव नेम नित श्रद्धा दासा। साच वाच गुरु ज्ञान भक्ति प्रण मत एक आशा॥ देह गेह सम्पति सकल हरि ऋर्पण परमानिये। (जन रामा मन वच कर्म रामस्नेही जानिये॥१॥ रवान पान पहिरान निर्मली दशा सदाई। सात्विक लेत ब्राहार हिंसा करि है न कूदाई॥ नीर छागा तन वरत दया जीवा पर राखे। बोलै ज्ञान विचार श्रमत कवह नहिं भारेव।। साधु संगति पणव्रत सुदृङ् नेम प्रेम दासा लियां। रामस्तेही रामदास तन मन धन लैखे किया ॥२॥ अद्धा सुमरण राम भीन मन राम सनेही। गुग ग्राही गुगा वन्त लाय लेगी हरि देही ॥

श्रथ श्रनन्त श्री रामानन्द जी महाराजकृत मानसी सेवा।

रामानन्दमहं वन्दे श्रीरामांशावतारकम। श्राचार्याणां शिरोरत मंत्ररानप्रचारकम् ॥२॥ श्रथ श्रनन्त श्री रामानन्दजी महाराज कुन मानसी सेवा। शालग्राम शब्द करि सेऊं तन तुलसी कर लीजें। त्रातम चंदन परि-पसि चरचुं इस विधि सेवा कीजै॥१॥ ज्ञान जनेऊ ध्यान धोरती शुचि का ग्रंचला कीजें काया कुंभ प्रेम का पानी हरि दरियाभर लीजै ॥२॥ दया त्राचार विवेक सुचीका उर त्रस्नान करीजै। इच्छा पुहुप चढ़ाऊ' पूजा मन सा सेवा कीजै ॥३॥ त्रिगुणी त्रिकुटी मन करि अर्घा संपुट ध्यान धरीजै। पांचों वाती जोय करेने इच्छा सेवा कीने ॥४॥ कलह कल्पना धूप श्रंगारी ब्रह्म अग्रि कर सेऊ। उत्तठी वास गगन कूं लागी इस विधि देवा सेऊ ॥६॥ २^२ राम<u>भाग भनन्त् भी रामानत्र</u>ाओं सहराश्रकत मानली मेवा गुरु-गम मंतर-आप अवष्या दिरदा पुस्तक कीमें।

श्रनुमन कथा कई भाई साघो इस विभि पाठ पढ़ीजें॥६॥

झनहरू पटा फाखर बाजि कवल पुरुप की सेवा। पुरुप निरंतर बैठा साघो रोम रोम में वेवा।।धाः ममा कसुना बई सरस्वती वह जाय प्याम परीजे। प्रकटी मंदिर बैठा साघो वहां जोय वहांन कीले॥⊏॥

सहस्र सिहासन निशय सेळ चित्र की चंत्री कीते। चरमा मोहि चित्र हसकाट चीरक वेटा रीचे ॥६॥ कोहे एक साची मिलिया जाहे सब संतन का मेंला।

कोई पक साभी मिलिया आई सब संतन का मेंछा। सतमुरु मेरे शिर पर ठाढ़ा भुडड़ा आम चेला॥१०॥ या मेरि सेवा या मेरि प्रका पेसी आरती कीजै।

म्हारम् तस्य विचारी सीमें प्यान निरंतर कीने ॥११॥ मन्न पापास मरम की सेवा सुन्न मटक नहीं मरता।

सतगुरू मेरे जुक्ति बताई तब मबसागर तिरना ॥१२॥ बाहिर मरम कबहु नहि बाक अंतर सेवा बागी।

बाहर मरम कबहु नाह जाऊ अवर संगा खागी। 'रामार्नद' मेंगा निर्भय झांखी पारमहा जिन जागी॥१३॥

॥ दोहा ॥

लिव लागी परव्रह्मसूं रती न खंडे तार। रामानंद आनंद में, गुरु गोबिन्द आधार॥१॥

।। इति ॥



श्चनन्त श्री सन्तदास जी महाराज का संचिप्त जीवन चरित्र

क्रम परम पुरम अनेक अखनका निधि आधार्य देव श्री अनेक सन्तरहास जी नहाराज का संस्थित जीवन--धरित्र।

थय महस्ता चरण ---

मनी नमी समुक मनी, नमी निरक्षण राय।
मनी नमीहरि मक अन, डीर्नृ ताप नशाय॥१॥
प्रवम वैदि गुरु देव की, पिनमी नारम्बार।
हार ह्रदय प्रकाशतें, लीका करी प्रसार ॥२॥
श्री सम्ददास स्वामी नमी, भमी प्रेम महाराज।
नन दरिया से बीनती, सर्प सुधारख काल ॥३॥
क्ष्यदास सुसराम जन, पूरम मानक वास।
शिष्य पारी दरियाय के, कीकी मिक्ठ प्रकाश ॥४॥

श्री भावनादासजी कृत चेपकः—

श्री सन्तदास महाराज की, तीन नाम जन जान। 'रे रंकारी' कोई कहत है, कोई गूदड़ कहत बखान॥ 'सन्तदास' तृतिये कहै, करनी सन्त सुजान। जन्म तिथि वर्णन करों. अपनी मति परमान ॥ विक्रम संवत विगवसु, सोला सी इक्यास। सन्ध्या प्रकटै सन्तनी, अन्नय तीन प्रकाश।। शुभ नत्तत्र शुभ योग तिथ, शुभ घटिका शुभवार। मास पन ग्रह सर्वे शुभ, भक्त लीन्ह अवतार ॥ कवि कुल में प्रकटत भये, नगर कामल्यां नाम , मरुधर मध्य मथुरा लघु, ता पासे यह गांव ॥ राम दान पितु कवि कुल, भातु नरवदा नाम। खिंड्या गीत खराडि पुनि, श्रादि कामल्यां धाम ॥ सुवन जन्म सुनि कुटुंब स्व, हर्पत ह्वी नर नार। उत्सव मङ्गल करत संब, आनन्द मंगलाचार ॥ वर्ष एक, है, तीन चहुं, पंच, पट्, सप्तम ग्राठ। नव दस ग्यारह वार में, पिता पढ़ाये पाठ॥

१६ राम बाक्त मी सन्तरासको महाराजका स्राप्त जीवन परि पद्र गुरा भग स्पनहार में, भये पहुत प्रनीत। बाल्प कास यहि विधि गयो, अग व्यवहार-अवसीन ॥

बीस वर्ष प्राप्त भया, तन में व्यापी वाप। संतरा सी एके अवद, मया बहुत सन्ताप ॥ पिवड प्राया वियोग मी, इसा गया उड़ाय ।

माव-पिता भूत बन्धु जन, सब्दी दुःख क्लि नाय ॥ ये' पित मा आधार सुन, तो विनु इम सब दीन। चन हीन कर शकुटिया, सी विषना इस्सीन ॥ निशिमाध रिप परकर सरी, शार दाइन के काल।

मरघट बाने पहिषया, जीना हाह समाज॥ काष्ट विविध विद्या रची विद्या बुलित विस्नजात ।

वादि समय अधरून भयो. आसे सन्व शताय॥

सन्त स्वरूप वर्णनः---

क्य पूछ तन तेम झति, सत बित भानन्त रूप। भीमन परस्या वचन मुख, बोले वायय अनुप ॥

त्राप खड़े शव पास तव, तेज पुंज श्राभास। राम राम मुख वीलिया, कीन्हा शब्द प्रकाण॥

श्री सन्त वचन

सन्त कहें 'यह कीन हैं? राम न वाले नीच। कीन सूता यह नीद में, जो इस मरघट वीच॥

जाति बाले बाले

भी भगवन तुम साम्हली, सूता सी मुरदार। ये इसके पितु आत हैं, हम हैं जातिमदार॥

सन्त वचन

यह स्ता सुख नींद में, तुम भारती मुरदार।
'राम-राम' कह उठ सी, क्यों वोली कूठ लवार॥
सुनत वचन सब हर्ष के, सन्त चरण चित लाय।
तुम समर्थ हो है प्रभो! शव को देवो जगाय॥

२८ राम जनन्त भी सन्तव्यक्तभी ग्रहाराज्यम् समित्र जीवस प सन्दे राम मुख राम कही, निव कर शर्व सिर पार ।

मन्य सुनाया मन्त्र निज, भी शिव हिमे-मकार H मैत्र सर्जीसन सुनत ही, अतन भया शरीर। पुनि चरका गुरु देन के, स्पर्शे सहित सनीर ॥

सनताझ-नामकर्ण सन्त डास है नाम तुम, यम जीवा दित काज

ममन भरोसा रासिये' राम नाम सुस-साज ॥ हर कार का ध्यान घर, रर्र कार सम हाय। यही कारक कर जगत जन, २१ कारी चित पाय ॥

मन गुरुकी घरि राम रत, सबे गुरुक पर शाह ।

तीन विशेषमा भाष के, मंति मंति संग श्रमाद ॥ भीय वभारय काण तन, भर मनुश अवतार)

जी जन शरणे भावसी, हासी सब से पार स भार संजीवन मतक की वेस्तर संघ जन नयन। दल ही विरोधान के कर अन्ये अनुपन सेन ॥ मृकत को जीवत किया, यह असंभव वात।
पूरा पुरुष को राम विनु, इस विध सम्रथ तात॥
चार जनां के कन्ध पर, चंद्र कर गये मशान।
निज पम घर गवने घरां। पाया गुरु से ज्ञान॥
गृह कारज ममता विषे, परि भूल मन मांहि।
वर्ष साठ द्वय व्यतित भे, अति आरत विललांहिं॥

वैराग्य दशा—

सुनिरण कारण सुनिरणी, ले गवने अन्य ठीर।
आय विराजे दांतड़े, जगत जाल की तोर॥
आम पास सर निकट ही, पद्मासन धर ध्यान॥
अल्य काल हरि भजन कर, परस्या आतम राम॥
निज घर पुनि: पधारिया, परचा भया अनेक।
रित बढ़त बहु भांति से- याते कहा संद्येप॥

देव रोग भन्न भी सन्वेदासची मही जिन्हा सक्ति की पार बर्र र्निर्वाण ।तभ्रय ---

ध प्रति ॥

सन्त् विक्रम भ्राठार्थे। फागख पत्त भाषार ।

राम रूप हो रम गया सातम शमि क बार ॥

श्री अनन्त स्वामी जी महाराज श्री सन्तदासजी कृत

विनय का अंग

अनुभव पद प्रकार के, दायक सद्गृह राम। श्रनन्त कोटि जन सहाय की, जाहि करूं प्रणाम ॥१॥ सन्तदास बड़ पतित है, तुम हो पतित उथार। लज्जा तुम्हारे विरघ की, तुम राखी करतार ॥२॥ माया तेरी राम जी, तुम हो प्रेरण हार। ्सन्तदास गरीव से, दूर रखी करतार ॥३॥ जहां देखूं तहां रामजी, साया ही का स्तोड़। सन्तदास की राख जो, तुन चरण लग दौड़॥३॥ मुमको तेरे विरथ की, है साची परतीत। ृतुम मत छांडो राम मी, श्रपने घर की रीत ॥४॥ 'में तो तेरा राम जी, गुन्हेगार लख वेर। हाथ जोड़ आरी खड़ा, सन्तदास हीय मेर ॥६॥

रण्या भी भानत्व त्यामोजी महाराजा भी सत्त्रासकी हरू मैं भारतुन का पुतका, तुम गुनवन्ता राम।

सन्तुन दिशा निहार हो, तो ठीन बोक मही ठामा। ।। सन्तदशस दिनती करे, सुखो सर्व सनदीश । कीन्हा पाप सपीर में, गुन्हा करी वगसीश ॥८॥

कीन्द्रा पाप क्रपीर में, गुन्दा करी कमाग्य ।।...। सन्दर्शस मरीब है, तुम ही गरीय निवाम । मोप निभाक्यो शासबी, बॉर्ड गेहैं की खाल !!ह!। में को ग्रेमा बानजा, कामी बॉर क्रुटि-हीम ।

शारख विदारी रामजी, तुम हो जान-जनीन ॥१०॥ सन्त्रपास मरीब दो, गोता दींगे नांप : बाह पकड़ कह सीमिये, हजा-बोल पर माय ॥११॥ सब कोई माया मोह से, नाग रह्यो ससार।

जन्म जन्म का सन्वदास, पालोकक तैरा। दूजा साकिन्त रामधी, तुम किन नहीं मेरा॥१३॥ पालक मानी वां ढर्फ, सी हूं तेरा अग्रा। अपन वाल का सन्वदास, परया नहीं कोई वैग्रा॥१४॥

'सन्तदास निरंपार के, एक राम झाधार ॥१२॥

रोवत रोवत जात है, पूत पिता के साथ। त्रव कृपा कर राम जी, क्यों न पकड़ो हाथ ॥१४॥ रोवत रोवत पहुंचिया, पिता पकडलिया हाथ। श्रव जावण देवे नहीं, चौरासी के साथ ॥१६h पिता हमारे राम है, सन्तदास है पूत। त्रर्श-स्पर्श दोऊं हो रह्या, जैसे उलज्या सूत ॥१७॥ राम मिलन की सन्तदास, मेरी श्रद्धा नांहि। कपा करके राम जी, आय-मिल्या मन माहिं॥१८॥ यह तो तेरे रहन की, कुंपी थोथी नांहि। कृषा करके रामनी, श्राय विराज्मा माहि ॥१६॥ राम तुम्हारे नाम की, में बितहारी जाऊ । घोय घाय उत्तम किया, गन्धा था यह हाऊ' ॥२०॥ गन्दा से बन्दा भया, राम विसारत नांय। ्ञन्या घट-था सन्तदास, चन्दा-ऊगा-मांय ॥२१॥ साच कहूं तो मैं इह, सबै मूठ की धाम। काल रूप संसार से, तुम ही राखी राम ॥२२॥

श्रध सम्बन्धि भी संक्रासभी कर जिनव का क्षेत्र सन्त्वास इस वेह का, हैं फेला लिश्मील । मेरे तुम हो राम जी, रोम रोम रिखपाल ॥२३॥ म्हिल न न मांगू रामजी, सिद्धि भी मामन नांहिं। "सन्त्वास की सुरत की, करक रखी तुम मांहिं॥२४॥ म्हिल-सिद्धि होऊ कल है, इहक करत दिन चार। फिर बोरासी पढ़त है, वे जिन बार्रवार ॥२४॥ 'सन्त्वास' मेकी-बदी, करें करान राम। मेरा कुछ सारा नहीं, सब कुछ तेरा काम॥२६॥

ब्यू चितरा का पूतनी, सके नहीं कुछ श्रासि। यू शरब राम की सन्तदास, रमा द्दोप ब्यू रकसि॥२७॥ साँद चितरा सन्तदास, सब नग पूतक्तियां

कद्वा कर्टू करतार की, रासे वर्ट् रहिंगा ॥२८॥ कर्म करत है सन्तदास, सुख से येदीं माक । क्षन शरण तुम्हारी राम की, सुशी होय वर्ट्रू रासा॥२८॥ पकद गरीकी दीन होय, सुख से कदिये राम। तब परिगा सन्तदास, परम मुक्ति विकास ॥३०॥

अजन घरीवी सन्तदास, जब तब लहै वचाय। भली नहीं भूगडी अवश्य, मनी मार ले जांय ॥३१॥ मनीधार इस खलक में, जीती गया न कीय। श्रभिमानी का शिर सन्तदास, निष्चय नीचा होय॥३२॥ राम निरंजन ब्रह्म से, मिले निभाणां होय। मुरडाटे ही राम से, मिलया न दीडा कीय ॥३३॥ पकड गरीवी सन्तदास, रेह्या निभाणां होय। चित्त समाणां शब्द में, ऋव गंज न सके कीय ॥३४॥ राम विना वैकुएठ दे, तो मेरे किस काम। नाम सहित दे नारगी, तो वहीं वड़ा विश्राम ॥३४॥ सन्तदास यह भट पड़ी पाई कंचन देह। नाम सहित कोढ़ी गलत, मुफ्त को प्यारी वेह ॥३६॥ गलत कोढ़ वह सन्तदास, जो यह विनश देह। तो भी निष्चय नाम सूं, छुटै नांहिं नेह ॥३७॥ मन शुख में गलतान है, तन सुख मे हरोन। यह तुम्हारा राम जी, कही कीन सा जान ॥३८॥

३६ राम भी नंतरासत्री इत दिनाय के बांग तन दुलियां होय सन्तेदासं, कोई पूप अन्म के पाप। राम पुकारण करत हैं, इनकों यह इन्साफ ॥३९॥ मन के ऑपपि मुक्ति की, राम नाम है एक। सने की ऑपप 'सन्तेदास' कर्षा करी क्षीकी।४०॥

भॅडिंकि विभय का आहे सम्पूर्णी।

परम पूज्य सहरू अनन्त श्री पेमजी महाराज की संचिप्त जीवनी

श्री सन्तदास महाराज की, नगर दांतड़े धाम। उनके शिष्य भये पेमजी, ग्राम खियासर नाम॥ जगन्नाथ सीता भवन, प्रगटे पेम प्रवीन। ् जिनको जस वर्णन करु, चित चरणां में दीन।। सतरा सों उन्नीस का, अगहन नौमी भोम। पेभ पुरुष प्रकट भये, रांका रजनी सोम॥ वप सप्तदस बीतियो, पुनि वीता चऊं मास। घर तिज विचरै अनतही, धरी सद्गुरु की आशा। ग्राम दांतडे पूछिया, कीन्हा रेख निवास। सन्तदास जी मिलगया, पूरी मन की आशा। सन्तदास महाराज की, शरण पेम जी लीन्ह। सद्गृह आजा सिर धरी, रहे सदा आधीन॥ राम मन्त्र सहूरु दिया, पेम पुरुष उरधार।

राम भी पसनी महाराजकी सक्षेत केंचसी **8**< गुरु-शिष्य सम्बन्ध बरणहुँ, सुनि सममहु स्पनहार। सक्त सक्ररह वर्ष पुनि, हींया की सी नाख। चेत्र मास शुभ अध्यमी सङ्गर बीन्ही ज्ञाम ॥ हद ग्रासन, भाशा निरत, सुरत सापमा योग। पेम पुरुष महाराज का, नाम साधना जीम।। पम पुरुष महाराम की, अगम समाधि अगाध । पट मासे ऐक आसंखे, क्यें सब ही साध ॥ भारम भनुभव अब सवी, सत्-चित्-भूमा रूप।

निर्मय है विचरत भये, भीवन मुक्त सुख कूप॥ अनन्त जीव निर्मय किया, कई समि करीं बसान।

१८०६ फागल मदी, सातम मये निर्वात ॥ ॥ इति ॥

अथ श्री पेम जी महाराज कृत त्रारती

ऐसी आरती कर मन मेरा, जनम मरन का मेट्रं फेरा।
सुरत शब्द मिल हदय आया, रोम—रोम सवही चेताया।
राम निरंजन चहुं दिस देखा, अन्तर माहिं साहिव पेखा।
अगम आरती वार न पारा, जन प्रेमदास भज सिरजन हारा॥

॥ इति ॥

श्रय श्री स्वा महाराज प्रेम-जी,महाराज _की-अनुभव गिरी

गुद्द परभारमा निव नमी, पुनि विर्दू काल के सन्त। बन पेम उसय कर वन्दना, यगक्त कला क्रमन्त ॥

ळ्टं '—-राम नाम सव शब्द हमारा, रट रह रामरमाहृन्दा । राम नाम सवकी सुलदाहै, सुस ही सुख कपनामन्दा ॥१॥ राम नाम का निश्चप साह, जल पर शिला विरायन्दा ।

राम नाम श्रद्धाद पुकार, कक्षन वाग वपाइन्दा ॥२॥ राम ही बेर व्यरा राम ही राम ही कथा सुनाइन्दा। राम ही बाहर राम ही भीतर, राम ही मभ परचाइन्दा।३॥ राम ही राम रटी मेरे प्राची, राम रतन एन साइन्टा।

राम नाम से मन सुरायाती, रामो राम सिलाइन्डा ॥४॥ धरवा गमन विच भया उनाता, प्रक्ष चगम पर नास दा। काम कोध रिपु वाल सकल बघ, माग्रं सव हिं सालन्दगाध॥ मुख सागर हंसादा आगर, मोती चून चुगाइन्दा। काग कुचाली भया मराली,

् क्या क्या काम कमायन्दा ॥६॥ कहता सूरा बूके पूरा, उल्टा पवन चड़ायन्दा।

अष्ठ कमल दल चुकर फिरंदा,

ं तिव तम जोग कमाइन्दा ॥ ७॥ 'सुर को फेर पवन को बन्दे, उन मुन ताली लाइन्दा १ जोगी जांग भाग जत पूरा,

सुखदेव वचन सुनाइन्दा ॥८॥ ृश्रासत है नासत भी नाही, सिद्ध श्रापा विसरायन्दा। जोगी जाण जुगत उत करणा,

तन गढ पटा लिखायन्दा ॥६॥ सोहं सासा अनव तमाशा, अमर ज्योत दिखलाइन्दा । काला पीला शाह सफेदी, भूग भरेगा दिखलाइन्दा ॥१०॥ ¥ राम भी ल्या मधाराज पश्जी शहाराज की व्यमुनव गिरा पेसा दरसे मूरा बरसे, माई बीच मल जाइन्दा। इयह सर सुद पिखनदी पाटी, वंक नाम हीय माहरदा ॥११॥ दे दं कर तुम्हारा भन्तर, कम भुम घोर बगाइन्हा। पम विन निरंत करे एक पातर,

बिन रसना गुन मायन्दा ॥१२॥ ब्रिकुटी छात्रे अनदद वाजे, कर दिन ताल वजायन्दा। पांच पचीसों मिले असाड़े,

भर भर प्यासा पायम्दा ॥१३॥ मन मददाता भया भिलाला, निम पर मांय समायन्दा।

मंबर गुमालु भूद्रो बाल्,

इस निष अनस जसायन्ता ॥१४॥ सुर भीर पन्दा मिले एक ठाई,

मिलकर भ्रमी चवाइम्बा । महा नुमालु सुलया वालु,

जाप अन्या ध्यायम्या ॥१४॥

्रमुन्न शिखर गढ़ काया नगरी,

हुकमा हुकम चलायन्दा।

उल्टी नाल ऊ'मगे सेजा,

जहां आकाश भरायन्दा॥१६॥

सुख मण—गंगा खलके सेजा गगन महल गरणाइन्दा।
परा परी अनहद के आगं, रंस्कार ठहरायन्दा ॥१७॥
तूं ही राम निरंजन तूं ही, अण अत्तर दिखलायन्दा।
तूं ही मका मदीना तूं ही, मुखा वाग सुनायन्दा ॥१८॥
एको एक सकल घट भीतर, एको एक कुर्वाहिन्दा।
चीय कहे सो दो जग जासी,

होय कर भूत विलायन्त्रा ॥१६॥ खेचर भूचर चाचर उनमुग अगोचर ज्ञान सुनाइन्द्रा।

पांचूं मुन्तरा श्रात्मजानी,

पर विन हेस उड़ायेदा ॥२०॥

में विल जाऊ सतगुरु चरणा, जिन ये भेद वतायन्दा। प्रेम दास यूं भया दीवाना, में वन्दा उस साहिंदा॥२१॥ ९४ नाम भी स्था महाराज पमजो महाराज की **भ**तुत्व गिर्ध दोद्य ---

कोइस पीयं ग्रम रस, जव अञ्चल जाप। पीयज सेमक प्रमहास. अन संसदास परवाप ॥ u अनि निरामी समाप्त #

. श्रन्त ---सीहि अवीत निघन्त रहे.

रिघ माम के स्वाय मधीद में सीना। बीर विकार का मय नहीं जागत.

हेर जीको घर का चर्ड कीमा। भीर भ्रमध्य का स्थाग कर

पनि राम अमल्स करै विभ इना। धम कहै सभ राज गर्र पुमर,

कीन नर्स नत देश विहना ॥

म प्रक्रि । The state of the s

साखी

दुष्ट ग्रभागी जीव के, राम न ग्रावे दाय ! ेंचे भी सच्चा पेम जी, खर मिर्छा से मर जाय ॥१॥ राम नाम मुख से कहै, सिकल विकल हीय मन्न। स्वादन ऋषि पम जी, कोरो चाव्यां ऋह ॥२॥ कोरो काचो चावकैं, ऊपर पी पानी। दुहागण पर प्रेम जी, राजा की रानी ॥३॥ वाहर क्या दिखलाईए, जो अन्तर पाया। मन में राजी पेम जी, गूंगे गुल खाया ॥४॥ प्रेम गुप्ता नाम जप, वाहर वके चलाय। ऊपर डाला वीन को, जीव जन्तु चुग जाय ॥४॥ निन्दा नही निनास है, जी सुस जासी कीय। खेत निनाएया प्रेम जी, सिट्टा मीटा होय ॥६॥ हंता तो मोती चुगै, सर्व विलाशी काग। प्रेम रता रह नाम से, त्याम जिसा तैराम ॥७॥

४६ राग भी ला महाराज दमझो महाराज इस साल जैसे ज्यास सुनार को, वे एक सरीसी फूंक । इसो अजन कर प्रेम जी, मिलसी राग अपूक ॥</

आराप्या मूं आवीया, ग्युं ढाक्या के जरस्य ॥६॥ प्रेम सिपादी राम का, उत गांदी तक्षणर । कनक कामधी जीत के, मुत्ररों है दरवार ॥ आनल राज्य कोई जन नहीं, ता विषे सेद आपाद । वचती है एक प्रेमदास, काया वीच कथाह ॥

प्रेम वक्त व जयत कू, तू काहे थोले । माटी करा दगल सु, से मा दये थोले ॥ निज्ञ काई पमनी, सोटा मारया दोष ।

निना भाइ पनना, सीटा सारया द्वाय । राम भनन की भीड़ है, बाय शहर में सोय ॥ जागी जंगम सेनड़ा, शेख संचासी स्वांग । सम्भे पर्यो कर पमनी, कुए पड़ गई माग ॥ सन्हर को देख्या गहीं नहीं तहर पाया ।

यिन अक्तयारी पमजी कुमायीयाया॥

प्रेमदाम कहता नहीं, कहता है श्रोरे। ज्यूं तूंवा दरियाव में, उवकत है जोरे ॥ गंगा गया न गोमती, पहिया न वेर पुराण। भोले भाले प्रमजी, पद पामा निरवाण॥

चौपाई

वैरागी सो मन वैरागी, आशा तृष्णा सव को त्यागी। राम रता पर निम्दा त्यागी, प्रेम कहै सो सत वैरागी॥

॥ इति ॥

परम धन श्राराध्य देव परम ग्रह श्री श्रनन्त दरियाव महाराज **बा स**िवास जीवन-चरित्र।

स्रन्द

भी पेम पुरुष महाराम के, नामी शिष्य दरियान। जिनकी यहा अवार है, दरिया जिनि अपार ॥१॥ कार चिन्तन वरियान की, इत्य मेन हुजास। क्षयठ कवस्त्र कव्यियां सुवि. ऋवि आतुर हृद्य घनी, पिरह मेम जिल्लास। गर्-गर् बाखी बाट पटी , सुभिरम ग्यासी स्वास ॥३॥ "

जिल मिल स्पोति बजास ॥२॥ करुया सुनि गुरू देव भी, बोध्या सन्त सुनात । युमति दुनिया दूरि करि,

भरी महा की प्यान ॥।

द्रियाच महाराज की उत्पति



ैं। हरियाय पहाराज का संक्षिप्तत जीवन च^ररत्र राम 38 ह्म ध्यान गुरु ध्यान है, गुरू ध्यान ब्रह्म ध्यान। अमसत्ता गुरु ब्रह्म की, दोनों एक समान ॥४॥ जीला सर्गुरु देव की, अगुन सगुन भगवान। सगुन अगुन है एक है सममे सन्त सुजान ॥६॥ अव सद्गुरु दरियाव की, लीला करीं उचार। सर्व सन्तन की प्रेरणा, कछुक कहीं विस्तार ॥७॥

दोहा अतरा सो की साल में, वर्ष वतीसी जान। मास भाद्रवदी ऋष्टमी, प्रकटै ऋषा निधान ॥१॥ विस्तार छन्ट मात-पिता मन चिन्त, पुत्र विन जगमें कहिए। विना पुत्र संसार नहीं, चित साता लहिए॥१॥ ताके इक पाड़ोस, उसीने तानो दीयो। तिन मुख देखे दोप, धिक् है तुमरो जीयो ॥२॥

बी दरियान महाराज का सक्षिप्त के बन मरित्र तब दर दपना क्रोप. पिता म तिम पर शारा।

मका मदीना जाय, करों पुनि तीर्थ सारा ॥३॥ मद्या किया निवासः वय दोय जाय वदीतर । वीन मास उपरन्त, रहा रीता का रीता ॥४॥ आय महीना नाय, रहा दस नास अखुटी।

प्ररीम मनकी आशा, बाव यवना की मुठी ॥४॥ मना मनोरच धार नारि, निज साथे झीन्ही। **ब**ले द्वारिका घाम सुरत, हरि बरखा दीन्ही ॥ है॥ मते पश्चिम की कीर, भार कर करडी आशा । रहे ब्रारिका छाय, अष्ट दस श्रीत मासा ॥७॥

श्रद्धां करयी इरि भजन, रामधी सुखी पुकारा ।

धर्ठ निशा की वर कियो अधरव करतारा ॥=॥ स्वप्ने दीनद श्रवास पत्र एक सरे श्रापै। पद्म सुन्ने क्लाम, हर्ष अति मनमें खावै ॥१॥

भी बाग्रत में बिन्त, स्वप्त में सोही हरते।

परसे नहीं प्रस्यक्त, आस क्षण त्योंही करसे ॥१०॥

y)

यूं जिन्तित मन माहिं, ऊठिया बड़े सवेरे। शोच क्रिया हित करन सिन्धु तट मान गवेरे ॥११॥

श्री दरियाक महाराट का सक्षिप्त जीवन चरित्र'

वंडे फजर की वेर, गया सिन्धु तट नांगे। सलिल नहात जब मान, फैन में सुत दर्शाने ॥१२॥ लीन्ह पुत्र उर लाय. हरप मन भवन सिधाये। ंदीन नारी की पुत्र, मोट दंपति मन भाये ॥१३॥ पिता मानमद मोद. मात गीगा हर्पाई। पय विन शिशु निर्वाह, किसी विध होय सहाई ॥१४॥

एक विप्र घनश्याम, ताहि को सुत पुनि दीन्हा। पय पावरा के हेत, पुत्र सम पालन कीन्हा ॥१४॥

दोहा

अवप काल के माय शिशु अन्न प्रासन लागा। मान मतो विचार सुवन को मांगन पागा ॥२॥

मान शहा बोले

अव सुत असनिह लेसके पय विन निर्वाह होय। तात तात की दीजिये, खुशी रही तुम दीय ॥३॥ राम भी शरियाण महाराज का संस्थित जीवन वरित्र

धनश्याम की पत्नी घोती— यह बाबक सम प्राच सम, में बन वेळ वोरै। इना कर इस बामको, कनह मिना ग्यो मोप ॥४॥

छारिका में रवाना होना मीमा मनती पुत्रने, भिने मान घनरयाम । हवा रवाना देपति, राम राम कह राम ॥४॥

महियाक। साथ होना भनित्र मेन भनेग संग, यह भाषी के हाथ।

विभाग संगत में लिया, बनी ब्रासमब बात ॥६॥ पुरी इंगरिका परस कें, लीम्ब मानसा साप । मयन कीन्द्र निम मयन विशा ऋदिया इपद मात ॥७॥ जफ्नारण झाने पर दुरियान महाराज का नाम

करण होना श्रीर मंगिहल का मंतिष्य वताना श्राय एक विद्रान क्या के श्रात भारी । भी क्ल क्षेकर कम पहुंपिया नर श्रीर मारी ॥१॥ करी अरज महाराज पुत्र का नाम वताओं।
सुन दिखित प्रवीन घड़ि पल लग्न कराओ ॥२॥
लग्न सारणी देखि वर्ष पर वीध विचारे।
शिघ्र बोल मत सोध, नामको अर्थ निकारे॥३॥

श्री रोसाव स एराज का सक्षिप्त जीवन चरित्र राम

श्रीपिः इत बोले

श्रद्भत योग संभालि कहै यह गर्भ न श्राया। श्रीर ठीर कहीं मिला, जंगल या जलमें पाया॥४॥ नहीं मातु-पिनु श्रंस है, नहीं वंश व्यवहार। लग्न ग्रह नहीं मिलत है, सो में कहा विचार॥४॥ नाम मिला सो कहत हों, नहीं कछु हमरो डाव। मिला तोहि दरियाव में, धरो नाम दरियाव॥६॥

पिता बोले

धन्य पंडित तारीफ भले तुम सोधन कीन्हा।
पुरी द्वारिका मांहि, सिन्धु मोहि यह सुत दीना॥७॥

४४ राम भी पृरियाच महाराज का म अन जो बन करिज दिशि

पेसे नित सुसा सहै, सबाये वालये। कबहुक गोद प्रयंक, कुलाये पालये॥

पहला चमत्कार — यात परे दरियाव एक दिन ग्रुख फरमायो।

काल कर नागेन्द्र, देव दर्शन की कायो। भाषः

नासुकि नागराज भी झनन्त वरियान महाराज के वर्शन करने आया और सुर्य की धूप गृह पर आती

देख कर अपनी फर्ण की खाया करके सेवा का स्नाम स्निया। यह विभिन्न घटना देख कर आपके

लाम ब्रिया। यह विविध्न घटना देस कर आयके भारतापिता आध्रयाँन्यित ही करकाणी के पास शाकर सब पूर्वान्य सुनाया। कामी में आपने स्पोतिय सम्बन्धी ग्रम्य देश कर कहा..~ काजी देख कतेव वहुत विधि शीश हलायो। कलारूप करतूत वड़ी पेगम्बर आयो। ऐसी वात अनूप कहनमें आवे नांही। स्वर्ग मृत्यु पाताल ताहि मध्य होत वड़ाई। प्रथम वर्ष एक दोय तृतीय भया उजासा। चतुर्थ पंच अरु छ: रते ज्योति प्रकाशा। वर्ष सप्त का भया, पितु परलोक सिधाया। जैतारण से चाल, मातु संग राहण आया। नानां नाम कमीस, भाग मोटो त्रति भारी। जन दरिया से प्रीति रीति आरत उरधारी।

(रेणमें द्मरा चमत्कार)

एक समय दरियाव रमे वालक संग जाई। ऐसी दशा अतूप कहिन में अ वे नांही। पडित चतुर सुनान चाल काशी से आयो। देखत मुख दीदार, बहुत आनंद सुख पायो। ४६ राम की शिवाब सहाराज का सकेत जीवन करिज

मा ११

परिदत स्वद्भगनन्दमी इस्त रहा दश कर पीले-सामुद्रिक ग्रन्थ विचार, पढ़े कीर का पताय होसी वही फकीर अवलिया पुरुष कदावे।

ऐसी झनव झनुप देखता इरशन फरहीं। दरल शरक जो काप दही वर सब सब ठर*ही।*

शाह सुजतान क्षीर फरीद हेमव शा आहा।

पंत्रित कहत विचार फक्कद दरिया सा साह। पाँचक्रत स्वद्धपार्थव भी ने दरियाय महाराज की

भाइतता दस कर अपना जन सफल करने के

सिंप विद्या पढ़ान के प्रयोजन से काशी समय भीर इस प्रकार ग्रन्य पदाये----

संस्कृत व्याकरण पढ़ी और धारम कीव्ही। पुनि पढ़ सरही पुरान शास्त्र छ संहिता जीन्ही॥ ज्योतिष पिंगय छन्द, न्याय तरकादिक सारा।
काव्यरु नाटक कोष और वेदान्त विचारा।
पटी फारसी फेर, कुरान कलमा सब हेरा।
हिन्दु मुसलमान ज्ञान दोनों वत केरा॥
पढी भागवत और पढ़ी रामायण गीता।
पढे योग वाशिष्ठ वेद अंग संहिता जेता॥
ये सब पढ कर फिर रेण पधारने के पश्चात।
आप साधन चनुष्टम में सतत संलग्न होगयं॥

एक बार उपनिपद् श्रवलोकन करते समय श्रदयन्त गूट विषय समत्त श्रागया, जिसका भाषा में इस प्रकार श्रनुदाद है—

अधिष्ठान आतम अचल दृष्टा स्पृष्ठ जान।
ज्ञाता ज्ञान रु ज्ञेय निज, अनुभव सद्गुरु ज्ञान॥
यह उवनिषद् वचन सुनि, दरिया भये उदास।
गुरु विन ज्ञान न ऊपजै, गुरु हित उपजी प्यास॥

रास भी वृश्चिम सहाराज का समित सीवत परित

श्रुक्तर वीरथ पद्माप करें, पृथ्वी का बीरा ।

चहुँ फेर फिर जाम गुरु बिन रहता कीरा ॥ कब मिद्धि हैं गुरुवेब सत्य समरय गुरु पाऊ । कब क्रिकिया मिट जाम साधु का शिष्य कहाऊ ।!

श्री भगवान की नम वाणो ---

तव ही स्थापक विष्यु कृष कर पाल वाशी। इरिया पीरक धार मिले मुरु झालम झानी।।

दरिया साह बोले—

में दासन की दास, सदा चरखामें राखों।

मित दान दी चैन और दूजी विन भासी।

सम घट व्यापन राम सन भेरक को स्वामी।

करी प्रेरक पूर भेम उर बान्तरमामी।

हरि इच्छा उर पेम जगी हृदयमें ऐमे। तुरत प्रस्ती धेतु, जले वच्छा पर तैसे। राहरा पुरी मभार पेम जी सुरत लगाई। गुरु शिष्य मिलन संयोग रामजी दियो मिलाई ।

पुनः नभ वाणी-

युनि दरिया दिश शब्द ऐम ग्रीहं परकाशा । · राहण त्रावै प्रेम, गुरु वर दरिया दासा ॥

दोहा

भिन्न कारण पेम जी, गये ग्राम के मांहि। जाय खड़े घर यवन के, बौले कछु भी नांहीं। े देखत जन दरियाव, हर्ष श्रानन्द मन मांही ॥ दयानिधि धन्य जागा, वड़ा गुरु देव गुसांई॥ पुँड चरण लिपटाय, जोर कर स्तुति की नहें । मगा करी प्रदासन हरन जिला जानन की के .. राम भी परिचाय सहाराज का सांक्षम जीवन कीत महे दास दरियाव, कृपा प्रभु मो पे कीजे।

पूर्व प्रीति पहिचाम, मेर मिक्त को की थे।
श्री पमजी महाराज का उपदेश:--दोहा

हरिया! रमता राम मं देश काल नहीं कीय। तीन प्रब्हेद रहित है, मंद वासाया ताय। रीम रीम रमतीत है, सब घट ज्यापक सीय। देश काल प्रब्हेद यिनु, सत-चित-अग्रनम्द जीय॥

छ्टर सुरु मिथ्य वर्तमान, कास तीनों से भानो।

हुक रस सब घटमाँहिं, काल सत संबन मानी॥

सर्व कप है राम, सर्व सिद्धान्त बंदोरा। त्रज्ञ काल वस्तु मेर राम में कहै सी दोरा॥ ऐसा रमता राम सर्व शास्त्रों का हेला। रटो गुरु मुख राम, राम विनु गति टूहेला॥ राम रटै शिव शेष, सन कादिक नारद गावै। काक गरुड़ लोमेस, विशष्ठ हृद्य में ध्यावै॥ बालमीकि मातंक, सवरी उपदेश सुनाया। सप्त ऋषि मुख राम, दिया सी तव जन गाया॥ ऐसा राम प्रताप ब्रह्म ऋषि भये मुनिशा। रामायण सत कोटि जगत में कहै सन्देशा ॥ वालमीकि मुख राम, धर्म सुत कारज कीन्हा। राम नाम तत् सार सोही मैं तुभा को दीन्हा॥ चार युगां परमान, राम की नाम वतायो। दरिया सुमिरी राम, मनुष्य अवसर भल पायी॥ ्जगत भ्रमना त्याग रामको सुमिरन कीजै। सुरत शब्द में रास्ति गुरु गम अमृत पीजै॥ वतीसा को जन्म उन्तरे दिचा लीन्ही। कार्ति सुदी ११ सी प्रेम जी कृपा कीन्हीं॥

६२ राम जी वरियान सहाराज वह सहिएस जीवन चरित्र शिव मन्त्र शुक्रवन सदा पारवती प्याया । सत्र दरिया सहाराज राम रसना छुगाया ॥

श्री पेमजी फरमाते हैं—

राम नाम इ पम, कहे भि भन्पत्र सिधाया। प्रसन्त रही दरियाव पर कभी रमता आवा। एस कहे महाराज प्रेमजी रमनी थीनहीं।

णसं करे महाराज ग्रेमजी रमनी भीन्हीं। इत्या प्रेम कपिर मुक्क जाज्ञा सिर भीन्हीं॥ साधन काल

माधन काल केट एकान्ट-स्थान, फर बासन बटमाडा

· मात्रा मुरात निहार पसक पट दाने आहा ॥

- उनमुति मद्राधार, गुरु मुख सुमिरन साधे। निशि दिन प्रीति वढ़ाय, गुरु मुख राम अराधे॥

स्थान परिचय

रसना चौकी चूर पूर करा प्रकाशा।
हदय हर्ष अपार नाभि मध्य च्योति उजासा॥
कमल पूत के स्थान चूर चाल अव आगे।
शिव सुत घर विश्राम, सिखर के मार्ग लागे॥
दीन कूट दे पूठ, वाट आगे की हेरा।
भवर गुफा को भेंदि, द्वार दसवे दे हेरा॥
वरस एक ऋषि मास, दास काया गढ़ जीता।
मिल्या ब्रह्म में जाय, आप मे भया नचीता॥

महा लक्ष्मी जी अमृत लेकर दिरयाव महाराज को दर्शन देने पधारी और बोलीं—

कहै लक्ष्मी जी आप पिओ अमृत तुम दासा।
अमृत रस अधिकार, ज्ञान केअल पर काशा॥

भी बरिवान महाराज का संक्रिप्त जीवन गरित दरिया महाराज

सुन माता यह बात हाय प्रमृत मही किन । सङ्गुरु के परवाप राम रस अमृत पीऊ ॥ वीन कास विद्वें शीक झीर देखा सर्वे नीई।

राम नाम सम सुषा मात दीसे महीं फाई ॥ महालच्मी भन्य पत्य ही दास, म प पत्य है पितु नाता।

धन्य गुरु महारात्र, मीचके राह बताता ॥ पेसे कह कर भाग भी निज घान सिपाई !

इरिया सा महाराज वृति निज इत समाई॥

देव ऋषि नारदजी पधारे एक समय ऋषिराज चाल सुभवडल झाये। मुरघर मारु देश मंगेरे राहका सर साये॥

राम राम कह राम भया ऋषि हर्प अपारा। प्रीत परस्पर मिलन प्रीति कुण वर्ण पारा॥

श्री दरियाव महाराज

ह्रपा करी कृपाल कहो प्रभू कहां से श्राये। श्राप भक्त की सहाय करण भगवान पठाये॥

श्री नारदजी

प्रसन्न हो महाराज ! श्री मुख कथा उचारी । स्वर्गादिक वैकुण्ठ भक्त की सोभा भारी॥ सनकादिक ऋषि राय पारपद सदा चितारे। महा लक्ष्मी महाराज पुत्रवत तोहि निहारे॥

्श्रीदरियाव महाराज

ेकहें दास दरियाव सुनो ऋषि नारद स्वामी। शिव ब्रह्मा ग्राराद्य विष्णु है सव का स्वामी॥ ६६ रास भी दरिवाय सदाराज का संमित्र सीवन पाँउ

में तो अनुपर सदा दास परनन को पेटरो । रर्रकार मरतार और हुजी नहीं मेरी ॥ तुम ना को पेकुवठ विष्कु से कहिये न्दारी । कहा दास दरियाव सदा ग्ररखा मत थारी ॥

क्ष्म भारत भगवान् क्षाप विक्रपट पभारयो । धन्य! धन्य!! वरियोन भी भुख वसन हिचारया ॥ श्री भगवानुवाच

कड़ी नारद महाराम सक दरियोग है कैसा। मो मो देरनी पात कड़ी मुनि मोको देसा॥ श्री नारदजी

निश्-दिन सुमिरत राम सदा मुख सागर सीरा॥ करसी मिक असवर्ड लोक में नाम प्रकाशि॥ अनन्त ही भीव उद्घार, इसा दरिया सा मापै॥

मिक पराक्रम पुर शूर साहस मित पीरा।

श्री भगवान्

ऋषि नारद! यह सुयश मोहि तुम नीक सुनावा। प्रसन्त हुँ भगवान ऋषि को कएठ लगावा॥

एक दिन आकाश वाणी हुई

एक दिनां आकाश मई दरिया को वांनी। इच्छा रूपी आप वोलिया सारंग पानी।

आकाश वाणी

मंहगो होसी नान, काल वर्तगो भारी। पांच सेर परमान तोल एक रुपया लारी।

श्री दिरियांव महाराज शिष्यों को कहते हैं ऐसी अगभी अवाज़ विध्न में कसर च काहीं। पहली लेवां नाज कहां विश्वास रहाई॥ न राम भी दरियाय महाराज का समित स्रोतन वरित्र

शिष्य बोल

धुनो अरम महाराज नाम नेगो में कीन्हों। कारिक धुर को कोझ ग्रुनायन निष्मय कीन्हों॥ अर्थी दरियाय महाराज

क्यों क्षीनों क्रम्य मील श्रुम, पहली दिन परतीर गर्म बास रक्षक हरि, सानी नहीं तुम रीतः॥

महाजन (धान देने वाला) नहीं देती जो धान बाज में नफी कमावा।

चूक गया वन वास, काम कीना में हायां॥ महामन मन पश्चितात करे मन विन्ता भारी।

राम मंत्री वे सन्त वाढ काखे है सारी । श्री दरियाव जी महाराज श्रापने शिष्म को

ध्याह्ना देते हैं नाम कियो ये योज, आय पाछी फिर दीमे। राम मरोसो राख, राम को सुमिरन कीमे॥ शिष्य कुशालीराम जी सौदा फेरने को गये

कहो सेठ क्या वात चित्तमें हर्प न भाई। पया चितवत चित मांहि फिकर की जिकर चलाई॥

सेठ बोला

नफो लिख्यो तुम भाग, हानि लिख्लाट हमारे। मनमें फियो विचार टरे नहीं काहु टारे॥

सन्त क़शाली राम जी वोले

नाज लेवां नहीं हमा गुरु आज्ञा नही भाई। दरिया सा महाराज राम की शरण वताई॥ ममकर लिखी सो पत्रीका, वापिस हम को दी। तुम लो लिखी सो चिहियां अपनी पाछी लो॥

सेंठ बोला

सन्त सदा तुम धन्य हो, हो तुम पूरे साध। ऐसी करनी को करे. जाका मता ग्रागाध ॥

भी दरियाथ सद्दाराजं का संक्षिप्त जीवनं वरित्र श्रमला वृतान्त

पीछे का बुटार्स्ट संदोप में वर्श सुमार्ज ।

सीदा दीना फेर, सरच पर वर्ज सी गांऊ।।

दिन इस को छै बान घरे श्रीमख की रारूयी।

कुत्राजराम सुद नाय आप कोठी में नारूयो ॥

कोठी में करतृत अजा 'यह अजव दिसाई।

बात ग्रमुंब है अध्यव माम की महिमा माई।।

विशेष वृतान्त

चौतरह वर्ष चुकाल अन्न की बहु कठिनाई।

द्वेगर पूर्वदास झीर नानक गुरु माई श

मुद्रभाख से बात संकत मिल पम जचाई।

कद सत्गुरु की सेव वक है अपि कठि नाई।।

तम पर रामी राम गुरांकी कृपा भारी। तुम भगवेत अपार मिल्यो संयोग करारी।

पेसी सनाइ विभार संगत में पीछे काया॥

इन्तजाम कर खुव, मेद दरिया सा पाया॥

श्री दरियाव जी महाराज

दिर्या सब दिश देख सभी की सुरत निहारी।

मनकी जाननहार आप यूं गिरा उचारी॥

कहें आप गुरु देव मिसलत थां कीनी काची।

नहीं राम विश्वास संगत रंग लागो छाछी॥

वृद्ध भाण धन धमण्ड जावी तुम अपने घर की।

हमरी संगत मांहि नहीं दर ऐसा नर की॥

करी मनाही आप अवे कुण सके वुलाई।

सलाहगीर चुप चाप अवे कछु नांहीं वसाई॥

चृद्धभाण जी मन ही मन संकल्प करते हैं

. संत संगत के हेतु वृद्धजी वाहर बैठे, वर्षा ऋतु के मांहिं फेर प्रनाला हेठे दिर्या सा की मात काज कछ वाहर आई। आमणी दमक दजास वृद्ध की देखा जाई॥ मी वृरिषाच मेहाराज का संक्षित मीवन चरित्र थी मता जी

यह बैठा है कीमी मेथ मस मीजे माई।

उत्तर बहुत है बात चली घर मन्दर शाहै ॥ घडमाण जी बोले

मात! दास मुद्रभावा अवन में किस विधि मार्द्ध। गुरु भाषा नहीं मोदि वादर पैठो गुरा गाऊँ॥ श्री माता जी श्री दरिया सा से फरमाती हैं

भुनो साव! दुस पूर कष्ट पाने वृद्ध माना L

साभी मीर्दर वेग, गुना वकशीस कराना ॥

पुन

सुनकर मातृ वंश भाप वृद्ध मींतर साथै। कर करुना गुरु वेब शिष्य की चीर बन्धाये n

श्री चुद्रभाण जी कृत स्तुति

छन्द

अण्ट सिद्धि नव निद्धि सदा सन्तन के आगे।
और विद्य की कीन देख सब दूरा भागे॥
कामधेतु कल वृद्धा, पदारथ मिए चिन्तामिए।
च्यार मुक्ति वेकुएठ, नहीं इच्छा स्वमे पिए॥
छाडत माया संग रहै नित प्रेम हजूरी।
विद्य विलप हो जाय जाय सी कोसा दूरी॥
ऐसे प्रभू दयाल सहाय सन्तन की करते।
धन्य धन्य गुरु देव बाहि मम आरत हरते॥

श्री दरियाव महाराज

रखना धीरज धार प्रेम से सुमिरी रामा।
पट घट व्यापक प्रर, पूरवे सबही श्यामा॥
पर श्रक श्रवर र नाग कीट कुंजर सब पीरंव।
भूते नहीं भगवान जथा, जल स्थल में तोषे॥

ण्डे राम भी देरियाय सहस्राज कर संक्षित बीयम परि

श्री वृद्धभाण जी सुनव दवम गुरु देव के, मन आयो विखास।

मस्तक पर ग्रुढ परवा में, [कड] तुम सब्गुठ में दास श्री दिन्यान महाराज नै एक दिन पृष्ठा चौपाई

एफ दिवस दरिया सा बोले, श्राहम श्रातील विस्तास समोसे

न्तम विदी सो वो पावा फेटर, किस विष सर्प वज्ञे पर केरा

कृरालराम जी बोले

धीपाई करें कुशान सुनो गुरु वंगा,

कर्र कुशान सुनी गुरू वंशा, भर

भरव्यय पत्ने सी मापी मंग

ØΧ

श्री दोखान महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र

दिन दस को अन्न कोठी में डारा.

उनसे अब तक होय गुनारा॥

सो श्रन्न खुटयो न मोल मंगायो ,

राम कृपा से भीग लखायो ॥

श्रा दरियाव महाराज फरमाते हैं

चीपाई

यह क्या चात भई कोठी में.

अन्न छ: मास सच्यो रोटी में।

कहन सुनन श्रसंभव वाता.

विघ्र भयो कोठी मे ताता ॥

अमृद्धि सिद्धि कोठी में वासा,

नित्र तब करे भक्ति की नाशा।

त्तांते कोठी बाहर डारी,

राम राम पुख राम उचारी ॥

मी दनियान सद्दाराज का मिसिस जीवन चरित्र प्रन (चीपाई) सुनि गुरु निरा कुशान सुशानी, कोठी वीद कर बाहर दारी। दोहा कोठी फेंकी बाहर, राख राम विश्वास। माया की इच्छा नहीं ऐसा हरियादास॥

ऋदि-सिद्धि बोली भावि सिद्ध मोडे शाय नाथ सेवा कछ सीने।

मेजी भी भगवान, सेव मिन गत व पतीने 🔠 सन्द नना की सेन निमा पिक् मीमन स्थामी। भाव हरि के शस मुक जीवन सुख पानी म

श्री दरियाम महाराज मजन सार एक धन्त भीर क्य चहिए नाहीं। रेर प्रत्य गुरु ध्य सभी सांची फरमाई u

शृद्धि सुद्धि तुम सुनी, शीघ्र नागीर सिधात्री।
हरखराम घर जाय सन्त सेवा अपनात्री॥
करो जनों की सेव सफल कर जन्म पधारी।
मुक्ते एक चित प्यास लगे रामग्री प्यारी॥
हरका हरिका दास है, वैश्य वंश व्यवहार।
ता घर रहना ठीक है, सेवा करी अपार॥

दौहा

कोठी में जी सिद्धि थी, तार्ते डारी वाहर। राम भंजे साचे मते, तज्यो जगत व्यवहार॥ राम भरोसे राम जन, तजे और विश्वास। कांहू की परवाह नहीं, निर्भय दरिया दास॥

एक समय जीधपुर नरेश महाराज वकतिसहं जी ने अपने पता को राज्य लिप्सा के भाओं से प्रेरित होकर पितृ—हत्या कर डाली, जिस के फलस्वरूप पिता की सूक्ष्म आत्मा प्रेत योनि को प्राप्त हो गई राम औ इरियाच महाराज का संक्षिप्त क्षेत्रम चरित्र
 क्षीर सर्वेष महत्वीं में प्रेत पृतिं दीलाने सत्री।

इस अपराप से राजा अत्यन्त तुली होमय और पिठ इत्यों के कारण राजा सदैव चितातुर रहने लगे। आसिर मदाराज भी इरियान जी के प्यारन से प्रेष्ठ की सदमति हो गई और राजा की इत्या निवत हुई निसका

सैसिप्त पद्मानुबन्ध इस प्रकार है --छन्द

कर्न करी नृप यह 'मीहि सम पापी नांहीं। बाद पाद में करी, राज्य की इच्छा बांही॥ है साची क्रपराध कीन विधि छुटे स्वामी।

भी मुख बैन उचार आप ही बन्तरपानी॥ अब सन्त इास परताप, वाप तन रहेन कोई। मैं शरनामत तोरि बिर्ध अब अपनी नोई॥

उत्तर सुन नृपति के बैम, बाप मुख गिरा उपारी। प्रमा पुत्र वर्षी पाल स्थाप कील-निकीन " श्री दिरयाय महाराज का सक्षिप्त जीवन चरित्र 30 काना सुनी जो बात, धार ज्यों मत चित माहीं। निज नैनासूं देख, अदल तुम न्याव चुकाई॥ पट् मास लग वचन पालना निज सुखदाई। फेर नफी होय देख, करी आगे मन भाई॥ तय राजा मन सोच, प्रचय तत्काल विचारी। धरै कपट मन मांहिं, छाव दोय करी तैयारी॥ इक मींगणा लीद, एक मिष्ठान्न भराई। करै परीचा राम, मीगणां त्रानि धराई॥ कहै राम कर जोरि, अर्ज मैं करहूं स्कामी। वर्ताश्रो प्रसाद, माफि सब करिये खामी॥ अन्तर जामी आप समभ मन मांही लीन्हीं। पूछ प्रचाकी वात, परी हा मेरी कीन्हीं॥ कहें श्राप महाराज, छोव वह पहली लाख्रो। लीद मीगंगां मांहि, जिकी तुम क्यों नहीं पाश्रो ॥ यूं कह धरियो हाथ, तुरत वह भई मिठाई। राजा सूण ते श्राज, सर्व को दो बरताई॥

रास भी इरिवास मधाराज का संक्षिप्त जीवन परिव भ्रमरन देख मन माहि, राय के मयो मरोसी यह समरच महाराज, कियो में भूज अवरोसी ॥

गुन्हा कराया माफ,"जोरि कर कर्जी कीर्न्ही ।

भाप गुरु में शिष्य, चरन की खाया सीरहीं !! ऐसे कह कर राजा शरकानत हीनवा और, महाराज में राजा की कृत्य-कृत्य कर दिया।

दोहा

राम नाम प्रवार्षे, मुखम सभी कुछ शेय। नामा विभ परिचय मये, कहन सके जन कीय।।

प्रारम्य प्रति व प या. सीवव भीगा मीमी

सी समाप्त अप है गया. अप गया मक्ष संयीत ॥

अनन्त जीव चेताय कर, वे राम नाम उपदेश ! अनम अवस निरवानपद, परशा महा स्वदेश ॥

राम माम दल्लार है, शंक न मानी कीय।

मनन प्रवार की कद सके, कीट मुद्ध सम द्वीय ॥

वर्षे तयांसी मास त्रय, दिन वाईस वदीत। राम भजन गुरु गम सहित, लीन मीच अम जीव॥ श्रनन्त जीव चेताय राम के सम्मुख कीन्हा। वेद भेद समभ्ताय परम परमार्थ दीन्हा ॥ राम मंत्र दे ज्ञान ध्यान वेदोक्त वताया। राम साधना योग सुरत से शब्द मिलाया ॥ मगडण कर हरिनाम खंडना करीन कोई। श्रनुभव दिया कराय सन्त जन ध्यावे सोई॥ शिष्य सम्प्रदा विपद कहत कुण पार वसावे। जिनके प्रत्यक् नाम उन्हींका जन जस गावे॥ नाम धाम आगे कहीं, शिष्य सम्प्रदा जीग। संख्या सुत्तम कहत हों, पावन सन्त सुयोग्य ॥

॥ इति श्री दरियाव महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र समात॥

श्री दारियाव महाराज की अनुभव गिरा प्रारभ्

श्रथ श्री राम सद्गुरु देवजी की श्रारती

ऐसी आरती निश दिन करिये,

राम सुमिर भव सागर तरिये ।

तन मन श्ररंप चरण चित दीजै,

संद्गुरु शब्द हृदय धर लीजे ॥

देह देवल विच आतम पूजा,

देव निरंजन और न दूजा।

दीपक ज्ञान पांच कर वाती,

धूप ध्यान खेवों दिन राती॥

अन्हद भालर शब्द अख्राडा,

निश् दिन सेव करै मन पएडा ॥

श्रानिन्द आरती श्रातम देवा,

नन दरियाव करे नहीं सेवा॥

्।। इति आरती सम्पूर्ण ॥

भी सद्गुरु देव जी को श्रङ्ग

सासी नमी—राम पर ग्रह्म को, सन्तुक सन्त क्रभार। वन 'दरिया' कन्द्रम करें, पत्र—पत्र वारम्पार ॥१॥ कसो समो दरि ग्रन्थ नमो,

नमी नमी सद सन्द ।

नन 'दरिया' क्ल्यन करे, नमी नमी सगवन्त ॥२॥

'ब्रियो' सब्गुक मेटिया, भा दिन बन्म सनाध ।

मन्यां शब्द सुनाय के,

मन्तक दीन्दा दाघ॥३॥ सद्गुरु दावा मुक्ति का,

'वरिया' प्रेम द्याता।

इस कर परवाँ विया,

मेट्या सकल भैजाल ॥४॥

E¥.

ी दरियाय महाराज की खनुभय गिरा श्रन्तर थी पहु जन्म की, सद्गुरु भांग्यो आय। 'दरिया' पति से रूठणों, अब करि प्रीति बनाय ॥५॥ जन 'दोरया' हरि भक्ति की, गुरूं वताई बाट। भूला ऊनड़ नाय था, नर्क पड़न के घाट ॥६॥ 'दरिया' सद्गुरु शब्द से, मिट गई वैचाताण। भरम अन्धेरा मिट गया. परशा पद निरवाण ॥७॥ 'दरिया' सद्गुरु शब्द की , लागी चोट सुठीर।

(१) निज स्वस्रप

नी वृदियों व महारख की कार तर है। राम पंपल से नियल गया. मिट गई मनकी होन ॥=॥ द्वप रहा भग सिर्धि में. नोम-मोइ-की पार। 'बरिया' मुरु वैक मिला, कर दिया परते पार ॥६॥ 'दरिया' गुरु गरवा मिला, कर्म किया सव रद्द। मुठा भरम हुआ।य कर . पक्तहाया सत शब्द ॥१०॥ 'दरिया' मृतक देख करि, सद्गुरु कीन्दी रींक। माम सभीवन मोहि विया तीन जीक की पीम ॥११॥ वीत सोफ को मीम है, 'इ'री 'म' मो दोय शहूर।

(२) राम गाम

राम-राम

'दरियां' तन मन अरप के,

भजिये होय निश्कु ॥१२॥ जन 'दरियां' गुरु देव जी, सध विधि दीन्ह वताय। नी चाही निन धाम की,

श्वास, उश्वासी ध्याय ॥१३॥

जन 'दरिया' सद्गुरु मिले, कोई पूर्व के पुराय। जुडु पलट चेंतन किया, प्राण मिलाया अशुन्य ॥१४॥ 'दरिया' सद्गुरु शब्द से, गति-मति पलटै श्रंग। कर्म काल मनके मिटे, हरि भज भये सुरंग ॥१४॥ नहीं था राम रहीम का, में मति हीन अजान। 'दरिया' शुद्ध-बुद्धि ज्ञान दे,

सद्गुरु किया सुजान ॥१६॥ सीता या वहु जन्म का, सद्गुरु दिया जगाय-। जन 'दरिया' गुरु शब्द से ,

सव दुख गये विलाय ॥१७॥

त्व राम भी गरियाच खाराज की बेंग्न ज्व पिया सब्गुरु शब्दों मिट मया, इरिया संशय शीक । स्रीयम वे इरि भाम का, तन मन किया निरोम ॥१८॥ 'इरिया' सब्गुरु क्वा करि, शब्द जयाया एक ।

झानत ही चेतन सया, नेतर[्]सुद्धे झानेक ॥१८॥ 'दरिया' ग्रुक पूरे मिजे, नाम दिसाया नृर। निशा मई सुस्र उपमा, किया निशाना दूर॥२०॥ रंबी शास्त्र⊸कान की. औग रही अपटाय।

सब्गुड पक ही शब्द से, बीम्बी तुरत उद्घाया।।२१॥ शब्द नहा सुस कमना, गया बवेशा मीहि। सनगढ़ ने कमा करि जिस्की कीमी कोणि॥३०॥

सद्गुद ने कपा करि, लिबकी दीन्दी लोहि॥२२॥ बैसी सद्गुद तुम करी, मुक्त से कर्तु न दीप । विप–माढे विप काट़ करि, दिया भ्रमीरस मीपा॥२३॥

गुरु झाये धम गर्न कर, अस्तर इता उपाय। वरवा से सीवन मया, सीवा लिया समाय ॥२४॥ गरु झाये घन सर्वे कर शुरू विकास समाय ॥

गुरु आये घन गर्भ कर, शब्द किया प्रकाश । वीच पढा था सूमि में, सई फूस फूस आशा । २ kस

5

गुरु आये घुन गर्ज कर, कर्म कड़ी संग सिर। भेरम बीज सब भूनिया, उग न सकते फेर ॥२६॥ साधु सुधारे शिष्य की, दे—दे अपना अंग। दिस्यां संगति कींट की, पतंटर भया भिरंग ॥३७॥ यह 'दरियां' की वीनती, तुम सेती महाराज । तुम भूङ्गी में कीर्ट है, मेरी तुर्मकी लाज ॥रद्रा ्विष छुड़ावै चीह करि, अमृत देवे होण । जन 'दरियां' नित कीजिये, उन सन्तनकी साथ॥२९॥ उन सन्तन के साथ से, जिनडो पाने निर्मत्। 'दरिया' ऐसे सन्ते के, चित्त चरणां में रेक्स ॥३०॥ वाड़ी में है नागरी, पान दिशान्तर जाय। नहीं वह सूखें वेलडी, पान वहीं विनेशीय ॥ ई१॥ पान वेल से वीछंड़, पर्देशां रंश देता। जन 'देरियां' हरिया रहे, उसे हरी वेल के हेत ॥३ २॥ र्जुं परदेशां फिरे, ग्रंड धरे घर माहीं। निश दिने रॉखें हेत से, तासी विनशंत नाहि ॥३३॥

राम भी वृश्यान महाराज की बातु पन मिर्ग

सतह संब को बाल वे, अन्वर राखे हैव। पाक इत्येपरि पुक है, लेख आग दिश केत अवश्रा सत्ये की आकाश में, सीची सुरव निवास: वरियां साम असव में, सुरव सिक्ट प्रिकृपास । ३ XII

कोयल बाहे सुद्ध के, पूरे बाहुदार्ग केंद्र । निश-दिन दक्ष हेल हो, वाह्यों पढ़े हा खंड ॥३६॥ सुद्ध काम सनमुद्ध नृष्टी, कुँग्रेड नाया सेही । बुक्त बुक्तुर्व कुँग्रुवरी, कुंग्रेड नाया सेही ।

व्याँ दिया सब्भुक वन्नै, वेस भीतिला भान गारु ।। महा प्रवाप सिर पुर वृष्ट्रे, क्या इस पीळ । 'दूरिया' वचा कृष्य गुरु, नीचे ही भीळ ॥४०॥ जन 'दरिया' गुहदेन ग्री, (भीदि) येसे क्रिया निहान भेसे सुसी वेनडी, नरप कर हरियाल ॥४१॥ सद्गुरु सा दाता नहीं, नहीं नाम सरीखा देव। शिष्य सुमिरण साचा करे, हो जाय श्रुलख श्रुभेव ॥४२॥ जन दरिया सद्गुरु करी, राम नाम की रीक । अमृत बूठा शब्द का, उगी पूर्व बीज ॥४३॥ सद्गुरु वर्षे शब्द जल, पर उपकार विचारि। 'दरियां' सूखी अवैनि पर, रहे निवाना वारि सद्गुरु के एक रोम पर, बाहर वर अनिनत अमृत ते मुखं में दिया, राम नाम निज तन्ते ॥ १५॥ सद्गुरु वृत्ते समाने हैं, फलें से प्रीत न कीय । फल तरु से लोगा रहे, रस पी परिपर्क होये ॥ ४६॥ सद्गुरु पारस की कनी, दीरच दीसे नांच । 'जन दरिया' पर्-द्रव्य-धन, सब श्राये उन मांय ॥४७॥ मीन तलफती जल बिना, सागर माहि समाय। जन दरिया एसी करी, गुरु कृपा मोहि आय ॥४८॥ भव जल बहुता जात था, संशय मोह की बाढ़। 'दरिया मोहि गुरु कृपाकर, पकड़ बाह लिया काढ़॥४६॥

स्मर्गा, का ,र्थग';----

भनी-नमो-इरि गुकुनमी, नमी नमी हरन सम्त । अन 'दरिया' मन्तुन करे, नमी नमी मगुक्त ॥१॥, राम भंजे गुरु शब्द के, तो पक्ट मन्-वेद ।

'दरिया' खाना भूपों रहे, सू-पुर बूठा मेहा, ॥२॥ -'दरिया' नाम है निरमुला, पूरक-अद्भा अगाभ ३

करें सुने सुल ना बरें, सुमरे पाने स्वाद ॥३॥ , देरिया सुमरे शम की, करम बरम सद;लीय।

पूरा मुद्द सिंह पर तपे, विज्ञ न व्यापे, कीव ॥४॥

निश तारे सहने मिटे, अमे निरमस सुर ॥५॥ राम विना फीका संगे, फिया-शास्त्र-कान । 'दरिया' दीपक कहा करें, उदय अवा निम मान ॥६॥ 'दरिमा' सुरम ऋगिया, मैन सुला भरपुर ।

मिन अन्ये देखा नहीं, उस से साहब दूर ॥७॥

'दरिया' सुमिरे राम को, कर्म अर्म सब चूर।

थ्री, धरियाव महाराज को श्रानुभव गिरा समस्य का **चं**ग राम ६३ -'दरिया' सूर्ज ऊगिया; चहुँ दिश अया उनास-। ''रामें प्रकाशे देह में, [ती] सकल भरम का नाशा।⊏॥व श्रान-धर्मःदीपक-जिसाः भैरमत होय विनाश । दरिया दीपक क्या करै, आगे रवि अकाश ॥६॥॥ ्दरिया⁻सुमिरे राम को, टूजी⁻त्राश⁻निवार। एक आश लागात्रहै, कदै न आवे हार ॥१०॥ 🔧 दौरया नरतन पाय कर; किया चाहै कांज। राव रंक दोनों तरे, वेठे नाम जहाज ॥११॥ नाम जहाज बैठे नहीं, श्रान करे सिर भार। 'दरिया' निर्श्य बहेंगे, चौरासी की भार ॥१२॥ जन्म श्रस्तारथ नाम विना, भावे जान श्रजान। नन्म मरणं जम काल की, मिटै न खेंचा तान ॥१३॥। मुसलमान हिन्दू कहा, पट् दरशन रंक-राव। जन दरिया निज नाम विन,

सव पर जम का डाव ॥१४॥ः

स्मा-मृत्यु-नावासि तिक्, वीषे नोकी विस्तीरी। मत चंदरियाः निमं भागं विने ःसमी काल की भारो।१६॥" 'बरिया! नर तन-पाय फर, किया न 'राम छपीर)

ьक्ष रामा∗मी वरिवाय महाराज की धंतिप्रवं गिरीर्वर्शनरेख की ^{धंती स}

भोम उवारम भाइपा;-सो क्षेप पत्ने सिर मार्र ॥१६॥ न भी कोई साधू गृह में , माहि राम मरपुर-। 'दरिया' कर उस शस की में चरखों की घूर॥१७॥

माहर बाना मेप का. मांडि राम का राज । कर दरिया थ सामना, हैं मेरे सिर ताम ॥१८॥

राम सुमिर रामदि मिला, सी मेरे सिर मौर।

'दरिया' वैष विचारिये, लर्र मेर की ठीर ग्र१६॥ 'दरिया' सुमंरे राम को, कोट्-कर्म की हानि।

मम कीर काल का मंग मिटें ! ना काह की कानि प्रिक्त

'दरिया' सुमिरे राम की, ब्रावेंग की बार्घार है कामा कार्ये कार्यसी कंपन होत न बार ॥२१॥ ,श्री द्रियाव, महासङ्घ की, ब्राह्मय गिरा स्मरण-का स्रंग सम् ६४ दरिया राम सम्भालतां, काया कंचन त्सार । श्रान धर्म श्रीर भरम सव, ड़ारे सिर से भार ॥२२॥ दरिया सुमिरै राम्को, सहज तिमिर का नाश। घट भीतर होने चानणां, परम ज्योति परकाश॥२३॥ सद्गुरु संग न संचरा, राम नाम उर नांहिं। ते घट मुख्यट सारखा, भूत इसे वा मांहि॥२४॥ राम नाम ध्याया नहीं, बहुत ही हुवा अकाज। दरिया कामा नगर में, यंच भूत का राज ॥२४॥ पंच भूत का राज में सब जग लागा द्वन्द। जन 'दरिया' स्तगुरु विना, मिल रहा अन्धा-अन्ध ॥२६॥ सब जंग अन्धा राम विन, स्कै न काज अकाज। राव र्क अंधा सबै, अन्धों ही का राज ॥२०॥ 'दरिया' सव् जुग् आन्धुला, सुके सी वेकाम। स्सा जबही बातिये , जाको दरशै राम ॥२८॥

मन वच काय समेट कर, मुसिर जातन रान। सकत प्रगा का अर्थ है, सकत बाव की बाव। 'इरिया' सुमिरन रान का कर सीने दिन राता।३०॥ प्रव जीक प्रय राग कहै, कहे पताला होता। 'हेरिया' प्रकट माम विन, (करों) कीन आये देख ॥ १ १॥ बोह पत्रट कंचन गया, कर पारस की संग ! 'दरिया' परशे शाम की, सहजदि पत्नटै अँग ॥३२॥ झपने भपने इष्ट में शब पी सब कीय। 'बरपा' रका राम से. साम्न सिरोमिय सीय ॥३३॥ 'दरिया' भन्य वह सामवी, रहै राम शिव शाय।

म भी वरियाण महाराज की कानु वर्ग निया हेतरंत का भीग

जब जब स्वास शरीर में अपना राम संभार ॥३४॥ राम नाम रसना रटे, भीवर सुमिरे मान । 'दरिया' यर नवि साधु की, पाया राम रहम्न॥६६॥

राम माम बिन जीव की, काम निरंतर खाय ॥३४॥ 'इरिया' काया कारबी, मोशर है दिन चार। 'दरिया' दुजे धर्म से, संशय मिटै न शुल । राम नाम रटता रहै, सब धर्मी का मूल ॥३७॥ जल चौरासी मुगत कर, मानुत देह पाई। राम नाम ध्याया नहीं, फिर चोरासी श्राई ॥३८॥ 'दरिया' नाके नाम के, विरत्ना आवे कीय। जो त्रावे तो परम पद, त्रावागमन न होय॥३६॥ 'दरिया' राम अगाध है, आतम को आधार। सुमिरत ही सुख ऊपजै,

सहज ही मिट विकार 1801 दिरया राम संभालता, देख किना गुण होय। श्रावागमन का दुख मिटे, ब्रह्म परायण सोय ॥४१॥ मरना है रहना नहीं, जामे फेर न सार। जन 'दिरया' भय मानकर,

अपना राम सभान ॥ ३२॥

६८ राम भी दरियाच महाराज थी चलनत तिरा समस्य वा वी कहा कोई वन वन फिरै, कहा लियां कोई फीज।

भन'दरिया' निश्न नाम विन, दिन इस मन की मीच ॥४३॥

दरिया कात्म सन भरा, क्यों कर निरमल होय। साबुन क्षामे प्रेम का, राम नाम मल भीय॥४४॥ 'दरियाः इस सैसार में, सुस्ती एक है सन्त।

पिये शुधारस प्रेम सें, राम नाम निज वन्त ॥४४॥ राम नाम निश-दिन रटें, हुआ नाहिं दाय। 'दरिया' ऐसे सन्त की, में बिलदारी आय ॥४६॥

'दरिया' सुमिरन राम का, वेसव भूली सेना। भन्य पन्य वे सन्वजन, भिन्दा लिया मन मेल ॥४७॥ 'दरिया' सुमिरन राम का, कीमव लेस न कोय।

टुन इक पटमें संपर्द , वो पांच बस्तु मन दीय॥४८॥ री दरियाव महाराज की श्रानुभव गिरा स्मर्ग का श्रांग राम ६६

'दिरिया' सुमिरे राम को, साकट नांहि सुहात। वीज चमक्के गगन में, गिंधया मारे लात॥४६॥ फिरी दुहाई शहर में, चोर गये सब भाज। शत्रु फिर मित्रज भया, भया राम का राज॥४०॥ जो कुछ थी सोई कही, मिट गई वैंचा तान। चोर पलट कर शाह भया,

फिरी राम की त्रान ॥५१॥

॥ इति ॥

नमी नमी हरि गुरु नमी, नमी नमी सब सन्त। मन 'दरिया' बन्दन करै, ममी ममी ममबन्त ॥१। 'दरिया' हरी किरपा करी, विरहा दिया पठाय ।

विरह मियापी वह में, किया निरंतर मास। वाजा वेली बीब में, सिसके शांस टशांस ॥३॥

कदा इस्त वेरे दास का. निस-दिम दुल में नाहि

पिन-सेठी परची नहीं, बिरइ सठावे माहि ॥४॥

इरिया निरही साधका, तन पीका मन सुख।

रैन म झावे मींब्डी, दियस न जामे सुस्त ॥४॥ विरहन पिठ के कारने, ट्रंट्रन वन- संह साय। निश बीवी पिठ नामिखा, दर्व रहा विषटाय ॥६।

यह विरहा मेरे साथ की, सीता क्रिया अमाय ॥२।

अय विरष्ट का ध्रम

विरहन का घर विरह में, ता घट लोहु न मांस। श्रापने साहव कोरने, सिसके शांसी शांस ॥७॥

॥ इति ॥

भथ शुर का अग

नमी नमी हरि गुरु नमी,

नमो नमो सब सन्तः। भन दरिया बन्दन करै.

देरियां एसा ना मिला,

'दरिया' ऐसा ना मिला,

'दरिया' पसा नर मिला,

इंप्ली स्वागी वहु मिले, हिरसी मिले अनंत।

पंडित हानी बहु मिले, वेद ज्ञान परवीन।

नकता भावा महु मिले, करते लिपा वान !

नमो नमो मनबन्तः॥१॥

राम रता कोई सत्।।२॥

राम माम खन जीन ॥३॥

मी सन्मुख मेले मामा।।।।।

दरिया बान गुरु देव का, वेधे भरम विकार। वाहर घाव दीखे नहीं,

भीतर भया सिंमार ॥४॥ दारया वान गुरु देव का, कोई भेले सूर सधीर।

लागत ही व्यापे सही, रोम रोम में पीर ॥६॥
सोई घाव तन पर लगे, उद्घ संभालें, साज।
चोट सहारे शब्द की, सो शूरां सिरतांज॥७॥
चोट सहै उर सेल की मुख ज्यो का त्यों नूर।
चोट सहारे शब्द की.

'दिरया' सांचा शूर ॥८॥ 'दिरया' शूरा गुरुमुखी, सहै शब्द का घाव। लागत ही सुधि वीसरे, भूले आन सुभाव॥६॥ 'दिरिया' सांचा सुरमा, सहै शब्द की चोट। लागत ही भाजत भरम, निकस जाय सब खोट॥१०॥ १०४ राम भी वरियान महाराज की चातुसन गिरा रार् का चंग 'दरिया' सस्तर बांध कर, बहुत कहाने श्रूर। शुरा दद ही मानिये, भनी मिले मुख मुर॥११॥ सर ही कटक शूरा नहीं, कटक मोहि कीह शूर। 'वरियो' पढ़ी पर्तंग ज्यों जब बार्स मर शूर ॥१२॥ पढे पतमा अभिन में, देह की नाहि समात।

'दरिया' शिप सतगुरु मिले. वी ही जाय मिहास ॥१३॥ भया उत्राक्षा गैय का दींडे देख पर्तग। 'दरिया' ऋाषा मेट कर .

मिले अगिन के रंग।।१४॥ 'दरिया' प्रेमी चारमा , भागे सतगुरु स्रेम।

सवगुरु सेवी गन्द ने, मिनै शन्द के रूग ॥१४॥

'दरियो' देनी कारमा , शम नाम धन पाया।

नरभन भा भननंत हुया, भुला घर आया॥१६॥

भी दरियाव महाराज की श्रवुभव गिरा राम १०**२** शूरां खेत बुहारिया, सतगुरु के विश्वासं। सिर ले सोंपा राम को, नहिं जीवन की आसा।१७॥ दरिया खेत बुहारिया, चढ़ा दई की गीद। कायर कांपे खड़ वड़े, सूरा के मन मोद ॥१८॥ सूर वीर सांची दशा, भीतर सांचा सूत। पूठ फिरै नहिं मुख मुङ़े ; राम तना रजपूत ॥१६॥ साध शूर का एक अंग, मनान भावे भूठ। साध न छांड़े राम को, रन में फिरै न पूठ ॥२०॥ शूर वीर की सभा में, कायर वैठे श्राय। सुरातन श्रावे नहीं कोटि भांति समुकाय ॥२१॥

शूर वीर की सभा में, जो कोइ वेठें शूर। सुनत वात सुख ऊपने, चढ़े सवाया नूरी। १२॥ ्र श्रागे वहैं फिरै नहीं, यह शूरा की रीत। े तन मन अरपे राम को,

- सदा रहे श्रघ जीति॥२३॥

१०४ राम भी इरियान मधाराज की चतुमन गिरा शूर का क्रीग 'दरिया' सस्तर माध कर, बहुत कहार्ने शूर। शूरा सर ही मानिये. भनी मिले <u>मुख नूर॥११</u>॥ सप ही फटक शुग नहीं, कटक मांहि कोइ शुर। 'दरियो' पढ़ी पतंग ज्यों

पढ पतना क्रमिन में, देह की नाहिं समास । 'दरिया' शिप सवगुरु मिक्नै. श्री हो जाय निहास ॥१३॥

जब बाजि नर सूर॥१२॥

मया उनाला गैय का दौढ़े देख पर्तग। 'दरिया' आगा मेट कर . मिने व्यक्ति के रेग ॥१४॥

'दरिया' प्रमी आत्मा , आमे सतगृह सग।

सतग्रु सेती शब्द से, मिलीशब्द के रग ॥१४॥

'दरियां' ग्रेमी आस्मा, शम नाम धन पाया।

नरभन भा भनगंत हुया, सुला घर आया॥१६॥

ो इत्याव महाराज की अनुभव गिरा राम १०७
साध स्वर्ग चाहै नहीं , नरकां दिश न , जाय।
पार ब्रह्म के पार लग, पटा गैव का खाय॥३१॥
पटो पवड़िया ना लहै, पटा लहै कोइ शूर।
सारिवयां साहव ना मिलै, अजन किये सरपूर ॥३२॥
दरिया सुमिरन राम का, श्रा ६ दा साज।
म्रागे पीछे हीय नहीं, वाहि धनी को लाज॥३३॥
इरिया सो सूरा नहीं, जिन देह करी चकचूर।
मन को नीत खड़ा रहै,
र्गे विल हारी शूर ॥३४॥
सिंगु वना शूरा भिड़ा, विरद वखाने भाट।
हला मेक धूजी धरा, खुली स्वर्ग की बाट ॥३४॥

रे०ई न्यास औ बरियान सहस्राध की अञ्चल गिय शूर म मामै कायरी, सुरावन से हेत ! पुरमा - रपुमा ही परि , वह म खाँड खेव ॥२४॥ शूर सदा है सनमुखी, मन में नाहीं शंक। **भाषा भारी राम को . तो बाल न हाने वंक ॥२४॥** शूर दीर सांची इशा, कबहु न माने दार। अनी मिनै आगे यसे, समनुख मेसी सार ॥२६॥

धरां के सिर श्यान है, सार्या के छिर राम इ.बी दिश सार्के नहीं. पढे यो करदा काम ॥२७॥

श्चर भद्रै सैग्राम को , यन में संकनकोय । भाषा भाषे राम को, दोनी दोय सो होय ॥२८॥

श्रूरा सेत बुहारिया, मरम मनी कर चुर। आप पिरामा राम भी , दुर्मन भाषा हुर॥२९॥

वींचे पाँच पर महीं, शूरा बड़ा सुमाव।

है करिया आगे पते, कायर खेले दान ॥३०॥

अय नाद परिचय को अंग

साखी

नमो-नमो-हरि गुरु नमो, नमी-नमी सब सन्त। नन 'दरिया' वन्दन करें, नमो - नमी भगवन्त ॥१॥ - 'दरियाः स्मरे राम को , स्राठ प्रहर स्राराध। रसना में रस ऊपने, मिश्री जैसा वाद ॥२॥ रसना सेती रुतरा, हृदय कीया नाश। 'दरिया' वर्ष प्रेम की. पट-ऋतु वारह मास॥३॥ 'दरिया' हृदय राम से , नो कवु लागे मन्न। लहरें ऊठै प्रेम की, श्रावण वर्षा घन्न ॥४॥ नन 'दरिया' हृदय विचे , हुआ ज्ञान प्रकाश। हीं अरा जहं प्रेम का,

वहं लेव हिलोरा दास ॥४॥

राम भी वृरियान महाएज की कानुमन गिरी बाट खुंबी बंब बानिये, फ्रेंतर मया उमास। , मो कुछ पी³सोबी बनी , पुरी यन की ब्याश ॥३६॥ दरिया सांचा शूरभा, ऋरि दल घाले चुर। राज बरपिया राम का. नगर पसा मरपूर ॥३७॥

सुर दीर सम्बुंख सदो, पक राम का दास।

भीवम मरन यिव मेट कर .

किया शक्य में भास ॥३८।। काया मद्र क्यर चढ़ा, परशा पर निर्वात ।

. बहा राज निरमय भया.

मनहर भुरा निशान ॥३६॥

॥ इति ॥

```
शि दियाय महागज को ध्यनुभव गिग राम १११

'दिरिया' मेळ उनं न कर, पहुंचा त्रिकृटी सिन्य।

दुख भागा सुख ऊपना,

मिटा भर्म का द्वन्द्व॥१२॥

श्रनन्तिह चंदा ऊगीया,

सूरन कोटि प्रकाश।

दिन वादल वर्षा घणी,

दुः ऋत वारह मास॥१३॥
```

बङ्ग नाल की सुधि गहै,

कोई पहुंचे विरत्ता संत।

अमी भारे नीवत घुरे, भिल मिल ब्योति अनन्त ॥१४॥

'दरिया' मन प्रसन्न भया , वैठा त्रिकुटी छाने।

श्रमी भरे विगसे कंवल , श्रनहद ध्वनि गाने ॥१४॥ ११० राम भी वृरियात महाराज की चलु वर्ष गिरा दृर्य सेवी अजरै, सुस्म प्रेम की बहर। नामि फंग्ल में संबरे, सहन मरीने उदर ॥६॥ माप्ति केतल के बींवरे, मैंबर करव गुजार। इत्प न रेख न सर्व है. येसा अगम विचार ॥७॥ माभी परिचय ऊपने, मिट जाय सभी विभाद। कियें हुटें प्रम की, वेसे अगम अगाय ॥ । ।। नामि फॅबल से ऊधरा. मेठ दगह तस भाय।

लिइकी खोजी भाद की,
मिला बद्ध से भाय॥६॥
'इंदिया' घड़िया गन्न भी, मेठ उर्लग्या इंपड।
सुद्ध उपना स्नामी मिला.

भेंटा यहा असरबा ११०॥ महूनाल की सुधि गहें, मेरु दगढ की बाट। 'दरिया' पढ़िया गतन थी,

कांग्यां भवपट पाद ॥११॥

धुरै नगारा गगन में, वाज अनहद दूर। त्रन 'दरिया' नहं थिति रची, निश-दिन वर्षे नूर ॥२ रं॥ जन 'द्रिया' जाय गमन में, किया सुधा रस पान ! गंग वह जह अगम की, जाय किया ग्रस्नान ॥२३॥

अंमी भारे विगतत कंवल, उपनत अनुभव ज्ञान इ जन 'द्रिया' उस देश का,

भिन - भिन करत च्खान ॥२४॥ सुरत गगन में बैठ करं, पति का ध्यान संजीय। नाड़ि - नाड़ि हूं हूं विषे, 'र' रं कार ध्वनि होय ॥२५३।

(१) स्नाच (२) अमृत (३) व्याख्या।

मन 'द्रिया' या सुपमना, रोम रोम हो भाग॥१७॥

'इरिया' नाइ प्रकाशिया . सो धनी कहीं न नाय

घ य-पन्य व साधवा, वहां रहे सी साय ॥१८॥ 'दरिया नाद प्रकाशियाः प्ररी ननकी आशा। घन वर्षे गानि गगन तेत्र पुन प्रकाश ॥१६॥

दरिया नाद प्रकाशिया, किया निरन्तर वास। पार ब्रह्म परशा सही , नई दर्शन पाने दास ॥२०॥

मन 'दरिया' माय गगन में , पर्शा बेन प्रनाद। प्रसंघ बिसरी संघ ग्रह विजिया गोल-विज्ञान॥३३॥ 'दिरया' त्रिकुटी महल में , भई उदासी मीय। जहं सुख है तहं दुख सही , "

रिव जहं रजनी होय॥३१॥

'दरिया' मन रंजन कहै, सुखी होत सव कीय। मीठे त्रवगुन ऊपने, कड़वा से गुरा होय॥३२॥ भीठे राचे लोग सव , मीठे उपजे रोग।

निर्शुन कडुवा नीम सा,

'दरिया' दुर्लभ जोगना ३३॥

त्रिक्टी के मंभ वहत है, सुख की सलिता जोर। नन 'दरिया' सुख दुख परै,

वह कोई देश जो श्रीर ॥३४॥

त्रिकुटी मांहि सुख घना, नाहीं दुःख का लेश। नन 'दरिया' सुख-दुख नहीं,

वह कोई श्रनुभव देश ॥३४॥

॥ इति नार परिचय को श्राग सम्पूर्णे ॥

राम अस्टियाण महाराज की अनुमद मिरा विन पादक पादक जलै, विन सुरज प्रकास। चांद विमा मह बांदना. जन 'दरियां का नारा ॥२६॥

नीवत वासे गमन में, विन बाइस पन गास। महत्त्व विराजे परम गुरु,

'दरिया' के महाराज ॥२७॥ कैचन का गिर देख कर, स्नोमी गया उदास।

भन 'दरिया' भाके भनिज. पुरी मन की भाश॥२८॥

ब्रह्म अपनि ऊपर जीते, चलत प्रेम की बाय 'दरिया' सीवल आवमा.

कम कन्द नज जाय।।२६॥

कहा कोई कृपा करें, कहा रहें कोई कठ। जन 'दरिया' वानक पना .

राम ठपोरी पुठ ॥३०॥

मन वुद्ध शित ग्रहंकार की,

है त्रिकुटी लग दौड़। जन दरिया इनके परे, ब्रह्म सुरत की ठौर॥६॥

मन–वुध–चित–इंकार यह ,

रहें श्रपनी हद माहिं। श्रागे पूर्वेन ब्रह्म है, सो इनको गम नाहि॥७॥

मन-बुध-चित ग्रहंकार के,

सूरत सिरोमन नान।

ब्रह्म सरीवर सुरत के,

दरियां संत प्रमान ॥८॥ मन वुच-चित अहंकार यह,

सुरत मिली नाय ब्रह्म में,

जहं कोई हूजा नांहि॥६॥ 'म' मा मेरू से वावड़े, त्रिकुटी लग श्रोंकार। जन 'दरिया' इनेक परे, ररकार निरधार॥१०॥

अथ नहा परिचय का भीग

नमी नमी इरि गुरु नमी, नमी नमी सन सन्त। मन इरिया बन्दन करें, यमो नमी मगबन्द।। हरिया मिकटी संधि में, यहा जुद्ध रन पूर्

कायर जन प्रठा फिरै, सुन पहुंचे कोइ श्रूर ॥१॥ दरिया मेद उक्षंपिया, मिकुटी वैठा जाय। मो कई से प्रठा फिरे, वो विषयों रस साय शरी

रिरिया मन नित्र मन भय, जिक्टी मंन्ह समाप। मी वहं से पाछे पिरी.

को मन का मन हो नाय ॥३॥ निराकार एकै दिसा, एके दिसा भाकार ॥४॥

दरिया देखे दीय पत्त , शिकुटी संबि मंकार। निराकार बाकार विव , दूरिया बिकुटी संघि। भरे भस्यान वी सुरत का

उरे सो मम का बंप ॥४॥

'र' रंकार धुन हींद में, गरक भया कोई दास। नन दरिया प्यापे नहीं, नींद भूख और प्यास ॥१७॥ जन 'दरिया' आकाश लग, ओंकार का राज। महासुन्न तिस के परे, ररंकार महराज ॥१८॥ 'दरिया' सुरति सिरोमनी, मिलि त्रहा सरोवर जाय। , जहं तीनों पहुंचे नही , मनसा-वाचा-काय ॥१६॥ काया अगोचर मन्न अगोचर, शब्द अगोचर सोय। जन 'दरिया' लव लीन होय, पहुंचेगा जन कीय ॥२०॥ धरती गगन पवन नही पानी. पावक चंद न सूर। रात दिवस की गम नहीं, जहं ब्रह्म रहा भरपूर ॥२१॥ ररेकार सतगुरे ब्रह्म , 'दिरिया' चेला सुर्त। जैसे मिल तैसा भया, ज्यों संचे मांही भर्त ॥ २२॥ ११८ राम भी वरियात महाराज की कानुनव गिरा

'दरिया' त्रिकृटी हह लग, कोइ पहुँचे संत स्थान।
प्राणे अनदद प्रका है, निराधार निरवान॥११॥
दरिया त्रिकृटी के परे, अनहप प्रका अनेला।
जहा सुरत गैली नई,
अनु अब पद को देख।१२॥
रतन अमोलक परस कर, रहा जोंदरी याक।
'दरिया' तई कीमत नहीं,

वनमुन मया ऋषाक ॥१३॥ इढा पिंगला सुपमना, जिकुटी मैकार। इरिया पूरन मदा के, यह भी वन्ली बार॥१४॥

हुरत उद्धट मार्ठी प्रहर, करत श्रद्ध माराप। 'दरिया' तद ही देखिये, स्नागी सुम्न समाप॥१५॥

क्षाणी सुन्न समाघ॥१५॥ सुरत मद्राका प्यान घर, जाय ब्रह्म में वर्षाः जन 'दरिया' जुहैं एकसा, ंें दिनस एक सी वप॥१६॥ सुरत मिलि नाय ब्रह्म से,

अपनो इष्ट संभात ।

जन 'दरिया' अनु भी शब्द ,

जहं दिखे काल श्रकाल ॥२८॥

सुरत मिलि जाय ब्रह्म से,

मन बुध की दे पूठ। जन 'दरिया' जहं देखिये,

कथनी वकनी भूठ॥२.६॥

'दरिया' जहं लग गगन है, जहं लग सुरत निवास।

इनके आगे सुन्न है,

जहं प्रेम भाव प्रकाश॥३०॥

दरिया अनहद अगन का.

अनु भी धूवां जान। इरो सेती देखिये, परसे होय - पिछान ॥३०॥

रास भी दरियाच सहाराज की चनुनगः (गर्य 'दरिया' सरति सर्पनी , चढ़ी ब्रह्म के मांप। जाय मिसी परमंग से .-ु निर्भष रही समाय ॥२३॥ 'बरिया' वेसत महा की, सुरत भयी मय -- मीर्च। तेश पुन रवि अगन विन. बह कोई उच्छ न सीव ॥२४॥ पाप पुन्न सुला दुला नहीं, जेड कोई कम म काता। मन दरिया नई पढत है. हीरों की टकसाल ॥२**४**॥ सुरत निरत परका भया, **भरस-परस मिल पक**। जन शरिया बानक बना, मिट नया भरम अनेक ॥२४॥ । तम विकार भागीर तम, गिराकार की प्याय। निराकार में पैठकर, निराधार जी जाय ॥२०॥

्रत्रगम दरीचा त्रगम घर,

जहं कोई रूप न रेख।

स्वामी सेवक एक ॥३८॥

वकता देव निरंजना.

दरिया जल में मीन गति.

मन - वुध - चित , पहुँचै , नहीं ,

श्रांता दरिया दास ॥३६॥ पंछि उडै गगन में ,

खोज मंडे नाहिं मांहिं।

मारग दरसे नांहि ॥४०॥

शब्द सकै नहि न्याय।

'दरियां' धन वे साधवी

नहां रहे लौ लाय ॥४१॥

शुन्य मण्डल में प्रगटा, प्रेम कथा प्रकाश।

ेजहं 'दरिया' दुविधा नहीं,

१२२ राम शी वरियाण महाराज की शतन शिम मान बड़ा अनुसर्व शबद, दूर देशान्तर जीय। अनहद मेरा साहया. घट में रहा समाय ॥३२॥

'दरिया' बहुते कृरत हैं, कथनी में गुजरान ॥३२॥ मनु मौ क्रुडी घोषरी , निरमुन सच्या नाम। परम जोउ पर्रेष माँ , तो प्रया से क्या कोम॥३४॥

प्रयम प्याम अनुभी करै, जा से उपने ज्ञान।

मार्लो से दीलै नहीं, शब्द न पाँचे जान। मन—बुष—तहं पहुंचे नहीं, कीन कहें सेनासा।३४३

कीन कहें सेनाख॥३४४ माद मिर्ने पर मात्र से, घर कर प्यान असंह।

यर कर पान अस्त । इरिया वर्स प्रक्ष की, न्यारा दीले निंड ॥३६॥ मात्र करम सुख दुस नहीं

माव करम सुरा तु स नहा महि कोई पुषय न पाप! / दरिया देशे सुन्न पट्ट माप॥३७॥

जीव जात से वीछुड़ा, घर पच तत्त का भेख। - 'दरियां' निज घर त्राइया,

पाया ब्रह्म ऋलेख ॥४७॥।

जात हमारी ब्रह्म है, मात - पिता है राम। गृह हमारा शुन्न मे , अनहद में विश्राम ॥४८॥

।। इति ।।

राम भी दरियाच महाराज की भन्नभव गिरा 148 व्रिया सुम्न समाघ की. महिमा पनी झनन्ता। पहुंचा सोई जानसी. कोड - कोई विरता संव ॥४२॥ एक – एक की ध्याय कर, एक – एक झारापी एक-एक से मिल रहे, नाका नाम समाधाधशी माच मिले पर माम सं पर माये पर माम 'दरिया' मिल कर मिल रहै. वी भावा गवन नशाय ॥४४॥ पाच तत्त गुन तीन से , ज्ञातम भया उदाश। मुरगुन निरगुन से मिना, चौंचे-पर में बास ॥४४॥ मामा ठर्दा न संबरे, जहां ब्रह्म का खेला।

रिय-रमनी का मेन॥४३॥

मन 'दरिया' कैसे वनै

भय हेम उदाम का भंग

नमी नमी इरि गृह नमी, नमी नमी सब सन्त।

अन दरिया **न**म्दन करै. -नमी नमी मनबन्द ॥

कबहुक गरिया समुद्र सा, कबहुक नाहीं छाउँ।

जन 'दरिया, इत उतरता . ते कडिये किर्र कांट ॥१॥

किर कांटा किस काम का. पस्त करे वह 'रंव।

त्रन 'इरिया' ईसा अला. जह-वह एके रंग ॥२॥

एक-रंग उद्घटी रहा। भीतर भरम म मादा।

जन दरिया मिन दास का,

धन मन मता मरासः ॥३॥

गै दरियाव, महाराज की श्रानु मध गिरा

दरिया हंसा ऊनला, वगुलहु उन्नवल होय। दोनों एकहि सारिखे,

(पर) चेंजे पारख जीय ॥४॥

दरिया वगुला ऊजला, उझल ही होय हंस। े सरवर मोती चुगै', वाके मुख में मंस । प्रा ।।का चेजा ऊजला, वाका खाज निषेद।

नन 'दरियां' कैसे वन, हंस वगुल के भेद॥६॥ जन दरिया हंसा तना, देख बड़ा ध्यवहार। तन उज्ज्वल मन ऊजला,

उन्नवल लेत श्रहार ॥७॥ षाहर से उडडवल दशा, भीतर मैला श्रंग।

ता सेती कीवा भला,

तन मन ऐकहि रंग॥८॥ षाहर से उडडवल दशा, श्रंतर उडडवल होय। दरिया सीना सील्हवां.

-कांट न लागे के!य ॥ ह॥

मान सरीवर वासिया . धीनर रहे उदास।

नन दरिया भन राम को.

जब सग पिंतर शांस ॥ ११॥

थं इस्ति ।

ध्रथ स्वप्त का धंग

गी नमी हरि गुरु नमी, नमी-नमी सव सन्त। ान दरिया वन्दन करें, नमी नमी भगवन्त॥ रिया सीता सकल नग, जागत नाही कीय। नामें में फिर जागना , जागा कहिये सीय ॥१॥ ताध जगावे जीव की , जी कीइ ऊँठे जाग। गांगे फिर सीवें नहीं, जन 'दरिया' वड भाग॥२॥ माया मुख जांगे सबै, सो सूता कर जान। 'दरिया' जांगे ब्रह्म दिश , सी जागा परमान ॥३॥ दरिया तो सांची कहै, भूठ न मानों कोय। सव जग स्वपना नीद में, जान्या जागन होय॥४॥ साख्य जोग नवधा भगति, यह स्वप्न की रीत। 'दरिया' जागे गुरु मुखी, (नाकी) तत्त नाम से प्रीत ॥५॥

२० राम भी दश्यित महाराज की चमुमर निप
'हरिया' सतगुर क्रुपा कर, शब्द लगाया एक। जागत ही पेतन गया, नंतर सुला श्रानेक ॥६॥
॥ राग मैरव ॥
सव नम सीता सुघ नहिं पाँवे। थोजी सी सीता वर हाँवे॥टक्य
संशय मोड मरम की रैम। क्रोच धुंप होय सोते पन॥१॥
जप-तप-सैयम भी भाषार ।
यह सब सुपने के ब्योहार॥२॥ वीय दान अन प्रतिमा सेवा।
यह सद सुपना क्रेना देशा॥३॥ कद्भना सुनना द्वार क्रों नीत
पहा पटी सुपनी निपरीत ॥४॥ भार वरन और भाभम चार।
सुपमा अन्तर सम व्योदार॥४॥

खट दरसन आदि भेद भाव। सुपना अन्तर सब दरसाव ॥६॥

राजा राना तप बलवन्ता।

सुपनां माही सव वरतन्ता॥७॥

पीर श्रीलिया सबै सयाना।

ख्वाब मांहि वरते विध नाना ॥८॥

कांजी शैयद श्री सुलताना।

ख्वाव माहिं सव करत पयाना ॥६॥

साख्य जोग और नौधा भक्ति।

सुपना मे इनकी इक विरती॥१०॥

काया कसनी दया श्री धर्म।

सुपने सुर्ग ऋौर वन्धन कर्म ।।११॥

काम क्रीध इत्या पर नाश।

भुपना माहीं नर्क निवास ॥१२॥

े आदि भवानी शंकर देवा।

यह सव सुपना लेवा देवा॥१३॥

राम भी दृरियाय सद्दारास की बातुमय गिरा ब्रह्मा-निप्तृत् व्या श्रीवारा। सुपना भन्तर सब न्योहारा॥१४॥ उद्भिन स्वेदन नेर्य अवदा। सुपन कप परते शक्कंडा ॥१४॥ उपने परते ऋह विनसावै। सुपने अन्तर सब दरसावे ॥१६॥ स्वाग प्रदम सुपना व्योदारा । मो मामा सो सब से न्यारा॥१७४ नो कोइ साथ वागिया पाने॥ सो सवगुर के शर्म आनै॥१८॥ **क**र-कित निरसा जीम समागी।

गुर मुख चेत सम्ब मुख बानी ॥१६॥० सैशम मोद मरम नित नाश। भातम राम सहस्र परकाश॥२०॥ राम संभाल सहन घर घ्यान।
पाछे सहज प्रकाशे ज्ञान॥२१॥
जन 'दरिया' सोई वड़ भागी।
जा की सुरत ब्रह्म संग जागी॥२२॥

॥ इति ॥

साथ का इधग नमो नमो इंडिगुरु ममो, नमो नमो सन सन्तः।

जन इरिया बन्दन करै, नमी नमी भगवन्त ॥१॥ दरिया लच्छन साधका, क्या गिरही क्या नेल। नि कपटी निरसंक रहि, बाहर मीतर एक ॥२॥ सतगर को परशा नहीं. सीसी शम्द सुहेतां दरिया केसे नीपत्रे, तेह बिहुना खेता।३॥ सत्त शप्द सत गुरमुखी, मत गनद मुख दंत। यह वो तोई वील गढ़, वह धोई करम अनंत ॥४॥ दांत रहें इस्ती बिना, वो पीन न टर्ट कोय। के कर घारे कामिनी के विशास होय॥४॥ साघ करतो भगवैत करतो , कहै ग्रथ झाँर धरे । दरिया जहें न गुरु विना , तस नाम का भेद ॥६॥

१ वर--श्रामंत्र यजुलेन, भारतेन, और भारते पेर ना परो का भीर शास्त्र का सहाराज न आहर पूर्वक

प्रसाम स्वस्य साल है।

राजा बांटे परगना, जी गढ़ की पति होय। सतगुरु वांटै राम रस, पीवे विरत्ता कोय ॥७॥ मतवादी जाने नहीं, ततवादी की वात। सूरज ऊगा उल्लुवां, गिनै श्रंधारी रात॥८॥ भीतर श्रंधारी भीत-सी, वाहर ऊगा भान। जन द्रिया कारज कहा, भीतर बहुली हान॥१॥ सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करे ब्रह्म की वात। दरिया बाहर चांदना, भीतर काली रात ॥१०॥ वाहर कुछ सममे नही जस रात अंधेरी होत। जन दरिया भय-कुछ नहीं,

नो भींतर जाग जोत ॥११॥

॥ इति ॥

भ्रय चिन्तामणि का भ्रम मनो ननो इरि गुरु ननो, ननो ननो सव सन्त ।

अन 'दरिया' बन्दन करे, नमी नमी मगवन्त ॥१॥

।। इति ।।

चिन्तामनि चौकस चढ़ी, मही रंक के हाथ। मा काइ के सग मिले. ना काइ से बात ॥२॥

'इरिया' चिन्तामनि रतन, भस्यो स्वान पे नाय।

स्वान संघ काने' मया, वह द्रका ही चाय ॥३॥

'दरिया' दीरा सहस दस, जल मन कंचन होय।

चिन्तामिश एक भन्नी, वा सम तुन न कीय।।।।।

अथ अपारख का अंग

नुमी नमी हरि गुरु नमी, नमी नमी सब सन्त। ं जन 'दरियां' वन्दन करें, नमी नमी भगवन्त ॥१॥ हीरा हला हल क्रोड़ का, जाका कीड़ी मोल। जन 'दरिया' की मत विना, बरते डावां डील ॥२॥ हीरा लेकर जीहरी, गया गवारे देश। देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख न लेश॥३॥ इरिया हीरा क्रीड़ का, कीमत लखे न कीय। नवर मिले कोई नीहरी, त्तवही पारस होय ॥४॥

जी वृतिधान महाराख की कारतन गिरी ग्रेश भाई पारस चेतन भया, मन दे झीना मोंच।

मांठ बाघ मीतर पसा ,

मिट गई दोनां दीन ॥५॥

केकर बांधा मांठबी , कर हीरों का भाव। सीला केकर नीसगा, कुठा यही स्वभाव॥६॥

।। इति ॥

अथ उपदेश का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो , नमो नमो सव सन्त। जन 'दरिया' वन्दन करै, नमी नमी अगवन्त ॥१॥ जन 'दरिया' उपदेश दे, जाके भीतर चाय। नातर गैला जगत से, वक-बक मरे वलाय ॥२॥ 'दरिया' बहु वकवाद त्ज, कर अनहद से नेह। श्रींधा कलशां ऊपरै, क्यों वपिंवे मेह ॥३॥ विरही प्रेमी मीम दिल, जन 'दरिया' निष्काम। श्राशिक-दिल-दीदार का, जा से कहिये राम॥४॥ नन 'दरिया' उपदेश दे, भीतर प्रेम सधीर। ग्राहक होय कोई हीगका, कहा दिखावे हीर॥४॥ ''दरिया' गैला जगत से, समभ श्रीर मुख से वील।

नाम रतन की गांठडी , ग्राहक विन मत खोल ॥६॥

१५० राम मी दरियान महाराज की बाहुसब गिर
'दारपा' पैछा जमत को , क्या की ने समक्राय। बद्धना है दिश उत्तर को ,
दक्तिया दिश की काय॥७॥
'दरिया' मैला जगत की, कैसे दीजे सीस । सो कोसां चालन करे, चाल न जाने बीस ॥ ॥ दरिया मैला जगत को, कैसे दीजे हेत । जी सी येरा खाबिये, ठोटू रेत की रेत ॥ ६॥ 'दरिया' मैला जगत को, क्यो की में सुलकायः । सुलकाया सुलक्ष नहीं, फिर सुलक्ष सुलक्ष उनकाय॥ १०॥ 'दरिया' गैला जमत को, क्या की समकाय। रोन नीसरे वेद ने, पत्यर पुणन जाय॥ ११॥ भेद्र मती संसार की, हारे गिने न द्वार।
देसा वेसी परवत पट्टै, वेसावेसी साड़॥१२॥ 'दरिया' सी क्रीपा विचे, एक मुक्ताको साय।/ यह तो बात वेसी कहै, या के नाहीं दाय॥१३॥

श्री प्रियाव महाराज की व्यनुभव गिरा राम

'दरिया' सारा अंध की, कहै देख देख कुछ देख। श्रंध कहै सुके नहीं, कोइ पूरवला लेख॥१४॥ कंचन कंचन ही सदा, कांच-कांच सी कांच।

्'दरिया' मूठ सो भूठ है, सांचा-सांच सो सांच ॥१४॥

-जन 'दरिया' निज सांचका, साचा ही व्योहार। ' भूठ भूठ ही नीवड़े, जामें फेर न सार ॥१६॥ ^रदरिया सांच न संचरै, जब घर घाले भूठ।

सांच श्रान परगट हुवे,

जब मूठ दिखावै पूठ॥१७॥, जन दरिया इस भूठ की, डागल उपर दींड़। सांच दौड़ चौगान में, सो संतां सिर मौर ॥१८॥ कानों सुनी सो भूठ सब, आंखों देखी सांच।

'दरिया' देखे जानिये, यह कंचन यह कांच ॥१६॥ साध पूरुष देखी कहीं, सुनी कहीं नहीं कीय। कानों सुनी सो सूठ सब, देखी सांची होय ॥२०॥ १४२ राम भी वृदियान महाराज की क्ष्मुमन गिर्य 'वृदिया' आगे साँच के, कुठ किती हक नात।

जैसे ठने मानु के, रात आधारी जात॥२१॥ दरिया सौचा राम है, और सकल ही फूट। सनमुख रहिय राम से, वे सपदीको पूट॥२२॥ 'दरिया' सौचा राम है, किर साचा है सैव।

बह तो दाना मुक्ति का, यह मुख्त राम कर्डेत ॥२३॥ 'दिरिया' गुरू दिरियांव की, साथ आहूं दिस नहर। संग रहें सोई पिये, नहिं फिरै तृपाया बहर॥२४॥ साथ सरोवरें राम जल, राम डेप कुछ नौय।

दरिया पीक्षे प्रीत कर, सी विरयत हो जाय ॥२५॥ अन दरिया शुन गाय सी, बहता खंग शरीर। बालदारी उस खंग की, रेश्या निक्से सीर ॥२६॥

साधु जन का एक क्रेंग, बरते सहन सुमाव। की दिसा न्य सैनरे, निवन जड्डां टलकाय॥२७॥

'दरिया' मार्च पानके, इक पंछी आवे जाय। पेसे साथ जगत मं - वर्रत सहस्र सम्बद्ध ॥२००

मच्छी-पंछी साधका, दरिया मारग नाहीं अपनी इच्छासे चलें, हुकम धनी के मांही ॥२६॥ साधु चन्दन वावना, (जाके) एक राम की आस। जन दरिया इक राम विन,

सव जग त्राक पलास ॥३०॥

।। इनि ॥

ष्यथ पारस का भंग े

मनी मनी हरि गुरु ननी,

नमी भमी सब सन्त (भन 'दरिया' वन्दन करै.

नमी नमी भगवन्त ॥१॥

भन 'इरिया' पट्-भात का, पारस कीया मांव।

परशा सी कंचन भया, एक रंग इक माम।।२॥

सीर पश्चट अध्यन भया,

'इरिया' हुरी कसाव की, पारस परशे आप।

भामिप मला न साय ॥३॥

सीर काला भीवर कठिम, पारस परश सोय।

उर नरंमी ऋति निरमसा , बाहर पीना हीय ॥४॥

पारस परशा जानिये, भी पत्नटै क्रांग-प्रंग ।

भ्रेम भ्रम पनटा नहीं, दी है सुद्धा संग्राधा

्पारस जाकर लाइये . जाके श्रंग में धात । ंक्या लावे पापाण को , घस-घस होय संताप ॥६॥ 'दरिया' कांटी लोह की , पारस परशे सीय। धातु वस्तु भीतर नहीं , कैसे कंचन होय।।।।।

॥ इति ॥

द्मय मेप का धंग

नमी नमी हरि गुरु नमी, नमी नमी सम सम्वा भन 'दरिया' यन्त्न करि, नमी नमी ममनत ॥१॥ 'दरिया' काटी मेप सब, भीवर पात म प्रेम। कली नगिषे कपट की, नाम परावे देम॥२॥ 'दरिया' काथ बूध का, वाने सी वनमाय। दूध काट कोषी मई, वह गुन कहां समाय॥३॥

हूप फाट कांगी नई, वह गुन कहां समाय ॥३॥
'हरियां कांगी नेप हैं , फाई काणा हूप।
अवग वर्षन कर आवागा , मेटे सावी सूप॥४॥
बाहर बाँटे बहुव है , 'हरियां' मगद और संप।
हु बहुवा संग मत वह , रहवा साहब वस्त॥४॥

'इरिया' विल्ली गुरु कियो, उद्यक्त यमुकी देखा किसे की देसा मिला, ऐसा अगत क्योर मेससाई॥ पीकी किम कला की, दरिया कला के मप। इन सब ही को पुठ द, समुख साहिक देसा।।।॥ रिया संगत भेप की , हुई मिटावै साट। (दा घालें राम विच, करवें वारह बाट ॥८॥ रिया' स्वांगी भेष का, आगा पाछा अँग । सि कपड़ा पास विन, लागत नाही रंग ॥६॥ रिया संगी साथ का, अन्तर प्रेम प्रकाश। ाम भंजे साचे मते, ढूजे इंद्र निकास ॥१०॥ प्रथम हम यो जानते, स्वाग धरै सो साध। सद्गुरु से परचा भया, दीमी मोटी विराध ॥११॥ दरिया संगी स्वांग का, जा का विकल शरीर। मतलव देखे आप का, नहीं जाने पर पीर ॥१२॥ 'दरिया' साध ऋीर स्वांग का,

क्रोड़ कोश का वीच।

राम रता साचा मता,

- स्वांग काल की कीच ॥१३॥ 'दरिया' परशे साध को, तो उपजे साची सीख। जो कोई परशे भेख को , ताहि मंगावै भीख ॥१४॥

१४८ राम भी वृदियांच महाराख की चातुमन कि
साथ स्वासमें आंवरा , नैसा दिवश और रात।
इमके आशा भगत की, उनको राम प्रदाव ॥१४।
साघ स्वांग अस आंवरा,
जेता क्रुट और सींग
मोर्ची-मोर्ची फेर गहु,
इक क्षेत्रन इक काम ॥१६॥
साध स्वांग जस जान्तरा,
नस कामी निप्काम।
मेप रदा दे शीख में,
नाम रक्षा ते राम॥१७॥
मेप विजुका नाम का, कायर की दरपाय।
'इरिया' सिंघां ना हरे,
न हां राम वह जाय ॥१८॥
वेप विज् का नाम का, देखत और कुरंग।
दरिया सिंमा ना डरे, भीवर निर्मय ग्रंग ॥१६॥

तन पर भेष बनाय के, मकर पकड़ भया सूर। संग लगाया लग रहै, दूर किया होय दूर॥२०॥ दरिया ऐसा भेप है, जैसा अड़वा खेत। वाहर चेतन की रहन, भीतर जड्ड अचेत ॥२१॥ स्वाग कहें में पेट भराऊं. डहकाऊ संसार। राम नाम जाने विना, वोक्टं कालीधार ॥२२॥ 'दरिया' सब जग आंधरा, सूक्त न काज अकाज। भेष रता ग्रंधा सबै, ग्रंधाई का राज॥२३॥ माला फेरे क्या भया, मन फाटे कर भार। 'दरिया' मन को फेरिये, जामें बसे विकार ॥२४॥ जो मन फेरे राम दिस, कल विष नाशै धोय। 'दरिया' माला फेरते, लोगदिखावा होय ॥२४॥ र कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय। जन 'दरिया' निज नाम विन, पार न पहुंचे कीय ॥२६॥

१४० राम भी वृदियोग नहा हा की चतुनन निग पांच सात साली कही , पह गाया दस दीय। दरिया कारण नासरे . पट मराई दीय॥५७॥

सांस्त ओग पपील गति , विद्य पढ़े बहु भाग। बाक्त साग निर पैंडे, भजिस न पहुँचे आग॥२८॥

मिक्त सार विदंश गति, वहं इच्छा तहं शाय। भी सतगुरु रहा करें, विप्न व ब्यापे ताय॥२६॥

भी सतगुरु रह्मा करें, बिग्न न ब्यावे ताय॥२६॥ ॥ इति ॥

मिश्रित साखी

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सव सन्त। जन दरिया वन्दन करै, नमी नमी भगवन्त। दरिया सब जग आंधरा, सुभै सो वेकाम। भीतर का नेतर खुला, तव ही दरशे राम॥१॥ दरिया सव जग आंधरा, सूफे नही लगार। श्रीपध है सत्संग का , सत्गुरु वीवन्हार ॥२॥ दरिया। गुरु किरपा करी, शब्द लगाया एक। जागत ही चेतन भया , नेतर खुला अनेक ॥३॥ दरिया भागे भरम सव, पाया राम महबूव। जाके भान उमै नहीं, दीपक करना खूव॥४॥ अान धरम दीपक दशा, भरम तिमर होय नाश। दूरिया दीपक क्या करै, (नाके) राम रवी परकाश ॥४॥ ११२ यम भी वरियाय सहाराज की बात रा निया ।
दिस्या सुरंग करीगया, सब अस गमा विज्ञाय ।
तर में गंगा परगरी, सरवर काहे नाय ॥६॥
दिस्या सुरंग करीग्या, नेन सुना मरपूर।
जिन कंपे वेसा नहीं, विन से साहब दूर॥७॥
दिस्या सुरंग उनिया, वहुं दिश मया उनाश।
राम प्रकाश वेह में .

रिव दीपक दोनों विना, श्रीपकार ही होय॥ ॥ ॥ ॥ पाय विसार राम को, वैठा सब ही सीय इरिया पढ़ अपनार न कोय॥ १०॥ पाय विसार राम को, महा अपराधी सोय। इरिया तीनों जोक में, इसा भ दूना कोय॥ ११॥ पाय विसार राम को, तीन जोक तल सोय।

मन दरिया अध मीम का.

पाय विसारी राम को अन्ट होत है सीय।

वी सकत गरम का नाशाया।

दिन दिन हुना होय॥१२॥

्यड के बढ़ लागे नही . बड के लागे बीज।

देरिया नान्हा होय कर,

रसना अन्तर वाहिवे, लोक लाम सब खोय। दिरिया पानी प्रेम का .

दरिया तीनों लोक में, देखा दीय विज्ञान।

गुजराती गलतान की, दरिया यह पहिचान।

श्रान-रता गुनरात सव.

सोई कंथ कवीर का, दाहू का महाराज। सिव सन्तन का वालमा,

राम नाम गह चीज़॥१३॥

सीच सहज वड होय॥१४॥

गुजराती गुजरात में , गलतानी गलतान ॥१४॥

कोई राम रता गलतान ॥१६॥

'दरिया' का सिरताज ॥१७॥

198 शम श्री देखियात महाराम्स की कानुभव गिग
दरिया तीनों लोक में, हूंड़ा सब ही धाम।
तीथ व्रव-निर्धिकरत बहु,
विना राम किन कोम॥१८॥
तीन लोक चौदह भवन, इतिया देखा घोष।
राम सरीस्ना यम है,
इसा च दूना की य ॥१६॥
वीन स्रोक चीदह मनन, हुँहा सप ही भाग।
दरिया देला निरत कर,
राम सरीरवा राम॥२०॥
दरिया परके नाम के, दूजा विया न माय।
तन मन ऋतिम धारकर,
रासीने डर मांग॥२१॥
दरिया सुमिरै राग की,
(भाकी) पारस कीनै आय।
भनन टब नेतर ड लै ,
वेद रसना इस आया।२२॥

ज्ञान खुलै अरवल बढ़े, देही रहें निरोग॥२३॥ दरिया प्रेमी आतमा, करै राम का गाढ़। त्रावे उवांसी चोगुनी, भाजन लागे हाड़॥२४॥ कंचन भाजन विष भरा, सो मेरे किस काम।

दरिया वासन सो भला, ना में अमृत राम॥२५॥

की काया कंचन मई, रतनों जड़िया चाम। दरिया कहै किस काम का.

जो मुख नाही राम॥२६॥ राम सहित मध्यम भला, गलत कोढ़ होय अंग। उत्तम कुल की त्याग कर .

रहिये उनके संग॥२७॥ कस्तूरी कूंडे भरी, मेली ऊड़े ठांव। दारया छानी क्यों रहै,

साख़ भरे सव गांव ॥२८॥

124 राम 🕅 दरियाच महाराज की बातुभव गिर क़ैबा झाला चाम का, भीवर मरा कपूर। वरिया वासन क्या करे, वस्तु विसान नूर ॥२६॥ मन दरिया पुन पाप के, भीचे तीरां जुना।

करे दिखाना क्योर को, क्याप समाहै गुंका॥३०॥ पाप पुरन भूस दुस की ; बरट मरत है साल।

मन दरिया रह राम बग, मीय विजेग्या जीव से. कारण सरे न कीय।

जन दरिया सतगृरु मिली.

ती ब्रह्म विजम्बन होय॥३२॥

शीन निर्देशन मुळ है, मिस मिल बिर्द्ध जाय।

वर्डा सबदी की राख ॥३१॥

क्षा रिर्श्वन सांच है. रह उर मंहि समाय ॥३३॥

सनन भावि सब के पर, है अभिनाशी राम।

डपर्न-९र्स्त विनसर्ने, माया ऋषी काम ॥३४॥

दरिया दश दरवाज में, ता विच पढ़त निमाज। ररो ममो इक रटत है,

ग्रीर सकल वेकान ॥३४॥

दीरया खेती नीपजी, सिरोपान गया श्रुख। हरियाली मिट कन भया,

भीतर भागी भूख ॥३६॥

रिव शशि चाले पूर्व दिश, पिन्छम कहै सव लोय। 'दरिया' यह गत साध की,

लखे सो विरला कीय॥३७॥

समुद खार गंगा गदल, जल गुनवत्ता सीत। रवि तेज शशि छिद्रता, दरिया संता रीत॥३८॥ 'दरिया' दीपक राम का , गगन मंडल में जीया तीन लोक चौदह भवन,

सहज उजाला होय॥३६॥

दरिया राजस दूर कर, ररंकार ली लाय। राम छांड राजस गहे. भी भी पर ले जाय ॥४०॥

```
राम भी दरियाच महाराज की कलुभव गिरा
शब्द सुद्दाया बाशदाद , शाधन सैना मान।
सेना सहमे आवसी ..
               नो चढ आने सनवान ॥४१।
दरिया सम्बन साथ का,
                   क्या गिरही क्या भेप
निकपटी निर्पेच्छ रह.
                   बाहर भीतर एक ॥४२।
रइनी करनी साथ की, यक राम का प्यान।
बाहर मिलवा सी मिलै
                  भीतर भातम द्वान ॥४३।
```

नावर आवा अने ॥ इसे विषय अने विषय ॥ इसे विषय अने विषय ॥ इसे विषय अने विषय अ

होय काग से इस ॥४४॥

्सांची संगत साध की , जो कर जाने कीय।

दरिया ऐसी सो करे,

(जेही) कारज करना हीय॥४६॥ दरिया संगत साध की, सहजे पलटे श्रंग।

जैसे संग मजीठ के , कपड़ा होय सुरंग॥४७॥ ंदरिया संगत साध की , कल विष नाशे धीय। े कपटी की संगत किये, ऋापहु कपटी होय ॥४८॥ स्तेगुरु को परसा नही, सुमिरा नाही राम।

ते नर पशु समान हैं.

शांस लेत वेकाम ॥४६॥ माया माया सब कहै, चीन्हे नांही कीय।

जन दरिया निज नाम विन,

सव ही माया होय॥५०॥

्गिरह माहि धंधा धना, भेप माहि हलकान। जन दरिया कैसे भज़ं, पूरन ब्रह्म निदान ॥४१॥ १६० राम भी दश्यान महराज की भान्तन गिरा फुर्जो में फल मान कर, मनी विश्वती जाय। श्रावि शीवल सुगैषिवा, ननमा भक्ति उपाय ॥ १ २॥ फुलों में फल मान कर, जाय विभूती येह। वा से वी मनुनां मना. सक्ख रयाम फल लेह ॥ ४३॥ दरिया भन महता मिक्सा, पूं नहिं मानत मीहिं। वा से नेतन रहित है. सांच कहत है तीहिं।। १४।।

अन दरिया कैंग साथ का, शीठल वचन शरीर। निर्मेल दशा कमोदिनी, मिले मिटाने पीर ॥४४॥

संकट पढ़ सब साथ की, सब संतव के सोय। इरिया सहाय करें हरी, परचे मोने सोग॥४६॥ बातों में ही पह यया, निकस यथा दिन रात। मुहस्तत अप पूरी मई,

मान पढी जम घात। प्रजी

, दरिया। श्रीवध राम रस , पीये होत समाध। महा रोग जीवन मरन,

तेहि की लंगे न व्याध ॥५८॥

यह सुमिरावें राम को,

जारी गावै कृष्ण की , हड्डी जरावे शीत।

दरिया अमल है आसुरी, पिये होत शैतान।

राम रसायन जी पिये,

नारी आवै प्रीत कर , सतगुरु परसे आन।

दरिया हित उपदेश दे,

नारी जननी जगत की, पाल पोस दे पोप।

दरिया निरमुन राम है, सरमुन सतमुर देव।

चो है अलख असेव।।५६॥

दरिया कैसे जानि हैं, राम नाम की रीत ॥६०॥

सदा छाक गलतान ॥६१॥

माय बहिन धी जान ॥६२॥ मूरख राम विसार कर, ताहि लगावै दीप ॥६३॥ १६२ राम भी दरियाय महा क्र भी महान्य निर्म रर्रा सी रच म्हाप है, ममा मोहम्मद जान। दीम हरफ में माहना, सब ही वेद प्रान॥६४।

ररंकार अन्तहः की, दरिया परस अनाम। और इस्ट पहुचे नहीं, नहीं राम का राज ॥६४॥ शिव अक्षा और विस्तु का, ये ही उरे मंडान नन दरिया इन के परे.

निरंजन का निशान ॥६६।

हरिया दही गुरुमुखी, श्रावनाशी की हाट। सम्मुल हीय सीदा करें, सहजहि सुन क्यान॥६७॥

सरंड भाक भरु गास ठरु, होता चन्दन संग। मांठ गेठीला भोषरा, पलटा नाहीं क्रेस ॥६८॥ उपय करम पंघन की नाम जी प्रण हाज ।

उमय करम पंघन करें, नाम करें भय हान। दरिया गरेंसे कास के, परते संबा सान॥६६॥

द्दिया दुखिया जब लगी, पछा पछी यशाम। सुरितमा जप ही होयगा राज निकंत्राराम॥७०। दृष्ट न मुष्ट न अगम है,

'दिरिया' पूरन ब्रह्म में ,

कोई सन्त करे विसराम॥७१॥

।। इति ॥

पट [१]

राग भेरव मादि मनादि मरा साई।टका

दृष्टिन मुस्टि है भगम भगोपर, यह सब माया उनहीं माई ॥। मो पन माली सींचे मूल,

सहने पिने हान पत्त पूर्व ॥२

मो नरपति को गिरह बुसाने , सेना सकल सहम ही आवि॥३। मो कोई करे मानु प्रकाशा .

वी निश तारा सहमहि नाशा॥४॥ गरुड़ पंस की घर में लाने.

सर्व काति रहन नहीं पाने ॥४॥ **द**रिया सुमिरै एकहि राम,

एक राम सारै सन काम॥६॥

वद [१]

राग भेरव भावि अनावि मेरा साहि।ट्रेका

दृष्टि म मुष्टि है अगम अमोषर , यह सब माया उनहीं माई ॥ त्रो बन माजी सींचे मुज ,

त्रो यन माजी सींचे मुल , सहने पिथे डाज फल फूला।ः यो नरपित को गिरह बुजाने , सेना सकल सहन ही माने॥३

त्रों कोई करे मानु प्रकाशा , वी निश तारा सहमदि नाशा ॥४ गरुड़ पैस मी पर में लावे , सप जाति रहन महीं पाने॥४॥

दरिया सुमिरै एकदि राम, पण राम सार्टसण काम॥६॥ कोटि करम जाके उत्पत कार, किला कोटि वरतावनहार ॥१६॥ श्रादि ग्रंत मध्य नही जाको , कोई पार न पार्व ताको ॥१७॥

जन दरिया के साहव सोई, ता पर और न दूना कोई॥१८॥

पद [३]

जाके उर उपजी नहीं भाई. सो क्या जाने पीर पराई।।टेका।

व्यावर जाने पीर की सार, वांमा नार क्या लखे विकार ॥१॥ पतिव्रत पति को व्रत जानै , व्यभिचारिन मिल कहा बखाने॥२॥

हीरा पारख जौहरी पावै.

मूरख निरख के कहा ब्तावै।।३।।

१६६ शम कोटि तेम जाके.. सपै रसीय, बहुण कोटि आक नीर समाय ॥८॥

पुम्नी कोटि पुत्तवारी गंघ, सुरत कीटि जाने लाया वैघ ॥६॥ पंद सुर बाके कोटि पिराक,

अस्मी कीटि जाके रार्थे पाक ॥१०॥ श्चनंत सत भीर खिलवत खाना, ज्ञास चौरासी पति दिवामा ॥११॥

काटि पाप कॉर्पे बल दिन , कोटि घरम भाग भाधीन ॥१२॥

माग्र काटि जाके पत्रश्थार,

छप्पन कोरि जाक पनिहार॥१३॥

कीटि सतीप भाके मरा महार ,

कीटि बुधर माक माया भार ॥१४॥

मोटिस्पा आक मूल इत्प , मीट नक भाक बंध कृप॥१४॥ हिं नेल बिन कंवला वहु अनंत, जहं वपु विन भौरा गोह करंत ॥१॥ प्रनहद बानी अगम खेल, जहं दीपक जलै विन बाती तेल ॥२॥ नहें अनहद शब्द है करत घोर, विन मुख बोले चात्रिक मोर॥३॥

विन रसना गुन उद्रत नार, पांव विन पात्तर निरत कार ॥४॥ नहं जल विन सरवरें भरा पूर,

जहं अनंत जोत विन चंद सूर ॥५॥ बारह मास नहं ऋतु वसंत,

ध्यान धरें जहं अनंत संत ॥६॥

ंत्रिकुटी सुलमन चुवत छीर, र्विन बादल बरपे मुक्ति नीर ॥७॥

'ः अमृत धारा चेले सीर, कोई पीवे विस्ता संत धीर ॥८॥

राम भी बरियांव सहाराज की अनुसव रि कहा कई वेरा वेद पुराना. जिन है सकत जगत भरमाना॥२!

कड़ा कर्क सेरी अनुसय वानी. < विनर्ते मेरी शुद्धि मुळानी ॥३! कहा नके ये मान बढ़ाई.

राम विना सब ही बुस दाई॥शा कहा कर्क वेरा सांख्य घीर पाम.

राम जिना सब वंधन रोग ॥४॥

सहा कक इंग्ड्रन का दुसा,

राम बिना बैना सथ बुखा।हा।

धरिया नहें राम गुरुमुसिया,

हरि बिन दुसी राम संग हुस्सिया॥७

97 [1]

```
र्वे
व महाराज मी प्रानुभव गिस
                                   १६६
                         गम
। पान हर कुनुध कांकड़ा,
                 सहन सहन भड़ नाई,
डी गांठ रहन नही पावै,
                   इकरंगी होई आई॥२॥
करंग हुआ भरा हरि चोला,
                  हरि कहै कहा दिलाऊं।
म नाहीं मेहनत का लोभी,
          वकसो मीज भक्ति निज पाऊं ॥३॥
किरपा कर हरि वोले वानी .
                    तुम तो हो मम दास।
दरिया कहैं मेरे आतम भीतर,
               मेली राम भक्ति विश्वास ॥४॥
                 पद [५]
 श्रादि श्रंत मेरा है राम "
```

उन विन और सकल वेकाम॥१॥

भी वैरिनात महा । ज की अनुनव ति सम मागा घान करावे साई. नोगत हारके दद न हाई ॥४॥ राम नाम मेरा प्रास-व्यवार,

सोई राम रस पीननहार ॥४॥ ान 'हरिया' जानैगा सोई. [जाके] प्रेम की माल कलेने पोर्ट ॥६॥

वड [8]

जी धनियां वी मी में राम तुम्हारा. माम नमीन माति मति दीना , तम वो हो सिरवान हमारा ॥ टेक ॥

कामा का कत्र शब्द मन मुद्रिया सुपमन तांत पदारे

गगम मंदल में धुनुवा बैठा,

मेर सनगुरु कला सिम्बाई॥१॥

```
व महाराज की श्रानुभव गिरं राम
पाप पान हर कुवुध कांकड़ा,
                  सहन सहन भड़ नाई,
धूंडी गांठ रहन नहीं पावे,
                   इकरंगी होई आई॥२॥
इकरंग हुआ भरा हरि चोला,
                   हरि कहै कहा दिलाऊं।
्में नाहीं मेंहनत का लोभी,
           वकसो मीज भक्ति निज पाऊं॥३॥
किरपा कर हिर वोले वानी,
                     तुम तो हो मम दास।
 दरिया कहै मेरे आतम भीतर,
                मेली राम अक्ति विश्वास ॥४॥
                 पद [५]
  श्रादि अंत मेरा है राम :
             उन, विन और सकल वेकाम॥१॥
```

राम् े भी दरियान महाराज भी भन्नत्व । मदा कर्फ वेरा वेद पुराना,

कहा फर्क सेरी अनुभग वानी, - मिनर्ते मेरी ग्रुद्धि मुलानी॥३

जिन है संकल अगत मरमाना ॥२

कहा कर्क ये मान वड़ाई, राम विना सब ही दुस दाई॥४ बड़ा कर्ड देरा सोका चीर याग.

राम विना सव पंपन रोम ॥४ मद्दा कर्क इन्द्रन का दूस ,

राम विना वैवा सप दुखा। है। 'दरिया'कई राम गुरुमुखिया,

हरि विन दुसी राम संग मुस्सिया॥७।

पद ि 1

🛚 राम पंचव ॥

पवि प्रवा पवि मिली है लाग. नई गगन गंदल में परम माग ॥ टेफ ॥ हैं जिल विन कंवला वहु अनंत , जहं वपु विन भोरा गोह करंत ॥१॥ गिहद वानी अगम खेल , जहं दीपक जले विन बाती तेल ॥२॥

नहें अनहंद शब्द है करत घोर,

विन मुख वोले चात्रिक मोर ॥३॥

विन रसना गुन उड़त नार , पांव विन पात्तर निरत कार ॥४॥

जहं जल विन सरवरें भरा पूर, जहं अनंत जोत विन चंद सूर॥४॥

बारह मास नहं ऋतु वसंत , ध्यान धरें नहं अनंत संत॥६॥

त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर,
्विन बादल वरपे मुक्ति नीर ॥७॥

,अमृत धारा चले सीर,

कोई पीवे विरत्ता संत धीर ॥८॥

ररंकार धुन भक्त एक,

मुरत गरी उनहीं की टक ∺€में

नन 'दरिया' पैराट चूर, नदं विरक्षा पहुँचे संत सुर ॥१०॥

पद [७]

चल चल ये ईसा राम सिंघ, वामक में चया रही वंघ nटेक n

चर्डा निर्मेस घरती बहुत घूर, नाई साकित बस्ती दूर दूर ॥१॥

प्रीप्त मृतु में ती मोम, माई मातम बुलिया रोम रोम ॥२॥ । मान प्यास बल सहै भान .

मूल प्यास दुल सहै भान , ्र वहं मुक्ताहल नहीं खानपान ॥३॥

```
१७३
                              राम
      महाराज की अनुभव'गिरा
नउवा नारू दुखित रोग,
              जहं मैं ते वानी हरप सोग॥४॥
माया वागड़ वरनी यह,
            अव राम सिंध वरनूं सुन लेह ॥४॥
्र अगम अगोर्चर कथ्या न जाय,
             अव अनुभव मांहीं कहूं सुनाय ॥६॥
 अगम पंथ है राम नाम,
                 ग्रह वसी नाय परम धाम॥७॥
  मान सरोवर विमल नीर,
                 जहं हंस समागम तीर तीर ॥८॥
   ज्ञहं मुकताहल बहु खान पान,
               जहं श्रवगत तीरथ नितृ स्नांन ॥६॥
   पाप पुन्न की नही छोत,
            नहीं गुरु शिष्य मेला सहन होत ॥१०॥
    गुण इन्द्री मन रहे थाक,
               जहं पहुंच न सक्के वेद बाक ॥११॥
```

भगम देश नई अध्ययाय, अन दरिया सुरत अकेली नाय॥१२॥

पढ [ंं] चल सुवा तरे झाव राज्

पिंतरा में वैठा कीन काम ॥ टेक ॥ विक्ली का दल दहें जोर .

मारे पिंत्ररा तीर तीर॥१॥

मरन पदने मरी भीर, जो पाने मुक्ता सदल श्रीर॥२॥

सतगुरु शस्त्र हुदे में भार,

सहना सहना करी उचार॥३॥ प्रम प्रवाह पसे नव क्याग,

नाद प्रकारी परम लाम ॥४॥ फिर ग्रह बसाचे गमन नाय, नाह बिस्ती मृत्यु मपहुँचे आय॥४॥ श्राम फले नहं रस अनंत , नहं सुख में पानी परम तंत ॥६॥

भिरिमर वरसे नूर,

वन कर वाजे ताल तूर॥७॥

जन दिखा आनंद पूर,

जहं विरला पहुंचे भाग सूर॥८॥

राग बिहंगड़ा

पद [ह]

राग ।बहगड़ा

नाम विन भाव करम नहीं छूटै ॥ टेक ॥

साध संग और राम भजन विन , काल निरंतर लूटै॥१॥

मल सेती जो मल को धोवें,

सी मल कैसे छूटै।।२॥ द्रेम का साबुन नाम का पानी,

दोय मिल तांता टूंटे ॥३॥

राम राजी दर्शिक महराज की बातुनन गिर मेद अमेद गरम का मांडा. चौड़े पड़ पड़ फूटे ॥४॥ गुरु मुख शब्द महै वर झंतर, सकत गरम से छूटै।।४॥ राम का प्यान तू घर र प्राची, भमुत का मेंद हुटै॥६॥

भन दरियाम अरप वे आपा, मरा मरन **तत** हुटै॥७॥

पद (१०)

दुनियां भरम मुख बोराई, आ नी शुद्ध न पाई ॥ टेक ॥

मातम राम सकत घट भीतर. मधुरा काशी नाय द्वारका,

महसठ वीरथ म्हानै।

भवें सहाराज की अनुभव गिरा 🔧 📉 राम अतगुरु विन सोजी नही कोई , फिर फिर गोता खावै॥१॥ वेतन मुरन जड़ को सेवे, वड़ा थूल मत गैला। देह श्रचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला ॥२॥ जप तप संजम काया कसनी, सांख्य जोग व्रव दाना। याते नहीं ब्रह्म से मेला, गुण हर करम वंधाना॥३॥ वकता होय होय कथा सुनावे, स्रोता सुन घर श्रावे। ज्ञान ध्यान की समभ न कोई, कह सुन जनम गवार्वे ॥४॥ 'दरियां' यह वड़ा अवंभा, कहे न समभै कोई। भेड़ पूंछ गहि सागर लांघे, निश्चय द्ववै सोई ॥५॥ ेक्ट राम श्रीवरिषाय महाराज की उरात्तव वि पद [११] मैं तोहि कैसे विसर्फ वेगा। झझा विपृश्न महेस्वर वेगा,

तेथी वैद्ये सेवा ॥ टर्क होप सहस मुख निशदिन व्यावे , स्रावस सदा न पाँवे

भावन शक्त न पाय चांद सुर तेरी भारती रार्चे, इदय मक्ति न भावे॥१।

इत्य मिक्त न झाने॥१। झर्नेत जीव जाकी करत भावना, भरमत विकल झायाना

भरमद विकत आयाना गुरु प्रदाप आरोड लिंग जागी , सी विक्र मार्डि स्थान ॥ ॥ व

सी वहि माहि समाना॥२॥ पैकुंट भादि सी भग माया वा,

मिर्कुट कार्ति सी कम माया वर, नरक क्षत्र औम माया।

पार मद्रा सी वी अपन अमीचर, कोई पिरला असल लसाया॥३॥

```
.भी दरियात महाराज की श्रानुभव गिग राम
जन दरिया यह अकथ कथा है,
                   अकथ कहा क्या जाई।
पंछी का खोज मीन का मारग,
                   घट घट रह समाई॥४॥
                 पद [१२]
  जीव वटाऊ रे वहता भाई मारग माई।
  अाठ पहर का चालना,
                   घडी इक ठहरे नाई॥१॥
  गर्भ जनम वालक भयोरे , तरुनाये गर्भान।
  वृद्ध मृतक फिर गर्भ वसेरा,
                तिरा यह मारग परमान ॥२॥
  पाप पुन्न सुख दुख की करनी,
 ्रंच ठगों के वस पड़यों रे,
कव घर
                     वेड़ी थारे लागी पांय।
                    कव घर पहुंचे जाय॥३॥
```

राम भी वरियाय महाराज की बाहुनव रि चौरासी वासी वस्यो रे. अपना कर कर मान निम्चय निम्लय होय गोरे, पद पहुँचे निर्वात ॥४। राम विना तो ठौर नहीं है। जहं नामे वहं कास। जन 'द्रिया' मन उद्घट सगत सुं, अपना राम सम्मान ॥५% पद [१३] राग सोरठ इ कोई संत राम अनुरागी। नाकी सुरत साहब से लागी ॥ टक ॥ भारस परश पिषके रंग राती होय रहीं पति अता ॥१॥

१⊏१ दरियाव महाराज की अनुभव गिरा राम नियां भाव कछु नही समसे , ज्यों समुंद समानी सिलता ॥२॥ ीन जाय कर समुंद समानी, जहं देखे जहं पानी। कील कीर का जाल न पहुंचे, निर्भय ठीर लुभानी ॥३॥ बांवन चंदन भींरा पहुंचा, 5 जहं वैठे तहं गंदा। उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा, निश दिन करत अनंदा ॥४॥ जन दरिया इक राम भजन कर, भरम बासना खोई। गुरस परसे भया लोहू कंचन, बहुर न लोहा होई ॥प्र॥

१53 राम भी दरियान महाराज की क्रमुनव रि वद [१४] साधी राम श्रानुपम बानी। पूरा मिला तो नइ पर पाया, मिट गई सिंचा सानी ॥टेक। मून चांपहट झासन देठा . ध्यान धनी से मागा। उलटा नाइ क्यल के मारम . गमना माहि समाया॥१॥ गुरु के शब्द की फ़ूंची सेती, भनंत कोठरी सोसी। प्र ब्लोक पर कसरा विराजि, रर्रकार घुन बोली ॥२॥ नहं वसंत अमाध अमम सुख सागर, वेस सुरव नौराही यस्तु धनी पर वस्तन क्रोका, उत्तट मधुठी माई॥३॥

रास की हरियान महाराज की कार्न न रसना का हवा वैका मन पवना, विरह भीम वह गई राम नाम का बीमा बीसा, मेरे सवगुरु कवा सिखाई॥१॥ चना बीज गया कुछ गोटा, हिरदा में उद्दाया। किया निनास भरम सब स्रोया, नई प्रेम नीर बरसाया ॥२॥ नामी माहि भया कुछ दीरघ, पोटा सा दरसाना। भाष मंचल में सिरा निकासा, गगन नाद गरजाना॥ "" मेरु दंद होय हांदी निकसी, सा ऊपर प्रकाश **रीन पुरामा किरह गोम मं**.

पत्त लागा भारताशा ॥४।

श्रानंद उपना भारी µ८॥

रेम्ह सम	भी दर्पशान महराज की भानुसन गिरा
निपधा नाज सबन	मर राखा, वा मच सुरत समारि।
जन 'इरिया' निर्भय	पद परशा, तहं काल व पहुंचे आहे॥६॥
	पद [१६]
भाषत्रं कैसे विसरा जदी में पति संग	स्त सेश्ंगी,
	श्रापा घरम समाई ॥टेक ३३

सत्त्रारु मंग किरपा कानी, उत्तम वर परनाई।

भव मेरे साई की शरम पढ़ैगी.

क्षेगा चरण लगाई।।१॥ में भानराय में नाबी मोली.

षां निमल से मेली।

षे बरातार्थं में बीस न जातूं.

मेद म सर्कु सहेबी॥२॥

```
थी दरियाय महाराज की अनु तव गिरा
       भाव से आतम कन्या,
                     समभ न जानूं वानी।
 'द्रिया' कहें पति पूरा पाया,
                यह निश्चय करि जानी॥३॥
                 पद [१७]
  साधो मेरं सतगुरु भेद वताया,
              तासे राम निकट ही आया॥ टेक॥
  मधुरा कृष्ण अवतार लिया है,
                          धुरै निसाना धाई।
   ब्रह्मादिक शिव श्रीर सनकादिक,
                   सव मिल करत वधाई॥१॥
   गगन मंडल में रास रचा है,
                       सहस गोपि इक कंथा।
👍 शब्द अनाहदराग छती सी,
                        वाजा वजै अनता॥२॥
```

155 राम भी दरियान महाराज की बातुमन गिरी मकाश दिशा इक इन्ती उसटा, राई मान व्र पाना। ता में होय गगन में आया, सुनै निरंतर बामा॥३॥ सर्प एक वालक उनि हार, विष तज अमृत पीने। कृष्ण परमा में नोंटे दीन होय. भमर जुमन जुग भीने ॥४॥ वह हुइ। पिमना राम उचारें. चैदन सर धकाना। बहती नदिया थिर होय बैठी, वज्ञा क्यां प्याना ॥४॥ राषा हरि सत मामा सुदर, मिली रूप्य गल सागी। भरस परस होय खेळान जागी. मय जाय दुषिधा मागी ॥६॥

```
श्रो दरियाव महाराज की श्रमुचव गिरा राम
आइ प्रतीत और भया भरोसा,
                      भीतर आतम जागी।
दिरिया इकरंग राम नाम भज,
                     सहज भया वैरागी । ७॥
               पद [१८]
 साधो एक अचंभा दीठा :
 कड़ुवा नीम कहै सत्र कोई,
                    पीवै जाको मीठा ॥ टेक ॥
 बूंद केमाहीं समुंद समाना, राई में परवत डीले।
  चींटी केमाही हस्ती वैठा, घट में अघटा श्रोलै॥१॥
  कूंडा माही सूर समाना, चंद्र उलट गया राहू।
  राहु उलट कर तार समाना,
                   भोम में गभन समाऊ॥२॥
। त्रिन के भीतर ऋगिन समानी,
                         राव रंक वस वोलै।
```

राम भी बरियान महागज की कन्नव गिए उत्तर कपाल तिस माहिं समाना. नाज वराम् वीति॥३॥ सवगुरु भिन्ने तो अर्थ बतावें. शीयः ब्रह्म का मेलाः अन 'इरियान' पह की परसे. सो है गुरु में चला॥४॥ वद [१६] भाग मेरे सवग्रुक करी सहाहै। भरम भरम पह अवधि गंगाई, में भाषि में यित पाई ॥ टेक ॥

हिरनी जाय सिंघ घर होका, दरप सिंपनी हारी। सीवा साह होय कर निर्भय.

बस्तु करे रखवारी ॥१॥

बानगर उड़ा शिलर की खाका. गरुड थमिस होय बेता।

रही गोपिका मोहि॥२॥

मोम उलट कर चढ़ी आकाशा, गगन भीम में वैठा ॥२॥

सिंह भया जाय स्याल ग्रधीना, मच्छा चढ़ै आकाशा।

कुरम जाय अगना में सोता,

देखे खलक तमाशा ॥३॥ राजा रंक महल में पींढ़ा, रानी तहां सिधारी।

ता जन की विलहारी॥४॥

जन 'दरिया' वा पद को परसे,

पद [२०]

त्रिकुटी सगम होय कर, गंग जमुन के घाट। या मुरली के शब्द से, सहज रचा बैराट॥१॥ गंग जमुन विच मुरली बाजै, उत्तर दिश धुन होय। उन मुरली की टेरहि सुनि सुनि ,

मुरली कीन वजावे हो, गगन मंडल के बीच।।टेका।

भी इरियान महाराज की भारतमन गिरा 112 राम अहा अधर दाली हैसा बेठा, धूनत मुक्ता हीर।

क्यानंड पक्षा केस करत है, मानसरोवर तीर॥३॥ शस्य धुन मुदंग वाने, वारह मास वसंत।

अनहर प्याम असेट मातुर, घरत सबही संत ॥४॥

कान्ड गोपी नृत्य करते, चरख वर्ष हि विना।

मेन विन दरियाम देखे, आर्नद रूप पना ॥४॥

यद [२१]

1) राम जैसे 11

कदा कर्टुमरे पिउकी बात्र मोर कर्ट्सोइ अप्त सुदाव ॥ टक ॥

नव में रही थी कल्या छारी,

त्र मर करम हता सिर मारी ॥१॥

नप मरी रिंड से मनसा दौड़ी. सव गुरु भान सगाई जोड़ी ॥२॥ श्री देरियाव मेहाराज की अनुभव गिरा सम तव में पिउ का मंगल गाया, जब मेरा स्वामी ब्याहन त्राया॥३॥ ्रस्य लेवा दे बैठी संगा, तव मोहिं लीनी बांये श्रंगा ॥४॥ -्चन 'दरिया' कहें मिट गई दूती, आपो अरप पीव संग सूती ॥४॥^{*}ं पद [२२] ऐसे साधु करम दहै। श्रपना राम कवहुं नहिं बिसरे, वूरी भली सब सीस सहै ॥ टेक ॥ इस्ती चल भुंसे वहु कूकर, ्र ता का श्रीगुन उर न गहै। ेवाकी कव हूं मन नहीं श्रानै, निराकार की श्रोट रहे॥१॥

बी दरिवाय महराज हो चतु स्र गिए पन को पाय सया भनवैता. निरंघन मिल उन पुरा कहै। बाकी कर हैन न मन में सलै, अपने घनी सँग जाय रहें nan पति की पाय मई पवित्रवा षह स्वमिचारिन इसि करै। शके सग कव ई नहिं आये. वित से मिलकर विवा और ॥३। इरिया राम मनै जो साजू, मगत संख उपहास करे शका दीप न भंतर आने.

बाका दोप न भंतर ऋषि , चढ़ नाम नद्दान भन सागर वैरे॥धा पद [२३]

"राग निलावल" राम मरोसा रासिए, उनित निर्दे काई। दूरन हारा पुरसी, कल्पे मह माई॥टेका। कोई कहै अमृत समुंद्र मांहि , वड़वा अगिन क्यों सोखत ताहि॥३॥

कोई कहै अमृत शशि में वास, घटे बढ़े क्यों होइ है नाश ॥४॥

कोई कहे अमृत सुरगां माहिं, देव पियें क्यों खिर खिर जाहिं॥४॥

सब अमृत वातों की वात,

अमृत है संतन के साथ ॥६॥ 'दरिया' अमृत नाम अनंत,

8- - -

पद [२६]

ना को पी-पी ग्रमर भये सव संत॥७॥

साधी अरट वहै घट माहीं।

त्रादि अंत कछु नाहीं ॥ टेक ॥

111	एम र्ग	ो इरियान सेंद्राराज	भी समुस्य गिर
सत्गुरु मित्र वीन सोक शिक्रिरां से पाप पुन्यं सामन के जन दरिया	त किरपा व चीवह भवन हामिर सद होय कपे व बरतन सदा इक राम म	िषण , करतार करी, कोई विरत्ने 1 , केवल सर दू 7 , दूरों से दुर हैं , उपहीं की क , सरवे सरमाय 1 स , समबे की वा 1 , दमके सिर	षामा ॥१) रा । १॥२॥ सम्म । १॥३॥
		[રિષ] ! શુદ્ર "	
द्यमत श्रीसा कोई करी व	पीये	पिना अमर मही	alk ntu

भीयं भिना अमर महीं होई ॥१॥ कोई कई अमत मेरी पताल , मक अंत नित्त ग्रासी काल ॥२॥ ष्री दरियाव महाराज की अनुभव गिरा राम कोई कहै अमृत समुद्र मांहि, वड़वा ऋगिन क्यों सीखत ताहि ॥३॥ कोई कहे अमृत शशि में वास, घटै बढ़ै क्यों होइ है नाश ॥४॥ कोई कहै अमृत सुरगां माहिं, देव पियें क्यों खिर खिर जाहिं॥४॥ सव अमृत वातों की वात, अमृत है संतन के साथ॥६॥ 'दरिया' श्रमृत नाम श्रनंत, ना को पी-पी ग्रमर भये सव संत॥७॥ पद (२६) साधी अरट वही घट माहीं। ं जो देखा ताही को दरसै, त्रादि श्रंत कछु नाहीं 11 टेक !!

115	ं राम	भी इरियान महाराज की चमुतन गिर्स
भरघ	उरम विष	श्रमृत कूवा, सत्त पीने फाइः दासा।
वत्तरी	मास्त्र गगम	को वा <i>ली ,</i> सहज भरे काकाश ॥१॥
वाक	ा]े चतन वै	त पर्तत निर्देश हैं। अस्तल निरंत्रन मासी।
रच्दा	विना दशीं	दिश पीचै, सहस्र होत हरियाली ॥२॥

नेपे हुई तभी मन परचा, कल की रास बढ़ाई।

सूरत सुंदरी संग नहीं छोंई. टारी नरे व माई॥३॥

भ्रय मोई विख्ता भान .

भिन सोखा दिन पाया। मन दरिया कोइ पूरा जोबी.

कासे भाद समाया ॥४॥

पद [२७]

साधी त्रलाव निरजन मोई। गुरु परताप राम ग्म निर्मल.

श्रीर न हुना कोई॥टंक॥

तकल ज्ञान पर ज्ञान दयानिधि,
सकल जीत पर जीती।
नाकं ध्यान सहन श्रघ नांग,
सहज मिटै जम छोती॥१॥

नाकी कथा के सरवन तेरी, सरवन नाग्रत होई।

सस्यन नाग्रत हाड। व्रह्मा विष्णु महेश ग्ररु दुर्गा, पार न पार्व कोई॥२॥

सुमिर सुमिर जन होई हैं राना,
श्रित भीना से भीना।
श्रिनर श्रमर श्रह्मय श्रिवनाशी,

महायीन परवीना ॥३॥

मनैत सेत भाके भारा पियासा, भागन मगत चिरभीमें।

मन 'वरिया' शासन के दासा, यहा कपा रस पीर्वे ॥४॥

पद [२६]

सैती क्या गृहस्य क्या स्थामी। विदि के**लुं** तेकि काहर मीतर, घट कट माया खामी॥टेकक्ष

माटी की शीत पत्रन का थैथा, गुरुष कोंगुर्ख से खाया।

श्री हरियाव महाराज की श्रानुतव गिरा	राम	२०१
त्राशा तृष्या वहिने मिलकर,		
गृहकी र	तोंज वन	ाई ॥२॥
मोह भयो पुरुष कुवुध भई घ	रनी,	
	लडका	नाया।
प्रकृति अनंत कुटंवी मिलकर,		
कलहल व	ाहुत उपा	या ॥३॥
लड़कों के संग लड़की जाई,		
	नाम	अधीरी।
वन में वैठी घर घर डोलै,	0	0
स्वारय संग	ग खपी	स्म ॥४॥
पाप पुन्न दोउ पाड़ पड़ोसी,		•
	वासना	नाती।
राम द्वेप का वंधन लागा,		0
	ाना उत्तप	ाती ॥४॥
कोई गृह मांड गृह में वैठा,	0	-
वराग	ी वन	वासा ।

ಶಿಂಶ	राम	भा क्रियान सहाराज की श्रमुभव गि
अन ः	द्रिया इक	राम भजन विन,
		घट घट में घर नासा॥६
		पद [२ ६]
		रेम्बता
सत्मुर		ते रसना से रतन कर, दिरदे में अपन कर प्यान नामें
पट 🕏		र नामि कंपल छेद कर, काम को जोप पाताच वावै॥१।
महं स	र्गांको सी	स जे जनके सिर पान दे, मेरु मंघ दीय असकाश आर्थि।
भगम	है याग जह	नियम गुल सिज्ञ रहा,

दास 'दरियान' दीदार पाने ॥२॥

पद [३०]

॥ छईं सही ॥

राम नाम नहिं हिरदे धरा. जैसा पशुवा तैसा नरा॥१॥

पशुवा नर उद्यम कर खावै, पशुवा तो जंगल चर ऋषि॥२॥ पशुवा त्रावै पशुवा नाय,

पशुवा चरै ऋषी पशुवा खाय ॥३॥

राम नाम ध्याया नही भाई,

जनम गया पशुवा की नाई॥४॥

राम नाम से नाही प्रीत,

यह सब ही पशुवों की रीत ॥४॥

जीवतं सुख दुख में दिन भरे,

मुवा पछे चौरासी पड़ै ॥६॥ ्रिज्ञन दरिया जिन राम न ध्याया,

पशुवा ही न्यों ननम गवांया ॥७॥

२०४	राम	भी परिवास सहाशास की कानुसक रि
		पढ [३१]
		कठिन कडानी। मून जानै, कोइ कोइ विरक्ता आसी॥ टेक
असह		मगद को गहना, प्रभरको अरना, पिन मौतमरना
मधर		, मलक्ष की बसना, देखना, मिम पानी घट मरना
	सुं मिलन	ा, पांव विन चलना, विन अस्मिन वन ददना
*	स्तु विन प	ामना, तीरम मिन म्हामनी।
र्षम वि	वेन मावना	, इत्य न रेख बंद पहिं सिमृत

नोइ भात नरन कुल काना बन दरिया गुरु मन तें पाया,

निरमय पद निरवाना **॥**

चमकी वीज चली व्यों धारा,

ज्यो विनलीविच तारा॥१॥

तुबुल गया चंद वन्द वदरी का,

चोर मिटा अधियारा ॥२॥

ं न्ती लगी जाय लगन के लारा, चांदनी चौक निहारा॥३॥

सुरत सैल करे नभ ऊपर,

वंक नाल पट फाड़ा ॥४॥ चढ़ गई चांप चली ज्यों धारा,

ज्यों मकड़ी मकतारा ॥५॥

ें में मिली नार्य पायपिउ प्यारा , ज्यों सलिता ज्यों सलिता जल धारा॥६॥

₹•₣	राम	भी वृरियान महारम्ब व	ी बाजुनव ।
वेस्वा	रूप शहरप		
'दरिय	ा' दिख इ र	वाकामार न वैस भये वए,	
		उत्दे भौमन	पारा ॥⊏

11 SF 11

गुरु महिमा

नमो नमो हरि गुरु नमो

नमी नमी सव सन्त।

जन दरिया बन्दन करै, नमी नमी भगवन्त॥

नमो नमो निराकार निरंजन हो अविनाशी। तेज पुंज प्रकाश, घटो घट आप प्रकाशी। नमो प्रेम अवतार धन्य मोहि दर्शन दीन्हा। काग पलट कर इंस करि शरणागत लीन्हा। ्रजिल मिल वर्षत नूर तेज तन होत अपारा। ज्ञान ध्यान गुणवन्त , ऐसा गुरु पीर हमारा॥ भगवत ज्यो अवतार, कली मे सन्त कहाया। ्रे अनन्त ही जीव उद्धार, नाम जिप नाम समाया।

गुरु प्रेम पुरष सत सन्त, सत्त ही सन्त बताया।

अकरम कर्म छडाया. नाम से मीहि लगाया।

पुरा ब्रह्म कृपा निधि, दीन बन्धु दावार।

मन 'हरिया' बन्दन करे, चरख कमन विश्व भार॥ गुरु देवन का देव है, गुरु सम ग्रीर न कीय।

जन 'दरिया' कर बन्दना, चरता कैपस चित पीय॥ चौपाई

नमी नमी गृद प्रम इयाला, भन्म गरण की मेटी क्वाक्षा।

नमी नमो सत गुरु जी स्वामी,

रीन बन्धु तुम्द भन्तरयामी ॥१॥ नमी नमी गुरु देव गुसाई,

बन्दम करत दास सिर नाई। मेम पुरुष मधन मर पुरा ,

तेण जिसा मिल भपैत भूरा॥२७

श्री द्रियाव महागज की श्रनुभन्न गिग

प्रकठ कलीमें उपी श्रीतारा. दीन दयाल गुरु देव हमारा।

पकड बाह मोहि शर्श लीन्हा, काग पलट गुरु हंसा कीन्दा ॥३॥

नाम नाम निच तत्त्व पढ़ाया. पढ़तिह जीव परम सुख पाया।

गुरु है सदा मुक्ति के दाता, शरण राख लिया दोनग जाता ॥४॥

त्रिम पुरुष रूपा प्रभू कीन्ही, राम भजन की शिक्ता दीन्ही।

पूरा सद्गुरु हमने पाया . ज्ञान ध्यान गुह्य मेद बताया।

ं जीव शिव का मेला किन्हा, दे गरु जान शरण में लीन्हा॥ **२९० राम भी दरियाय सहाराम की का**नुस**य** गिरा दोद्य

सद्गुरु प्रेम क्याल की, महिमा कही न काय। दरिया देख्या द्ववता, अब अल लिया विराय॥१॥

प्रेम पुरुष पुरा मिसे . पुरुषा दिया पताय ! भाष दरिया निभय स्था, भन बर लागत नाप ॥२॥

सद्गुरु मिस्या सकत दुल भागे,

सद्गुरु मिक्या कटी जम घेडी .

वोडया नगत नास का फन्दा.

राम नाम सुमिरन को जागे ध

चीगाई

राम भगन में सुरता जोड़ी ॥१॥

स्ट्रमुरु मुक्तको करित्रया शदा।

कशनी वे कंचन कर लीवा,

निषय विकार सकल तम दीन्द्रा ॥२॥

गुरु विन कम कीन छुडावै,

गुरु विन जीव महा दुख पावै। गुरु विन जीव भटक वहु मरिये,

लख चौरासी फेरा फिरिये॥३॥

दुख पावत बहु कष्ट अपारा,

सद्गुरु मिले तो भव जल पारा। अपन देव की फिर फिर ध्यावै.

ताते जीव अधोगति जावे॥४॥

दोहा

सद्गुरु प्रेम दयाल जी, अरमत दिया छुड़ाय। दिरया नाम-निरजना, जाकी सेव लगाय॥ राम नाम निज मन्त्र दे, भेद कह्यो समस्राय।

प्रेम परुप परताप से . 'दिश्याः वहा समाय ॥

मी इरियाप सहराज की बानुसर्व मिरा २१२ राम चीपाई

सद्गुरु मियया सूचि सम आई, राग गाग से करी समाई। सद्गुरु मिल्या महा तस्व पाया ,

वत ही वत्रमें सुरत समाया ॥१॥ सुरत शब्द मिल आनन्द हुवा,

अपन्तर पद्भवा सन ही ख़ुलिया, भिन से विद्युदया . उन से मिलिया ॥२॥

सद्गुरु झाप कड़ी सुव चेला.

सद्गुरु साथ वढाने बाह्र , वहा देश का ख़ुक्या कपाटू ॥३॥

अरम करम का सुनया शैसा,

सो सुल दांकि जाय नहीं जूना।

अपगम पम्य का पक्ती गेला।

वदा देश गया मेरा इंसा।

ब्रह्म देश का दर्शन करिया, प्रेम उमंग ज्ञानन्द में भरिया॥४॥ रग रग रोम भया ररंकारा, टग टग कएठ शब्द शएकारा।

वोले गहर गंभीर दशास्त्र. रोम रोम में भया माणकारह ॥५॥ माश छः मुख सेती जिपया,

कराठ कमल मे रग रग रुपिया।

नवमें मास हृदय प्रकाशा, राम राम जपि श्वास उशासा॥६॥ मास ग्यारवे नाभि मे आया,

विप्णु देव का दर्शन पाया ।। नाभि स्थान रह्या त्रय माशा,

लागी मोहि दरश की आशा॥७॥

अब तो ध्यान कूच कर चाल्यो,

मेरु दग्रह बिच मारग डाल्यो ।

मेर-द्यह का मारग पैका. सदगुरु शब्द दिया जह दैका।।८॥ भिकृटी पाट जहां में भागा, त्रेयवची का स्नान कराया। अयवेसी में माया अली, पुरा 🔏 वीहि इंसात कम्पे॥८॥

राम भी दरियाय महाराज की बातुनय गिरा

दोहा

जन हरिया त्रिकटी बढ़े, मनकी उपने चान। पंदे अपूठा नमत से , अमृत नित स्पीय ।।

चीपाई

गुरु प्रवाप महीं मन मेरा ,

सनुगुरु इस्त शीश पर पूरा। उमम उमग कर शष्ट्र हीस्परसे. गुरु प्रवाप ब्रह्म जब वरी॥

7

दोहा

ममो मेरु से वाहुंड़, त्रिकुटी तक श्रोंकार। 'दिरया' श्रागे ब्रह्म है, ररंकार निरधार॥

चोपाई

शुन्न शिखर पर हंसा जाई, त्रानन्द अगम अगोचर पाई। सहस्त्र पंख का कवल प्रकाशा, भिलमिल नोतिर अनन्त उनासा॥ रंग वरण वाको है नांही. कह्या सुगया कछु जावे नांहीं। हरशण कियां आनन्द वण अवि . गुरु गम विना भेद नही पानै।। ब्रह्म अनूपम सागर स्वामी, ग्रानन्त रूप धन त्रान्तरजामी। कहा रूप जो करूं बखाना,

र्गावत वेद अनन्त पुराणा॥

२१६	राज	मी	वृरियाव	मधाग	म की	चनु	भव गिर
	~~~	<u> </u>	~	~	~~~		
			दोहा				

ब्रह्म-योग परिषय गया , सब्गुरु के परताप ।

हुए बहुत सुरता तथो , अयो अनामी आप।। प्रेम पुरुष मोटा मिख्या , मोटी विशो बताय।

अप दरिया शरका महि, छोटा कहत न जाय।। चौपाई

भगम पात अव कही सुनाई, इरिमन इसा मेर वर्वाहै। बादी माम भरनि मिन देखा.

अपर सरोक्र अमुठ पसा॥

अमत अनुभव निम इम पीया,

गुरु प्रताप श्रामन्द इम जीया।

मनवा (सा करत किलीरा, सुख सागर मोवी बहुवेरा। सद्गुरु इम की सुखिया किया, नाम ग्रमीरस हम को दीया। तेन पुंज प्रकाश उसीका, दुख भया टूर दिन काट खुशीका॥

#### रभैनी

सद्गुरु राम जपाया रे, श्रव श्रानन्द मेरे श्राया रे। अवतेन पुछ मुख नूरारे, श्री सद्गुरू समृरथ पूरारे। में राम अभी रस पियारे,

मुके प्रेमः प्रीति से दियारे॥

अब आनन्ह भया अपारा रे,

मारा सत्गुरु भव जल ताराहे॥ अर गिगन मगडल घर छाया रे,

श्यनहद नाद वभाया रे।

₹१⊏ भी वृतियाच सहाराज की कामुमव गिर मनस वस मोदि द्र्या रे, गुरु कपा सेति में परस्या रे त्रिवेखी पर ठाया है, सुध गढ़ संख बनाया र महां मोति जिल्ला मिल जागे रे, बहा गिनी पनटा बाजे है वह अपरंपार आपारा रे, निराकार राम निरमारा है। विम बार्स पन पोरा रे. बोखे है चात्रिक मोरा रे॥ महां विन मुख भारी गावे है, कर विनु वाल वकावे है।

निरत करत बिनु घरमा रे. मजस्य पुरुष के शरका रे। वेग दशों दिश सोहेरे, कोई निरक्ता इरि गन भीवे रेप्न

सुरता मिल गई राम में, बहुरिन दूजी होय॥२॥ राम नाम सद्गुरु दिया, िकया विकर्म विनाश्_{री}

राम सामर की तीर, महिमा करी वसाख्।



## श्रथ श्री पूरणदास जी महाराज की संचित्त वाणी

नमी नमी गुरु देव जी, नमी राम महाराज। नमी नमी सब सन्त की, जन पुरण के सिरताज॥१॥

#### चीपाई

राम शब्द, सुमिरण आया।

नागी सुरत, श्ररु जीव जगाया॥

निर मल नैन, श्रगम का खोल्या।

राम राम, रसना से बोल्या॥१॥

राम रसायन पीया प्याला,

ऐसे अवधू होय मत बाला।

हृद्य हिल मिल नल ज्यूं मीना,

निरगुण शब्द निरंतर चीन्हा॥२॥

राम भी पूरव्यशस्त्री तथा एवं की बहुनव विश श्चय पीम निरंतन राया.

षास उत्तर नाभ वन भाषा। भवेर पंचल पिच निरमल गाणी. इरिजन जुन्त ब्रह्म की मानी॥शा

दोहा भीरघट घाटक बांटे भीघट . निकट पंत्र नैराहा

वांसे चली प्रेम की धारा, खुली मेरकी वाट्टा।२॥ मेह्र इड तल मारग पाया.

उत्तर ब्रह्म भाकाशां भाषा।

**श्रमम भीगमै नगर जगाया**,

महां से उपना वहां ही समाया। भर्तरूप कला ले ऊगा सरा.

वने असंद्र अनादद तूरा ॥४॥

मिल मिल नीत ग्रह्म प्रकाशा , चन्द्र विशा प्रद्वां चंद्र उमासा रंग ताल, गूघरूं वाजे, निज मन निजपुर नाय विराजे ॥४॥ इला पिंगला तारी लावे. सुपमन सुख से प्याला पावे। पिया पियाला मन मतवाला, पकड्या पेड़ छोड़िया डाला ॥६॥ विन रसना वह गावे नारी. पग विन पातर नाचे प्यारी। गावे नारी राम रिभावे, रोग रंग वैराग वजावे॥।।।।

गिगन मंडल विच गंग खलक्के।
विन बादल जहां वीज अलक्के॥
विन बादल, वादल वहां वर्षे॥
विन नियना निर्मल पद दर्शे॥
जोत श्रखंड वजे नहां तूरा।
मार समाय भिड़े रण शूरा।

रार भी पूरवारासकी भदाराज की बाहुतब ार्ग मुपरी बीग की, घट मंदि। ता पट बीच बिरान साई ॥६॥ पाल दिना सब ही रस गरना। मातम रहे परमा चम शरका। तहनर कीच पैक्षी दीय मेसा। एक गुद्ध एक कदिये चेला॥१०॥ चेला भंबर भिक्ता कुर जामे। रहता गुरु आवस्ता पनि॥ गुरु गम आगम वरमेरा। ब्यामानमन मिटया ! वही 'फेरा ॥ ११॥

पेसी सार सकत जुम मारी। सतगुरु विमा साई कोइ नांदी ॥ मद यह जीव सत्त्रुक संग आवे। मोध दुवारा सहज ही पावे ॥१२॥

#### छन्द-पाद

ऐसा ब्रह्म विलाश, श्रातम श्रवास। श्रवमत निवास कथते पूरण दास।

॥ इति ॥

ध्यथ रामसतगुरुदेवजी की धारती चीपाई

षर मन झारती देव निरंगन,

क्यारागमन सक्ता द्वास भवन ।

प्रथम सेप स्तागुरुकी की की, तन मन कारण चरण चित की में ॥

राम राम रसना जिल्ल जाती, इर्य क्योति ब्रह्म की जाती।

माम देवत विष नाद यनाया,

मरस्या सहर गगन गरनीया। शहर अनाहर (पर) गंगल चारा.

चडा त्रीकुरी प्राया स्मारा ॥

मारि-मनादि राग वर गेरा, कृष्ण वास चरखा का देरा। थय थी किरानदासजी महाराज कृत गुरु महिमा

### विनयः—

नमो राम निर्वाण ब्रह्म, तत गुरु सबही सन्त । जन विसनदास कर जोड़ के, वन्दन बहुत करन्त ॥ सतगुरु जन दरियाव सहि मन मान्या मेरे,

श्र-वीर सत वैश कही कुण पूठा फेरे।

मिटा अर्भ अन्धेर, किया गुरु ज्ञान उनाला, क्रिया असल अरपूर, सदा सङ्ग शिष्य मत्तवाला।

राम नाम नित प्रीति शिष्यगण सुमिरे सारा।

नैन-वैशा हरि हेत, सदा साहव का प्यारा।

स्वरदार हुँशियार पार पुरुवीत्तम पागी, क्रियां सेट्र उलङ्घ सुरति ब्रह्म चरणा लागी।

#### ।। दोहा ॥

् निराकार आकार विच, जहां दरिया का वाश। अगम अगोचर गम किया, देख्या किसने दास॥

#### भाषाः - , शिष्यः ! मनकी मारेक्ष भेक्तिः गुरु परका भागे ।

प्रेम प्रीति भिन्नास चाह मुठ चरका जागे इसायक गुरुदेव, अनन्त कल दर्शन पासा।

अरम-कर्म क्राय पाप, सिटै गुरु बराँन पामा प्रथ दीरच त्रत बान पुरुष फल सुक्त किया। सकल-धर्म की बाब परम गुरु दीया

होस यह आपार, शीख सनता मुरु सेना। नाखी कथा दियार दीन नामु गुरु देना सांख्य यीन गुरुवेन, कर्य अनुसन सुस्तरासी,

सास्य याग शुवन, अय अशुवन धुनरासा, मिक-मुक्ति महामोत्त, अमर बाद्यय व्यनिनाशी सकस मयड का नीन विरै गुरु दर्शन परस्या,

सकस मपड का भीव विरे गुरु वर्शन परस्यां, दारश विरण उदार पार गुरु वर्शन दरस्यां। सतगुरु रारखे भाष, भान दिश भाष समानी। कौन दुस्तावे राह, साथ कर्यों की दानी त्री किशनदासजी महाराज की श्रनुभव गिरा राम

## ॥ दोहा ॥

माग भला शिष्य गुरु मिला, दिल में रखे न दूज । 'किसनदास' तन-मन अरप, गुरु समर्थ पद पूजे।

चौपाई

ार बार सतगुरु समकावै,

ऐसी जन्म बोहुरि नहीं आबै।

राम-राम भजते शिष्य भाई,

मुक्ति होगा की जुगति वताई ।

मिटैगा तेरा, नन्मग्-मरग्

सत का शब्द मान शिष्य मेरा।

यूं सत शब्द मान शिष्य लीजे,

सतगुरु शब्द कहै सो कीजे।

र. यस भी निरस्तासकी महाज की कपुत्र किया गुरु विन नाम हाम नहीं छापै, गुरु विन पार कीन पहुचामै । गुरु विन क्यें पके सम कूठा, गुरुविन साहब रहें छापूठा ।।

गुरु पिन सप तीरच फिर आने । गुरु पिन मुक्ति सुस्त नहीं पाये।

शुरु दिन पाश्य भाम निक्त परंथे। शुरु बिन सेमा जोगे न लेंस्से प्र गुरु बिन मन मुख हान विचारे।

गुरु विन मन मुख्य हान विचार । गुरु विन सरम यहुत पचहारे ॥

गुरु विन सरम पहुंच पचहार ॥ गुरुपिन कुमा पर सेव बढापे । गुरु विन ठीर ठीफ नहीं पाने ॥

गुरु धिन प्रमाम निगम पुरा गोले । गुरु चिन दरा द्वार क्या कोले

गुरु विन द्यु द्वार कुष स्पेती ॥ गुरु विन सुसा वनम गमाये॥

शुरु विन निन तत हाथ न आधे ॥ गुरु विन हद में कीन हलावे। गुरु चिन वेहद कीन बतावै ॥ गुरु विन योग-पुक्ति नहीं पावै। कुरु विन मोत्तमुक्ति नहीं आवै॥ गुरु दिन ग्रन्धा वहुत ग्रलूजे । गुरु विनसत साहव नहीं सुनै ॥ गुरु विन सेक पहर फिर फूल्या। गुरु विन आपी आपण सूरया ॥ गुरु विन योग नहीं वैरागी । गुरु दिन त्यायी भी अनत्यागी । गुरु विन अनरी—वनरी करिहैं। गुरु ज़िन भवसागर में फिरि हैं॥ ं गुरु विन कीन श्रप्टाङ्ग कमावै। गुरु दिन कीन प्रसिद्ध कहावै ॥ गुरु दिन साध अगाध न होई।

९३९ राम नौ किरानदासंशीयहाराज की बासुनव गिध गुरु विन अबस्य ब्रीत नहीं कोई ध गुरु विन राम नाम कुछ जागै, गुरु विन मन सुता कुका वागी ॥ गुरु पिन पहुत भल्ने गये वीरा∤ जम की मार पढ़ेरड़े भीरा !! भव सामर से पार उतारे। नहा प्रजय सुँ भनस्य उपारे ॥ वारव विरक उद्गारक श्रामा । माग बढ़ा पूरा गुरु पाया ॥ क्रपमा, दमा मया कर करखा।

शिष्य कर जीव क्षम्या गुरु परणा। **ए**या करी गुरु धरीन दीया । तुमरं चरण शरण हम भीया। में मति हीन मार्ग महीं भागया । पार ब्रह्म गुरु महीं पहिचान्या ॥

में भूका तुम मेद पताया ।

तुम साहव में शरणे श्राया ॥

में कमी, कुष्टी अहंङ्कारी ।

पतित उद्धारण पर उपकारी ॥

तुम गुरुरेय अलख अतिनाशी ।

तुम विन कौन काटे यम फाँसी॥

तुम गुरुदेव निरंजन निरमय।
शिप्य का शत्रु किया गुरु सव व्यय ॥

तुम गुरु देव नाथ निर कारी।

शिप्य भव हुवत किया डवारी क्ष

तुम गुरु देव महा सुख दीना।
काग पलट हंसा कर लीना ॥

्र काम पलट हसा कर लाना ॥ ्र√राम नाम मोताल चुगाया ।

वायश पलट शिष्य इंस कहाया ॥

राम भी किशनदासजीमहाराज की बातुमन गिर।

दाहा

बार पार गुरु गम ध्यमम, अस्यत अस्तत अस्तर्य । किरानदास गुरु यम ध्यमम, गुरु विसा समयन्त ॥ अस्तर लेख में गुरु नहीं, गुरु है असम अस्यार॥

किशनहास क्ष्यन करे, ममो सिरञ्जन हार ॥ चीपाई

गुरु विश चला कीन उपरि, गुरु विन अससागर कुरावरि।

मुरु विक्र जीव कही क्यों कीवे, गुरु विक्र सत्त अपनुत कुछ। पीचे ।।

दौद्य

गुरु विने भाग्या ये भाकत, गुरु विन मुद्र भागत १ / निज्ञानदास मुख सम विना सव नर पश्च समाम ॥

### चौपाई

गुरु यिन भटकत वह दिन बीता, गुरु विन स्वाँग रहा सव रीता ॥ गुरु विन शुद्ध-चुद्धि हाथ न प्रावे, गुरु विन भुगत-भुगत मर नावे॥ गुरु विन माया बहुत नचाया, गुरु विन जोगी जगत हंसाया॥ 🤻 गुरु विन पट् दर्शन ठग बाजी, गुरू विन मक्कर परिडत् काजी ॥ गुरु विन जोर कहावे जोसी. गुरु विन अन्त काल फिर रोसी ॥ गुरु विन करे कीर्त्तन रासा. गुरू विन घर-घर फिरै उदासा । ु गुरु विन भालर ताल घनावे,

गुरू विन माया बहुत मनावै

२६४ राम भी कियानशासकी महाराज की बातुमय गिरा

दोहा बार पार तुक गम भ्रमम, भ्रयगत भकत भनन्ते ।

किशनवास गुह नम अयम, गुह जैसा मगरूव ॥ अज्ञल लेख में गुह नहीं, गुह है अयम अपार॥

किशनदास कन्दन करें, नमो सिरञ्जन द्वार ॥ चीपाई

गुरु विम चेला कीव उपरि, गुरु विन मक्सानर कुवारीर गुरु विन मीम करी क्यों तीर्वे

मुद्ध विन मीम भदी क्यों नीवे, गुरु विन सर ग्रमण कुवा पीवे।

दोहा

गुरू विने बन्धा वे बकल, गुरू विन मृद्ध सत्रान । निज्ञानदास मुरू मम विना सब नर पशु समाम ॥

### चोपाई

गुरु विन भटकत बहु दिन वीता, गुरू विन स्वॉग रहा सब रीता ॥ गुरु विन शुद्ध-वृद्धि हाथ न श्रावे, गुरु विन भुगत-भुगत मर नावै॥ गुरु विन माया वहुत नचाया, गुरु विन जोगी जगत इंसाया॥ < गुरु विन पट् दर्शन ठग वाजी, गुरु विन मक्कर परिडत् काजी ॥ गुरु बिन नोर कहावै नोसी, गुरु विन अन्त काल फिर रोसी ॥ गुरु विन करें कीर्तन रासा, गुरू विन घर-घर फिरै उदासा ॥ ्र गुरु विन भालर ताल घनावै, गुरू विन माया चहुत मनावै ॥

बी फिर नरासबी महाराज की बाहुसब गिए गुरु पिन पुछा मारग में युद्धा, गुरु विन राम न माने रुद्धा 🏻 गुरु विम मान-चेव सप सुटै, गुरु दिन शीय बद्धी स्पॉ छुटे ॥ गुरु दिन परम पन्य नहीं पावै. गुरु विन समत धमत सम माने 🏻

गुरु दिन कॅीन सरीदा साने,

शुरु दिन गगन नाइ किम सामि। गुरु विन घड सुर पर हेरे,

गुरु दिन पैच परन पुराय फेरी। गुरु विन निज निरवाका न पापे,

गुरु विन अपनि एकि गमनि ॥ मुद्द विन पुरा मन पार लीवाबै.

कर रूपा कर्षार बतारे ॥ शब्द दीन सतगुरु नहीं दीने.

पारस बीड पथर इसी सीबी ही

## चेशाई

सतगुरु ऐसा कीजे साधू,

पाँचूं पेल परम तत्व लाधू॥

सतगुरु ऐसा कीजे भाई,

परम ज्याति में ज्योति मिलायी॥

जैसा गुरु तेसा शिष्य होई,

खर से खर बन्ध्या सब कोई॥

खर से खर बन्ध्या सब कोई॥ इयो दीपक विन मन्दिर श्रंधारा,

यूं सतगुरु विन साहव न्यारा।।

'किशनदास' गुरु ग्रथम उद्धारे, ग्राप विरे श्रीरी की वारे॥ ऐसा है गुरु देव हमारा,

'किशनदास' सतगुरु का चेरा।। निराकार निर्भय नारायण,

'किशनदास' पहुँचा-पारायण ॥

१४० राम मी फिरानगमधी महराज की ममुस्य गिरा पद (राग विद्गहा)

टेर---साधी घर ही में पर पाया। पर ही पीच मिल्या श्रविनाशी. मिख कर गरक मिटाया ॥ टेर ॥

घर में सत्तमुद्ध घर में चेला. घर में समिरण प्यानी ।

पर में गाय बनाइव गरजे. पर में है दस्त द्वानी ॥ १॥

घर में देवल घर में देवा.

पर में रोषा-प्रशा घर में राग धगर गर गेरा.

क्रीर न का<del>ई ब्र</del>मा n २ n

घर में क्या सामस्त घर में.

घर में भ्रथ विचारा । पर में मिक्क मुक्ति पुनि घर मैं,

रेष्टर राम	म भी दिशासन्।सजी सदाराज की कांगुल				
	मा	मांटा	भा	माम्हा	
मा इम मोम	मीग	भी व	नाही,		
	मा	परषट	ना स	तना ॥ १	
ना इस घरक	म्यन	भी	માંદીં,		
	मारी	म	पढ ।	पसारा ।	
माही पौच					
	-		से न्या	रह भ र	
म्य <b>इ</b> स इ.हि-					
	बदु	है न	<b>4</b> .4	म रेला	
आप म शाप	पोप	पुरस म	ri <b>t</b> i,		
	भरा	म 1	गस अह	रेलागा है	
वा इसे करने	गरम	सीः	niff.		

षा भागा ना मोखा।

'किश्चनदास' वाविशत श्रविमाशी, पाया ठीक

'साबी हम किए मीशर श्राया । श्रमरापुर स्थान हमारा पूरव लेख पठाया ॥टेर॥ महा मलीन मलैच्छ मुल्क में, जन्म हीन—घर जाया श्रादि-अनादि अमर वर मेरा, राम-नाम तत्व पाया ॥ १ ॥ ें भूला-मेक-जगत सव भूला, भूला रङ्गरू राया हिन्दू-तुर्क--उभय दल भूला, अमर ब्रङ्क विशराया ॥ २॥ पिंडत-जगत-वेद नित वाँचै. मन माया--- श्रलुकाया ्रीन पद छोड़ सिफ्त से लागा,

स्वप्ने -का सुख चाया ॥ ३ ॥

486	राम	नो विशानशासजी महाराज की व्यस्
मा	इम गोम	मा माटा ना मानहा मोग भी मांही,
मा	<b>ए</b> स घरर	मा परघट ना झाना ।। इ.समन भी मोदीं, गोदीं मचड पसारा
नाई		तत्त्र गुण वीनू, निर्मुख ग्रम से न्यास ॥ व
ना	हम हाष्टि	—मुष्टिमी नांही, गुपु है म इत्य व देख

नपुर्देश रूप न रेस साम म शाप पोप पुरंप नोहीं, अपना न शास अपनेका ग

भारत न वास महोसा ताः बाह्य सम्बद्धाः स्टब्स्य स्टब्स्य

ना इस अपन गरका मी आंहीं, ना भाना ना मोखा

ना आना ना माखा 'किशनदास' अविगत श्रविमाशी,

पाया टीक ठिकावा ॥ ४

उत्तम शील सन्तोप, उत्तम सत सुमिरण साचा।

उत्तम:-

<b>₹</b> ४४	राम	। भी किरानदास सहायस की चनुभव निर							
रान	द्वेष								
किशन	रास ग्र	कापा क्राप वन्धाया ॥ ४  हदेव दयाकर,   निम्न पदंनीहिं महाया ∤॥४							
	कवित								
इरि	विमुस								
		देव सो करबी पृका ।							
श्रमस	मंस	सी देड़, देड़ कुकर्मा हुका ॥ १ ।							
श्वापे	म	कुंक कुक्ता हुना ॥ १ । संख्ये देव,							
		देव मरमाद मिटावे ।							
द्या	धर्म	विन । देव्र, देव्र भन् भक्ति न सर्वि॥ २ ।							
रख	মাগৰ্	सी देह,							
देव	<del>इ</del> रे	देद्र गुख अपगुष माने ा- मा नेक							

ही किशनदासजी महाराज की अनुभव गिरा राम २४ <b>।</b>						<b>₹</b> 8¥
	-	ढ़ेढ़	को ढ़ेढ़	ब्य	ाँगे ॥	3 11
पर	दारा	रत	हेढ़,			
		ढेढ़	परगी	को	त्यागै	Ħ
ढ़ेढ़	सोवे		—-रात,			
•		* -	नारी	नहां	नागै।	1811
गुरु		_	हेंद,			
ا <u>-</u> - ا			मत	श्रपगा	था	t į
ें स्वाँग			हेड़, क्ट्रा	ference		
हरि			वन्दगी हेढ		ш	文 机,
	3		* *	_	राव	T . 3
कहा रङ्क कहा राव ः। राम भजन बिन 'किशनदास',						
सव ही ढ़ेढ़ स्वभाव ॥ ६॥						
उत्तमः-						
डतम शील सन्तोष, उत्तम सत सुमिरण साचा।						

भी किशानशासत्ती सहराज की कामुनक गिरा उत्तम कर हक्त नाम, उत्तम अमृत मुख-पाचा ॥१॥ दश्चम राम भाराध, काम दल मञ्जन शूरा।

उत्तम दे पीत दान, उत्तम मर्जाद न मेटे ! उत्तम मही का रुन्द, उत्तमक्षमगत पर मेठै ॥३॥ उत्तम गुरु गम पाय, उत्तम शिप सुमिरण सामा।

उत्तम उत्व वीचार, ज्ञान अव्य रव पूरा ॥२॥

उत्तम दलक्के मेक, उत्तम पूरम पर पाया ॥ ४ ॥ उत्तम इंग्लिय भीत. उत्तम सी निरमल काया ।

डचम नेसा अदीव, उत्तम घट अघटा पाया ॥ 🗴 ॥ ठचन चन्द सम मान, उत्तम है सब से ऊँवा। उत्तम न साम सीत, उत्तम सन ही से सुच्या ॥६॥

उसम एक निज नाम, उसम सब ही की तारे। उचम सङ्ग दे बाङ्ग, बापकी शरक उपारे ॥ ७ ॥

'किनानदास' सब उत्तम है, सभी ग्रह्म के भीव। मिन में भग भी उत्तम है, संख्याद धाराचे पीनााटा।

#### श्रथ राम-रत्ताः--

शिष्य के शीश पर दस्त गुरु देव का,

रमे नव खण्ड सत—शब्द लीयां।
देश—परदेश श्री राज का तेज में,

मडा मशाण से नीहिं बीयां।
दिष्ट मल मुष्ट, छल छिद्र लागे नहीं,

राम रिख्याल, घर गांव बारे।

राम रिछपाल, घर गांव बारे। नाग वेनाग श्रीर नाटकी चेटकी,

विघ्न के सन्त नन नांहीं सारे॥ भूत अरु प्रेत, डाकनी-साकनी.

देख निज सन्त की दूर भागे। राहु अरु केतु वल वीर यत्त अरु योगनी,

सन्त घर गांव यल नहीं लागे। शरण साधार श्राधार एक रामकी, फिरै सन्त दीवार चाहते सर्व चौकियां, चौकियों तीन क्षेप चौबी बह-धा।

ब्रह्म की स्थोतिमें साथ पैठा.

दास 'फिशनों' कई विम्न कुछ वापड़ा.

काला सम और पर्च हार वैठा ॥

ा छीड़ ।।

॥ श्री राम ॥ श्रथ लिव को श्रंग।

नमी राम निर्वाण ब्रह्म, सद्गुरु सब ही सन्त ।

' किशनदांस ' कर जोडि कै,

बन्दन बहुत करन्त ॥ १ ॥

किशनदास श्रन्तर लगी. लिव डोरी इकतार ।

अकड़ी का सा तार क्यूं,

मकड़ी दारज ऊपरै. मोला पढ़े अनेक , ।

' किशनदास ' लिव तार कूं,

खराँडे नहीं बिगार ॥ २॥

विघ्न न न्यापे एक ॥ ३ ॥

चित्र की पूतली,

ठार रही इक ठीर ।

२४० राम मी किशनदासती महारात की बानुतव गिरा
पूं सिव सागी 'किशनदास', निश्चवाशर बारु मीर ॥४॥
निपक्षामी जागी दशा, क्षम मन निरुपन होय।
(जे) हाथ पाँग चरू सुर चले, तो लिच महीं कागी कोण ॥धा
' किशानकास ! जन पारीसा, वन मुन प्यान इकन्त ।
पद्ममा केरा अन्य न्यूँ, विन
बभवचपत ऐसी वधी.

म्प्रे भागम की शब्द ।

वाँच पथी स समिट कै.

भाग परी ब्रह्मवड ॥ ७ ॥

सामी जिप सी 'किशनदास',

रही भलयस्त

राम 💮 बी किश्रानशासको महाराज की बाह्यभव गिए ₹ķo ये सिप सागी 'किशानदास ', निश्वपाशर शक मीर ॥४॥ खिपद्यागी जामी दशा. तम मन मिश्चस होय । (वे) हाम पाँव चल सर पते, तो सिष नहीं सामी कीय ॥४॥ ' किशनदास ' मन पारीखा. उन भून म्यान इकन्त । पत्रवा केरा धन्त ग्रुँ, दिन-दिन कवा मधन्य ॥ई॥ ऐसी वधी. र्वे नावन की दश्हा

वाँच पंची हैं। समिट कें, माय चडी ब्रह्मपद्य ॥ ७ ॥

कामी सिष सो 'किशनदास', रही भ्रत्सवस्त सीय !

<b>राम</b>	भी किशनद्	सिजी महाराज की अनुभव गिरा <b>२</b> ४१					
देह	छूटै	वाचा थके,					
<del>-</del>	•	तोई लिव खण्डित नहीं होय॥८॥					
नगत	गुरु	नगदीश है,					
	•	नहाँ रहै तिव लाय ।					
पग—	-पथ नांह	ीं 'किशनदास',					
		सुरत रहे घर नाय ॥ ६॥					
सुरत निरत मन पवन गहै,							
सन वाचा ग्रह काय ।							
इता	एकठा	'किशनदास'					
-	<b></b>	तो लिव मारग नाय ॥१०॥					
सुरत	ानरत	को गायबी,					
74:00	£ 4	वाणी वहु विध ताल।					
		' किश्नदास १					
ुं द्वान	यां मे	देखे दीन दयाल ॥ ११ ॥ दिल न मिलै,					
<i>'</i> ''		लिव लग रहे कोई सूर।					
i							

१३१ - एम भी फिरान्सासबी महाराज की बातुनव गिरा पाँच पचीसों घेर करि. रहें सुरत को पूर ॥१२॥ सुरत वार में 'किशनवास'. पौर्फ रहे समाय । पट छुटै पिंड ही चके, पळ किन क्ये की स्वीं पाय ॥१३॥ सुरत सावती 'किशनदास,' प्रकटि पूरण माम । त्रेम त्रीव संगेह सीं. रहे राम जिन जाय ॥१४॥ 'किशनदास ' लिय कीर सें. षींचे पाषी सुत ।

गुर ताम से ना भन्धे.

सहम रहे भरतूव ॥१४॥

एक मना बन मुन दशा,

गम विपद्याय ।

( इति तिव का छङ्ग सम्पूर्ण )

```
११४ मी सुस्ररायदासको | सहाराज की चासुनव गाउ
         श्री सुखदाएजी फुन--
           ॥ भा धाम शुरुदेश को भारती ॥
                   चीपाई
श्रारती सुवन्यो सिरवन हारा,
              पत्नकन विसर्क माम तुन्हारा।
          सेवा ॐ कारा.
सगुख
              निरमुख माम सक्स विस्तारा ॥१॥
वेद कियान सुके सन कोई,
```

राम भरया पिन मुक्ति न होई। काया कया पंग पर्याया, गिमन मगडन विच मन यठ छाया॥२॥

शंकर शेप विजया सुस सागर, हैसा दीर चुनै उस झागर। प्र प्रस्ताद सन्त साह,

दास क्यीर माम देव दाद्र ॥ ३॥

सन्तदास जन प्रेम पठाया,
गुरु दरियान शरण सुख आया।
श्रनन्त सन्त नहाँ धरते ध्याना,
नहाँ 'सुखराम' किया दिश्रामा ॥४॥

॥ इति आरती सम्पूर्ण ॥

२४६ भी प्रसंपम्यात्रमी विश्वासक की चतुनव निस् सम विरद्य को श्रद्ध ---भरेका -- निशरिम मीऊँ बाट, पीच घर भाइये। चाहि तुम्हारी मीहिं हरश दिख बाहये। फैसे परिये थीर पीर है पीय की ।

इरि हाँ ! विन वरशन भुस्त राम कैसी नवजीन की a १ a दक्षणत रेख विद्याय, विवश माग वश्वणता । पीव गई सम भागु विरक्ष्मी कलपर्या ।

वया म आये वीय स्वतः नहीं लेख है । हरि हों। ये निरहन सत्वराम सन्देशी देत है ॥ १॥ कामी हया विभार सतीना स्यामधी।

भागा ही सुल होय सरे सब कामशी। चेरी अपकी मान बरश पिय दीनिये। हरि हो ! साथ कहै सुलराम विजय गहीं की जिय ॥३॥

राग रंग रूपि गाँहि पात नहीं स्वावहीं।

पाप्रक रहे रिश पार, रीव कव आवही।

दीजै दरश दयाल पीव मन—भावणा ।
हिर हाँ ! तलफत है सुखराम राम घर आवणा ॥४॥
जिस दिन विछड़े पीव, नहीं जख मोहिजी ।
दूसैर निश दिन जाय, दया नहीं तीयजी ।
अब तो आव दयाल अनाथां नाथजी ।
हिर हाँ शरणागत! सुखराम गही पिव हाथजी॥४॥

## अथ विचार निशानीः— इन्द गगर

सतगुरु शब्द सुरंग अन लागी, सुमरण सोर निछाया है।। सिलग्या सोर नलीडे लागा,

सिलम्या सीर बलीडे लागा, अम कर्म जलाया है। सत गुरु कह्या सार मत हारे.

सुणरे ज्ञान गॅवारा

सतगुरु कहे रोम भन रमता,

मी सुन्यरामगानामी _{तहरास} की बारुवर गिर राम - Aleman सो पद्रसी पी नारा है॥रै॥ रसना राम सुमर पर पूरा, हर्य होत तमारा है। सीवर कमा सम्पूर्ण पनरा, माम क्यस विस्तारा है। पीयत प्रेम प्रायः अतः खकिया. पर वश पहचा विचारा ! याका मर्न कही कुछ कारो, अमली व्यॉ आभारा है।।२॥ कामी के मन काम वसत है,

न्यू नन राम इमारा है। कीमी के मन क्योग वसद है.

् परम्बंधा पीव परम श्रुल दाता.

भूले मोजन प्यारा है। शरके सन्त सबस के आये. भव दर नहीं जनाय है। श्री सुखरामदासजा ्महागज की श्रातुमव गिरा राम नाको वार न पारा है॥३॥ कंचन काट कबू नहीं लागे, सतगुरु मिल्या सुनारा है। राम राम की रस चली अब, मन मेरा बिणनांरा है। ्गगम मगडल में रस्त खुली जहाँ, **अमृत भरे अपारा है।** सतगुरु शब्द लगी अब कूंची, ् खुल गया दश्च दवारा है ॥४॥ रंक एक रस बोले, राजा ऐसा काम करारा है ? प्रगट प्राण रमे सुख सागर, अनहद घुरे नगारा है। गगन मण्डल में वाजा वाजे, लग्या शब्द मगाकारा है। विच भया ज्य दर्जाता

<b>(</b> ¶0	राम	भी सुकार	ामदास	भी भिद्या	यव भी भ	मनुम	व्यागि	PCI
			वेसेव	<b>प्</b> रत्य	दारा	ŧ	ИX	11.
पर्दूषा	सम्ब	कोई	गुर तीन,	पूरा, जोक	से न्या	रा	1	ı
शशी क	क सुर	मर्थ ह	वेष स्पॉ	ऊपा, कोई दि	)मरन स	गरा	意	ı
ीया	भ्युना	मिच	ी ्स तीनू	रस्वती, <b>वद</b>	इक्षांर	ſ	ŧ	۱

भौ स्माम किया मन मेर, मिट्यामा मैल इमारा है॥६॥

गठः गमन में द्वी, झमुच खारे जन्मा जनारा है।

दूध महारस मासचा,

पीव पीमन शारा है।

क्षेत्र विम वैव भींग विन घेगल,

निम विच प्राया हमारा है।

ज्याँ 'सुखराम' कहत है सेवा,

सनमुख सिरजन हारा है ॥ ७॥

॥ इति ।

```
राप्त भी बहुरहासशी महाराज की भत्नभव गिरा
श्रय चतुरदासजी महाराज की संचिष्ठ गुरु महिमा
सतगुरु सन दरियाम पर,
               थार्ड--नर---मन प्राय ।
पवित भीव पोषम किया.
               ब्राह् कापसा गाँख ॥१॥
भारू
        भापसा भाग,
```

माख मो**दि दरश**खे सीया। शासक के मुख गांदि,

उस्ता निश्चरी का दिया ॥२॥

छोटा यही चीन.

किसी निम पाई जाये।

मोली रीव-भीण, प्रसे

वाको रस मानै ॥ १ ए

विभि रीत कैसे गरी.

गरी_प्रेम प्रीति

The same of the sa श्री पर्रातासजी महाराज की अनुमव गिरा पम २६३ सकता स्म साँइ के सारे, ईको किसो विचार ॥ ४ ॥ ईको किसो विचार, भार सव उनकी छाने। वै उत्तरा विड्द विचार, श्रीर सन सुल्टा लाने ॥ प्र॥ साचा शिष्य दरियाव का, सब सुण लीव्यो कान। कहूँ महिमा गुरु देव की, मेरा [मुख उनम|न ॥ ६॥ सोही नन साचा जागे, सत गुरु का शिष ।होय । दूजी दूविधा वही जागी, राग द्वेष दे धोय ॥७॥ र्मुण महिमा गुरु देव की, दूजे सोय दाजव

राम के प्रशासकी बहातक की बातुक्व विध 258 सन्द्रस स्त्राम स् ųп संचा संज्ञा दान ॥ दान मरा पर्वे स्वरे सव **रास अल के पाम अ** ्नरास हक काश क्रनस की, तुक दरवा क दरशा । क्षा दात इकरेगा पाया पता पूरन गहा ५१ म ८ ८ ना सूत्र वरवा, १६६ वाता तित्र परम । कर दाम करन रहका दिवा पान, गुर १

# दरिया में इमरत रस पीवै, दरिया मांहि सभाखो॥११॥

(इति संक्षिप्त—चत्रदासजो महाराज की गुरू महिमा)

भी हरकाराम भी नहाराण की भवनव गिरा ॥ भारती ॥

चीपाई

पेसी भारती राम तुम्हारी,

घुन विच शहर सुध वानारा,

चन्द सरम एकक पर क्षात्रे,

पिंगना राम उपारे.

मिल मिल व्योति प्रश्न की जामी.

चरक शरक में सरत इमारी ॥१॥

द्वान भ्यान का माजा वाजी,

सुसमया सेमा पीन पपारै ॥४४

नुरा मरख अमका में भागी ॥

सुरत भना**र**द भन्नर माने ॥२॥

गृह में साम रक्षा कनकारा॥३

त्रिकुत्री मोही त्रहा विराम ॥४॥

नन 'हरका', गुरुदेन वताया,

देव निरज्जन देह में बताया ॥७॥

॥ इति ॥

राम की कार्यामध्या मिहाराम की भागना गाँउ २६≔ यय करुणा का शङ्ग । करूया में मन पाइये. पार ब्रह्म की मीज । में सुख क्यूजे. करुखा हरि इस्य में सीम ॥ १॥ फरुका में मन मेट सी. अग्रत पथ की पाल । पेसी चीज है, करुखा जन की कर निहास ॥२॥ फल्या मिलन सुदाय का, करुखा भाप मनाइ । राम रिहिम दिख. करुण

मानों साथ सबाह ॥ ३ ॥

बुरमत में परमत घटे. करुया में पर भाप

भी हरकारामंत्री महाराज की भावभव गाय राय थय करुणा का भङ्ग । कड्डा में मन पार्थ. पार बद्धा की मीज । में सुख ऊपने, कड्या इट इस्य में सीम ॥ १॥ करुया में मन मेट सी, मगत पथ की भास । करुया ऐसी पीत्र है. जम की करे निहास ॥२॥ करुया मिलन सुराय का,

करुणा आप अलाह ।

राम रहिम दिल,

मानी साथ सबाद ॥३॥

बुरमव में परमव घटे. करुया में घर राम भी दरकार कि महाराज की अनुभविषय २६६ में मन दीजिये, करुणा जिपए हरिको जाप ॥ ४॥ से संकट मिटै. करुणा में करुणा श्रानन्द । करुणा में सद्गुरु सदा, काटे जम का फन्द्र ॥ ४॥ से साहब भजे, करुणा करुणा त्रातम ऋङ्ग प्रीति करुणा प्राण में. कबहुँ न होय चित भग॥६॥ में विरहन लहै, करुगा करुणा पावै प्रेम में सोजी सदा, करुणा करुणा नेहचल नेम ॥ ७॥ में सब मल कटै, करुग करुणा दे दिल

२७० रा सी दरकीयें की । महाराज की बातुमन गिरा करुता में मरणा भरे. मरुखा निरमस सीय ॥ ८॥ करुका शीप न दीशिये. करुशा मोटी बाव । मरुका प्रसा विद्वाप में, रहता है दिन रोत ॥ ६॥ करुया संगम सील है करुका है वप दाम । करुया मारव मुक्ति की. करुणा केवल द्वाम ॥ १०॥ करुखा नीजिये. पेसी मार्गे निएम माम । टुमी करुका हुए सी. जासी भन के मार्गा ११॥ 🗹

करुया से मन यूं समै,

र्ष धो हरकाराम जी जि की अनुभव गिरा राम करुणा जीव प्रकाश पलटे पँच तत, करुणा करुणा-तृगुण नाश ॥ १२ ॥ से अनस्थ प्रनस्थ तजै, ज्ञ करुणा कर्म नशाय । तजे, कर्णा में कृपा हुवै, करुगा करुणा राम मिलाय ॥ १३॥ में चेतन हुवै, - करुणा देह पलटे करुणा ना घट रंचरे, करुणा भागा भरम सनेह ॥ १४ ॥ करुणा है निज भक्त मे, कोय । करुगा अवरन ्र करूणा कीजै राम सूं, जिव का कारज होय ॥ १४ ॥ करुणा की जिये, त्तनमें

स्थर में डरकामा भी महाराज की बातुमन गिरा धन बीमै शरको सोपि । मरुया में चित वीशिये, बादी के मन मीर 11 रहें 14 करका प्यारी पीत कूँ, करुया कर निचार करुषा देख निवास सी. रेक्प्यार महा मरतार ॥ १७॥ नाहर करूका सन करे, भीतर करूका गाँडि । भीवर कड़का नी कर. सो मिजसी होर मोहिं ॥१८॥ राम भने करुणा करै. सी करका है मूस । राम मंत्री कड़का करे. विनकी मिटे म ग्रुव ॥१६॥ करुमा कठिन मिटाय है.

धी हरकाराम जी । महाराज की अनुभव गिरा २७३ करदे कामल दास करुगा विध्न न संचरे, करुणा काटे पास ॥ २०॥ करुगा से भगवत भये, से 🔢 अवतार करुगा करुणा से यूं **अघरे**, हरि—दीदार ॥ २१॥ पाया करुणा से प्रवहोद्जी. परतक रह्या सथीर से नामा लिभे, करुणा करुणा दास कवीर ॥ २२ ॥ से करुणा विरे, दादू रैदास से करुणा से दरियावजी, करुणा किया ब्रह्म में बास ॥२३।७ अब मुक्त करुणा दीजिये,

२०४ रामें भी बार्क्सम् की भारतंत्र की बागुरू राम स्रण जो दीन दयाव । से करुसा इर को कहै. मेटयो भरम जनाख ॥ २४॥ करुणा ससार की. सग इत्यु की कुठी थाल । इरि करुणा हरको कहे. काट जन की लाख ॥२५॥ दरि करुषा से इरि मिले, जग करूणा में जीप । , -कह इरकी इनकी मिले. राम पियारा पीच ॥ २६॥

अथ छन्द पचीसी सार (?)

महल अनेक, गढ़---मढ जिला घर बाजा बाजे। सव दुनिया पर हुकम, विराज ॥

सिर फिरै, 🌣 चवर--छतर

करे कीरत नग सारा। श्रपार,

—मुल्क मायाः द्रव्य बहु भरे ""भग्डारा॥ —बड़ भूप,

नरां नर शीश निवावे।

बहुत इदकार,

ग्रनन्त ग्रानीज्यां गावै ॥ खर्व दल जोड़ कर,

ऋर्व

२७६ मी बर्कसम्ब मी व्यापान की व्यापान विशा (राम							
पख	सोच वि	बहुता करें इसाम । क्षेत्रार कडें, युं इरको (बीई) रामविना वेकाम १					
		(२)					
कैचन	बरकी						
		स्वकृप द्युन्दर पुल सोहे।					
उत्तम	কুল শ						
		देख सब ही मन मोहे॥					
ऋंस	पीपांस्ना	प्रूर,					
सान-	—-पास स	नाम-नायत सामि । इराम					
रीरा	al <b>a</b> .	सबन सिर मीर विरामि ॥ जबाहर,					
		कान कुपडम यव मोवी					
पना	पेष	। सीहत,					

₹₩≒	सम भी।	रक्माम जी	हराज भी चतुनद गिरा
		भगत सुख	सबही पाने ॥
ज्स	र्विक्षास ऐ	सी <b>क्</b> यमीं, स्वर्गादिक	विद्यासर ।
पय	सोच विचा	र कहें गू,	
			विना वेकान ॥
		(8)	
नार्वै।			रतन बमाने ।
धर		संगर,	रावयः छावै ॥
काम	षेतु 🤻	स्न वृश्व, पौज पारत	ाका झरै।
मञ	पेरावत	राण,	· .
		इन्दर स्पू	सोमा सारै ।

इरक अफसरा अभव नार,

श्री हर	काराम	्र जो ^{गह}	्रे.  राज की अनु	भव गिरा	• राम	। २७	3
		744	नाना	विधि	वं ग	ावै ।	
गंधर्व		गुग	विस्तार,				
			सुनत	सवही	सुख	पावै ।	Įŧ.
सुख	f	वेशेप	केलाश ।	सम,			
			पुन:	वैकुगर	ां धा	4 I	
पगा	सो	च ि	विचार कहै	यूं,			
			हरको	राम	विना	वेकाम	H
			( '	r ) "		-35	
हा	यां	पर्वत	वोत्त,				
				नत	सव र	भर पीवै	þ
羽	नन्त	जोधा	वलवन्त				
			बहुत	दिन	नग् व	में नीवे	Ħ
शू	र	वीर	सामन्त	•			
<i>}</i>			सिंह	ज्यूं	गहरा	गाँन	Ib
Ų	क	ন্ত্র	,ह्वे	राज,			

हि सहाराज की कसुनक मिरा ₹८० स्वम की शोमा छूजि। के बीच. नाय्स दस शीर नर पहल न पाद्या। सोष नसार, सार नियोजे मनसा बाषा " " । **दीर पुरुप रहा** में खड़ि, करे युद्ध संग्राम । सीन विचार करे. मन इरको⁰ राम विना वेकाम ॥ ( & ) उत्तम से उत्तम. उत्तम र्रंग से ऊंच भाषार, विधि नाना भारका सभी निभावे ॥

स्माम,

प्रात

```
, भी दरहाराम सी दिएश ही बाहुनव गिप
     शम
              द्वार बन्या परसावे 🗈 🗵
              सुमेरु.
       मंक
कस
              दाम कर मुक्ति विचारै।
मीमू दान मिछाप्त,

    विधि वत् निधन निवारे॥

कामधेन मणि-नान,
              पुषव पुनि करे सदाई ।
           बाल युप्त,
बिन्ता मिख
              दान रीग्टी इपकारे ।
     पर्म विभियुत करे.
भीर
```

निव उठ यही काम ॥

सीच विचार कहै.

युं इरली राम विना वेकाम ॥

(5)

नुगत निपार.

मोमी

धी हरकाराम जी महाराज की अनुभव गिरा राम २५३						
		पहर	वाघम्बर	डीले ।		
घर	श्रासन	श्रवधूत बोल	, धीमे स्वर	बोर्ले ।		
वस्ती	वसे	न ^र नगत	गस, की धर्	न भौति ।		
त्रादू	गढ़	_	नार्र, ैं जंगल [ि] में	वासा ॥		
मूल	द्वार	•	चाप, मस्तक र	में लावे।		
भ्र _व	मएडल	' जग योग	देह, अष्टाङ्ग	्मांवै ।		
धोला	केश		संचरे, केश स्टि	ार स्याम _{ा।}		
े विख	सोच	विचार यूं ह	कहै, रखो राम वि	वेना वेकाम ॥		

ti

रकाराम भी बाराज की कानुभव गिय ( E) मारी म्यु गिर मेट घरका बयुं धीरम ठाये। सानर निसा समाप, बाव बुद्ध, बुद्ध की माखै। ता वेन. सुरम व्यं चन्द अपूसम सीवन काया। निरमक्षता मिमि नीर.

गुद्ध साड़ा में नरक, दर्क सन शास्त्र निमारे∤

जत सत मत प्रनीयः, सदा नर सुमता धारे॥

सदा नर सुमता धारे।। मन प्रत्यन्त्र सद बस किया,

पैसी पुरुष अप्रमान । ु पिका सीच विचार कडी थे.

<b>२</b> ⊏६		र्काराम जी	ी महाय	ी महाराज को चतुमब गिरा				
			महीं					
पिता	स्रोध	विवार	wit					

(11) पक

र्थु इरकी राम विनावकाम ॥

्रदेह के एकल्ल, ्रंप्क पर संग पतावे । रहे धर माहि,

एक बन की उठ भावे।

**जीवत तन मंद्रै.** पक एक भासन बहु सानि।

सेवे शाकार. एक एक वैतीस भारापे ।

पदे गिरीमेरू.

कहे सत्तवेख. पक

एक एक पाताकां धुने ।

भी हरकाराम <u>जी</u> सहाराज की श्रतुमंत्र गिरो ं राम २८७ आगम की एक एक गुटका संग लै उडै. बडे सिद्ध जी नाम । विचार कहै, सोच पिगा यूँ हर् की रामु विना वेकाम ( १२ ) नाम तत सार, राम सर्व ग्रन्थन में पिछाण, सन्त अनन्त राम ही राम सरायो॥ पुराख उपनिषद्, वेद कह्यों गीवा में श्रोही। विष्गुा महेश, ब्रह्मा, राम नित ध्यावै सोही ॥ प्रह्लाद क्री भ्र कबीर, नामदे श्रादि प्रमागी

रक्त 	यम ~	न्य करकाराम	महर्ग	त्र की बॉसुमन गिरा
सनक	दिक	गारह,		
		शेप	गोगेषर	सारा भाषी॥
सो	सद्गुक	प्रवाप	₫,	
স্প	इरका	िक्स्यो विहुँ स	ं ग्राव बोक में,	1—विस्तार ।
		राम	मास	वस्सार ॥

## श्री नानगदासजी कृत-।। श्री राम सद्गुरूदेवजी की ञ्रारती ।।

चौपाई

करमनं श्रारती राम निवाजै, गगन भएडल में धुन अनहद वाने ॥१॥

्त्रथम पूज गुरां का पीया,

दीन दयाल दया कर आया ॥२॥ रसना भजन हृद्यहरि वासा,

नाभि कँवल निज नाद प्रकाशा ॥३॥ पुहुप भाव की पूजा,

त्रजल निरंजन श्रीर न[ं]टूजा ॥४॥

- हेड़ा, पिगला, सुपमन मेला, पांचू पुरुष त्रिकुटी मेला

## श्रथ श्री नानकदासजी महाराजकीगुरुमहिमा । साखी---

नमी नमी गुरुदेवजी, नमी नमी श्री राम। जन 'नानग' की वीनती, चरण कँवल विश्राम ॥

छन्द-

गुरु दरियाव सही गुरु देव हमारा। राम-राम सुमिराय पतित को पार उतारा॥ राम नाम सुमिरण दिया,

दिया भगत हरि भाव। श्राठ प्रहर विसरो मती. यूं कह गुरु दरियाव ॥१॥

चौपाई

किशनदास का कारच सारया।

248					मनुभव गिर	
	-	Δ.	शब्द	पार	<b>ढ</b> वास्चा	ı

सुस्री रामकी साची सेना. दरत्या माही निर्देशन देशा # १ म वन प्रस्थ सत प्ररा ज्याया.

राम राम का ब्रह्म समाया। इर्गरसी का डर सन मेटचा.

राम राम कहि साहित मेटचा ॥२॥

दोहा

शिष्य सारा मुनिरण करै, सुमिरे ब्रह्म अगाभ

लोक महिमा (पर्शा, घन्य साहित का साम ॥१॥ का निरमता.

भित्र उर्खा सुद्धि युद्धि सकत शरीर । 🔾 मन मानक के सिर वी.

भीनानगटासजी महाराज की अनुभव गिरा राम दरिया दास कवीर ॥२॥ दरिया दास कवीर है, तेज प्रकाश । व्रह्म प्रहरपुर नामो वसे, कवीर काशी वास ॥३॥ जन दादू आमेरपुर, राहरण दरिया दास । ् रहण नगर काशी पुरी, नहँ सतगुरुनी का वास ॥४॥ श्रानन्द दयालजी. रूप सद्गुरु दरिया साह नर क्यू चूके नानगा, राम भजन की राह॥४॥ चौपाई गुरु विन ज्ञान ध्यान नहीं होई,

९६४ भी मानगशासकी महाराज्य की व्यक्तनव गिरा यम गुरु विज पार न पहुँचे की हैं। गुरु विज मकि मुक्ति नहीं पांचे,

गुरु विन श्रीव अमित में नाने ॥१॥ गुरु विन भरम परत नहीं छुटा,

गुरु विन कानदेव पन सूटा ।। गुरु विन नाम नहीं प्रकाशे,

गुरु बिन मिक प्रीवि नहीं मापे ॥२॥ गुरु बिन झान ऊपन नाहीं,

गुरु विन झान प्रकासे मोदी ॥२४॥ ।। दोद्या ॥

।। दाह्य ।

वन मन अपरपण करते हैं, भरण कमल की भाश।

मन नामक के सिर वर्ष,

राता दरिया दास ॥ ॥ ॥

## ॥ चोपाई ॥

(मनरे)! सतगुरु आगा वताया गेला,
उघड़चा अंक पुरवला पहला ॥१॥
राम नाम सत सुमिरन लागा,
मन का भरम दूर तव भागा॥२॥

सिमरो राम निरंजन राया,
परम पुरुष गुरु देव वताया ॥३॥

राम नाम सत सुमिरन जाने, मन पवना घर एके आने ॥४,३ परशन प्रेम पियाला पीवे,

राम राम भन साधू जीवे ॥४॥ चरण गुरा का निश्वदिन परसै,

राम नाम सत सुमिरन दरशै ॥ ६॥ सदगुरु शन्द साच कर भाले,

सदगुरु शन्द साच कर भाल, सहज सहज मन मारग चाल ॥७॥

२६६ भी मानग्वासजी सहाराज की अनुसव गिर्ग राम ॥ दोहा ॥

राम भाग सुमिरन करै, राम मिश्चन की चाय ।

मानग गुरुदेव की, मन

।) चौपाई ॥ मरन रोग है मोटा, अनम

गृह विन शान कहां से सुनै,

सत गुरु निना झान सन स्तोटा ॥१॥

गुरु विन भरम्या पाचर पूर्व ॥२॥

गुरु दिन भीव आगत अभिकारी, गुरु विन मकि मिले म प्यारी ॥३॥

गुरु जिन सीय अगति मैं सामे ॥४॥

गुरु दिन पारब्रह्म कीन पाने,

निश दिन शीश मनाय ॥७॥

श्री नानगदासजी महाराज की अनुभव गिरा २६७ सम गुरु बिन वेद शासतर बाँचे, गुरु विन पंडित क्रूठ अराँचे ॥४॥ गुरु विन तीरथ व्रत फिर आवे, गुरु विन ठीक ठौड़ नहीं पानै ॥६॥ गुरु विन होम यज्ञ वहु थापै, गुरु विन किया कर्म कुण काँपै ॥७॥ ंगुरु विन भरम्या, भरम हदावै, गुरु विन ध्यान सभी विसरावै ॥८॥ गुरु विन ज्ञान हीन ज्यूँ वोले, गुरु विन दसों द्वार कीन खोले ॥ ६॥ गुरु बिन साध सिद्ध नहीं होई, गुरु बिन कीमत लखे न कोई॥१०॥ गुरु विन क्या गृहस्थ, क्या त्यागी, गुरु विन लाय घरो घर लागी ॥११॥ गुरु बिन ध्यान जुगत कुण मार्गे,

रध्य राम श्री मामग्यासती सहाराज की भारत्वर निर गुरु विन हाम कहीं तो शासी ॥१२ गुरु विन सिद्धि कहीं से आदि, गुरु विन पार कींम पहुँचिन ॥१३। गुरु विन मटक मेप बहु घारे, गुरु विन पार कींन बढारे॥१४॥

मुठ बिन जीव वहाँ से मागे, गुठ बिन सत सुमिरख कुच स्नागे ॥१४। गुठ बिन पारमझ कुछ पेसे, गुठ बिन बेहर कैसे वसे ॥१६॥

गुरु विन वेहर कैसी वसी ॥१६॥ | गुरु विन पाँच तस्य कुछ गावे, गुरु विन त्रिकृटी कीन समावे॥१७॥

गुरु चिन प्रकृता कान समावे ॥१७। गुरु चिन कृषा निम नाद वनावे, गुरु चिन क्यान वेश करता क्यांवे ॥१८॥

गुरु बिन भागम येश कुरा भाने ॥१८॥ गुरु बिन झान उपने नाहीं, गुरु से झान प्रकारी मोहीं ॥१६॥

## दोहा

गुरु महिमा नाँनग कहै, पारत्रहा की दास। श्राठ पहर निरंजन रता, एक ब्रह्म की श्राश ॥८॥ दरिया पन्थी आइया, राम नाम सिरं तास । गुरु मुख साच सम्हालिया, यू कहैं नानकदास ॥६॥

॥ इति गुरु महिमा का छाह्न सम्पूर्ण ॥

एम भी नेमसी महाराज की चम्रुश्व गिरा श्रय टेम जी महाराज फूत—

श्री सद्गुरुदेवजी की शारती नमी नमी मुरु देव की, सद्गुरु सबही सन्त ।

वन देमदास मन्दन करै, नमी निरंगन कर्य ॥१॥ ब्रारित राम मुरी की की नै प्ररति क्षमाय दरश सुख जीनै ॥ २ ॥

सद्युद्ध शन्द दिया कल सारा वार्वे छटा जनव पसारा ॥ २ ॥

मिट गया भरम भरा ढिनियासा । सदम भी सूक्या मुक्तिका वासा ॥३३४

बार पार से भूरता सामी। दिजकी काई सबदी गागी॥ ।।।।

हरप मार्डी ब्रह्मका बाशा,

कोटिमानू का समा प्रकाशा ॥४॥

राम

सेनक स्वामी एकहु होई। 'टेम' न दरशे दूजा कोई॥ ६॥

l इति ॥

६०२ राम भी कार्या वाईजी महाराज की कतुमक गिरा ध्यय ध्यमाँ वाईजी छत श्री सट्गुरु महिमा। साखी---ममी-नमी परमतिमा. नमा अलस अमेर नमी-नमी सब सन्त की, नमी---ममी गुरु देव ॥ १ ॥ गुरु देव की. नमो-नमो नमी शिखीकी नाम । भगां कर भन्दना, कर मोड़ नमाऊँ माच ५२॥ नमी नमी भगदीश की. सक्त सुभारन काम । अपना प्रवास मन कर, निश—दिन सुमिक्कै राम ॥३॥ ﴿ मुक्त पार्ष गुक्त परमधन,

श्री श्रमां वाईजी महाराज की श्रनुभव गिरा राम ३०३
गुरु हीरां की खान। गुरु चिन्तामणि रतन है,
गुरु—-कल्प वृत्त समान ॥४॥ गुरु समुद्र गरु नाव है.
गुरु समुद्र गुरु नाव है, गुरु ही खेवन हार ।
करम तणाँ वहु भार तें,
गुरु उतारे पार ॥ ४ ॥ सद्गुरु का गुण अनन्त [्] है,
कहा लग कहिया जाय। मेरा तन की मोचड़ी,
करूँ गुरां के पाय ॥ ६॥ कंचन मेरु सुमेरु गुरु,
गुरु सम दूजा नांय।
तीन लोक के मांय ॥७॥
मुख छोटा महिमा घर्गी,

कह्या न आयं पार ! अमाँ ह्रवत कादिया, जनत मोह की घार ॥ □ | दिर्पा मन इरियान है, टेम समुद्र में सीप ! मीती निषने सीप में, नाम अस्वयहत दीप ॥ E॥ दरिया मान सरोवर,

२०४ भी धर्मा वादेजी मधागुक की कालुसव मिन गुम

टेस घु हैसा आगा । राम नाम भीती चुगे, श्रीर श्रहारन स्थान ॥ १०॥ टेम रतन की पारसा, सीगरी अन दरियाद । यह तो रतन अभील है, जीना श्रीसे साथ ॥ ११॥ १

द्वेम था सोसर्गा,

टेम

२०४ भी चर्ना बाईजी सवाराज की चतुमव रिगा । राम					
भगाँ	ह्रवत	कद्वा न आवे पार। कादिया,			
दरिया	मम	श्वमत मीह की घार शादा। इरियाय है,			
मोवी	निपने	टेम सर्गुद्र में सीप । सीप में,			
दरिया	मान	नाम असरदत दीप ॥१॥ सरीवर,			
राम	नाम मो	टेम सु ६सा मान । वि चुगे,			
टेम र	दन की	भीर भहारन साम ॥ १०॥ पारसा,			
गर वी	रतन	कीन्ही जन दरियाय । अभोज है,			
टेम :	देन था	षीमा मूंगे भाव ॥ ११॥ सोसर्वा			

देन या सोलगा,

(म	नी अमा	गाईसी	ৰ্ক। <b>অ</b> নু	भव गिर	:
	दीरप	थ(	इ(म	देम	ł
सीहा	परश	कर,			
	सनदी	दीयना	देम	11 👯	<b>ξ</b> 1
मेरे					
			गुरु	देव	l
स्राना		*	<b>6-3</b>		Dam:
			ाष्या	44 (14	G
<b>4</b> .4	~		क्रो	æÐ.⇒	,
ने गुल			ना	717	'
4			नेग पी	7 77 7	=
का इ	्य परा	₩Ž,	1		
	नदार	म्र	अपि	भग्त	1
ब्रोक	दीसे	नहीं,			
	मीदा मेरे जाना रूप से मुल	दीरम संबंधि परश संबंधि मेरे शीश पूरव ज्ञाना शीव राम क्रम गुरु वे सम्बंध हो शुल में हि राम का गुण फर्टा क्रमा	दीरम या सीहा परश कर, सबही हीयना मेरे शीश का, मूरत है खाना शीव की, राम नाम कप गुरु देवनी, सबह कप ले जुल में दियो, राम माम है का गुरु फड़ी कहूँ, कखा म	दीरम था मन सोहा परश कर, सबही होयना दैन मेरे शीश का, मूरत दें ग्रुठ खाना जीव को, राम गाम दियो क्रुप गुढ देवनी, सबद्ध क्रुप मो जे जुल में दियो, राम माम निज पी का ग्रुख महा कहूं,	सीदा परश कर, सबदी दीयना देन ॥ १ मेरे शीश का, भूरत दें गुरु देव जाना शीव की, राम नाम दियों मेन ॥ १ इस गुरु देवनी, सबद इस की बीव ते शुस में दियों, राम नाम निज पीन भ १ का गुरु कहा कहूँ, कार्या म अपने अमन

गर्वे आक पर,

टेम सरीखा का सन्व ॥१६

पलटे ग्रंग स्वभाव आमकी. पदवी श्रभाँ दी टेम और दरियाव ॥२०॥ मति हीन थी. मुरख नहीं समभ जब लेशां। पूरा मिला टेमजी, गुरु दियो भक्ति उपदेश ॥२१॥ रीति में गरक थी. रान नहीं दास की रीत । पर उपकारी गुरु मिल्या। कीन्ही साची प्रीत ॥२२॥ गुरां के द्रश की. वितहारी नाय सद्गुरु टेमजी, साचा राखी चरण लगाय 117311 जन ' अभां ' की वीनती,

भी कामी गाईसी की कनुभव गिरां kto सम ।) श्रारती ।। १३ चीपाई ॥

इस विधि देव की कारती कीनी। तन मन करण चरा चित रिजी ॥ टेर मन माला सेवा सठ गुरु की।

कीन्डा तपत मिटे सन तन की॥ १॥ द्युप कर भ्यान, मन कर भ्रंगारा।

चित का चन्दन, तिश्रक गं**मीरा**॥२॥ वास मींद. क्षेपे-गढ़-पैका ॥ ३ ॥

माजर-मुरत शस्य-कर-दंका। मुपमन-सीर शैली--दक स्राप्ति । हाम की—पगटा गमन में वाक nyn र्व<del>ाच कर वाती पुष्प ब</del>ढ़ाऊ। हास 'झर्मा' मिख इरि गुक गार्क ॥४॥ ॥ प्रवि-न्यारवी-सम्बद्ध ॥

## पद (मंगल)

सुगाइयो सिरजन हार, दीन होय **E** कहत निधान. पूरन व्रह्म शरगा में रहत हूं ॥१॥ पाली-पोखो आप, तुम मात वात राखो-हाथ, मस्तक जी ॥२॥ निरंजन नाथ विरद तुम्हारी आद. आपने । 충 लज्या छोहू होय कपूत, 끃 बापने ॥ शरम निरत मन ल्याय.

धुन

१८८ राम भी खताँ वादैजी की खतुसक िरा	
धुर्णो मन्त गुरुदेव । शरऐष रास्त्रो भाषकें,	
^{करुः} चरस की सेव ॥२४ कन 'क्रमां' गुरु देय का,	ţ
रति शैसी—-प्रकाश । भरम अर्घेरा श्रीव का,	
किया विसिरका नाहा॥२४। अन कियां गुरु देयनी,	1
रिव जिसी परकाश । कियो डजास्रो द्वान को,	-
भायो सन निशास ॥२६॥ सन 'मर्सा' गुरु देवशी,	
शशि वर्षो शीतल दीय । अमृत असदिदत मृत् रहा,	
विश्वदारी ग्रह सीय ॥ २७ ॥ वन 'समीं' गुरुवेननी,	1

देश्<u>व राम</u> भी कार्मा गाउँकी की कारानव गिरो ॥ भारती ॥

ए चौपाई ॥ इस विधि देव की क्यारती कीनी।

वन मन भारप घरण चित रिमो॥ टेर मन माला सेवा सत गुरु की।

कीन्हा तपत मिटै सक तन की॥१॥ घूप कर घ्यान, मन कर अंतारा है

चित का चन्दन, विश्वक गंगीरा॥२॥

माबर-मुरत शब्द-कर-दंका। बाब नींद, कंधे-गढ-धैका ॥ ३॥

सुपमन-सीर शैली-वक छात्र।

हान की-पदटा गगन में पान गरश

पाँच कर वासी पुष्प चढ़ाऊ।

दास 'बर्मा' मिस इरि <u>मु</u>ग्ग नाऊ ४४॥ 🗸 ॥ इकि-बारखे-सम्पूर्ण ॥

<b>३१</b> २	नी कार	ो गरैको की	भद्रभव गिरा	स्म
श्वास	उरगसो	<b>(₫)</b> ₹	ाम,	
		शसयह	विष	साइये ।
माहूँ	ाहर	मसग्द,		
		भनो	एक राग	न की।
मन	का सर्	ोरष रा	ч,	
		_	संच च	तम जी॥
्करो	निरद	की शार	9	
\$		वेर	कहें र	सम्बनी।
वनसो	मेरा	स्त्रुव	,	
			अपराध	भी ॥
इया	करी	दयान		
		महर	मुफ	कपरे ।
भन	'शमी'	मभो, र	ाम,	
		मनोर्य	स व	सरे 🛭
गम	शास	की ४	गर,	
		मार	गह	सीवने ।

११४ मी चर्ना वाईसी की बातुभव ि	गेरा सम
मुख सन्ता की सीख,	
मजन कर ज़ुरा पहुँची द्या <i>य,</i>	जोग है।।४॥
नीर नैना	मरे।
या तन की नर ध्राशः, क्यर्तुं नही पर	हरे ल्हा
सन्त कही सममाय,	
हान इत्य मन 'झर्मां' मल राम,	भरो ।
बुर्मेती परि	दरों ॥७॥

# अथ शिष्य संम्प्रदायः-

श्री श्री वार—वार, एक सी रु श्राठ वार।

प्रगट रेग भये, सन्त दरियाव जी ॥ १ ॥

स्रम प्रकाश भयो, किरगाँ श्राभापथयो।

वहत्तर (७२) शिष्य भये, प्रत्यत्त निज भावजी ॥२॥

जाँके श्रव नाम गांव, प्रकट वताऊं ठाम।

भिन्न—भिन्न यांके सब, जानत ज नामजी ॥३॥

चार ही वर्ग में, भक्त भय हरगा में।

काज सब करगा में, निर्भय नामजी ॥ ४॥

### नामावली:-विजैराम नेमीराम.

तीसरे जैचन्द राम । श्री चन्द, लिखमेस,

पन: हरसा । राम है

484	भी थानां वा <b>ई</b> जी	ही बातुभय वि	ोग यम
मसोभी,	सुशालीरा	म,	
,	<b>उरमन</b>		राम ।
इस ये	गुरु—माई		
		की धाम	है ॥१॥
टॉकवा	में कृष्ण	देव.	
		सिखीद	मये ।
देश दास	मृंद्रपा	ਜੋ,	
	ू रोम	न् श्रसीराम	<b>1</b>
सुसराम	फर्चराम,		
9	में हते	मशहूर	नाम ।
सन्वीप,	स्पद्धपराम,	•	
•	,	के गाव	र्हे ११९०
मगग्राय	मपे जन,		
	सेशी		गिरहार । ²
दीरपाणे	साल पन्स्,		414.1 I

भार यस	मी अर्जा गाँची की अनुभव गिरा
	स्त्रियाणी सी मजू में ॥
रामजीव	देबादास,
	मियाराम न्यूणियास ।
नगुराम,	गेगाराम,
	नोषपुर सम्जु में ॥४॥
कोशोदास	मेंगळ तू,
	ञाननीमें राग रहे
घन्नाराम	सुद्रीमाव,
	गुरुदेव रजू में ।
भगवानदास	नु,
	परवापराय पास रहे ।
कई राम	राम स्नास,
	मास नर्शु में 🛭 🕻 🛭
प् ^{प्र} दास म	घु भागा,
	हूंगर सी जी निर्पमाय । 🖍
प्रमानन्द,	दिराम र,

गुस	यी अमां	षार्डजी र्व	ो प्रतुनव	नेया	उ१६
		रहत	सत्संग	में	ł
पूरगा	नानक	पास,	•		
		नंतसी	गुलायी	दास	
कृषीराम	व्म	तराम,			
		देवीचन्द	( रंग	म	11011
समन	कुशा	लीराम,			
		हंसाराम	Ť	ोतीराम	ŧ
सतरे	ये	सन्तजन,			
		रेगा	के स	ग में	1
मदली	पठाग	म्बांन,			
-		दिल्ली	को दि	वान जा	ण ।
भयो	भाव ः	नीके स	ान्त,		
		पानीपत	न जंग	मे ॥	5 11
, सरदारा	म हरी	किश	ન,		
<i>&gt;-</i> /			निवार	ा कि	यो ।
निवडी	न्द				

مجر

19.	<b>(</b> स १	यी चार्नाच	ौंखी की <b>प</b>	रतुभव गिर	1
		मगस	अक्म	₹	1
मयपुर	इमा	री मख,			
		साभर	में	सिरेमज	١
विश्वन	किश	नगद,			
		वैप्शव	सदम	है ॥	٤
गता,	चेना, जस	ा, जाम	ī,		
		-	किस्तूरा	र्माना	- 1
मक्तुज	য় শঃ	-	-,		
		सेयत	क्त्म	ŧ	-
2007	ग्रह	आहे			

n

गुरु माई,

सैंग जाक नव बाइ।

धर्राम समा माहि

सुली बर्युं पदम है ॥ १०।

इति शिष्य-दाका समाप्त ॥

अथ दूसरा परिच्छेद। (राम नाम

भी राममंत्र राजस्य माहास्य निरित्रापति । बानाति भगवज्ञसमुद्धं सरपानकक्षीय ॥ वृश्ह्यसमिति

में अवार करवाचा क्षिम्बु अनादि-अनन्त, वशास्पर वर मध-स्वस्य धान की बन्दका फरके करना कान्त करछ एवं वाचाओ पवित्र करने केशिए वस व्यवार सन्-विस- प्रानन्त पन परम प्रमु से शहा -काभित्न स्वहरा राम शाम विषयक षषा शक्य शत्रमाण ऋष महिमा कर्त्रन करने के ब्रिए प्रेरिट हमा है। यह मेरवा बसी प्रमुख है और वही अपनी शक्ति देकर महिमा वर्णन करवाताहै मैं वो बसके दाय का व्यक्तीना मात्र 🖺। बतकी इच्छा हो सो चाहे विससे बाहे सो करवा सरवा है।

चाव शुद्धारुम विच्यारखीय विचय वह सम्मुख मसुत है कि राम माम की महिमा जापार है कीर उसका संघार्य परान करने में राप, शारता, तारता मुनिन्द्र *योगिन्*द्र एव_ं पेर-राम भी असमय है वहीं करते थया नेक-नेति द्व गस्त सुमः जैसे साधारता सीव द्वारा क्स (राम) क् यथार्थ कर्रेन कैसे हो सकता है। अतः इसका यथार्थ वर्णन हो ही नहीं सकता क्योंकि नाम और नामी अभेद होने से अनादि अनन्त हैं, वर्शनावीत हैं एव अनिर्वच-नीय हैं। परन्तु मैं तो केवल-

स्वान्त: सुखायः

इस सिद्धान्तानुसार निम्न पक्तियों में श्री राम-नाम विषयक ( वास्तविक प्रशसात्मक ) श्रानेक छार्ष प्रन्थों एवं प्रमिद्ध भगवत् पात सत्पुरवों के प्रभाण चपृत किये जाते हैं, सो राम-नाम प्रेम परायण थायुक भक्त, आशा हैं, अवश्य ही तर्क रिहत होकर राम-नाम-ख्पासना में रुचि वृद्धि के श्रय पढ कर, समम कर श्रीर राम नाम तत्व की घारन करके खपना यथार्थ हित सायन कर सकें ने।

राम-नाम स्वत स्वय सिद्ध है, इस परम तत्व को कोई दूसरा भला कैसे सिद्ध कर सकता है, विचार पूर्वक देखने से प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है कि जिस चुद्धि से जो इछ निश्चय किया जाता है, वह निश्चय करने वाली विवेकशीला चेतना उसकी अपनी असिन्न शक्ति है।

भतः सभी शास्त्रीं एवं मन्तीं का अन्तिम निर्णय

#### यही है कि-

'वेद पुराण सन्त मत पहु, सकता सकति कल राम सनेहु । सब कर मत स्वमनायक पहा.

करिये राम पर पंकल नेहा ॥ इसक्तिय सन्तम रूपेया पेशाहि पूरवतम मन्त्रों के

बाहर पूर्वक (मिम्म प्रमायों के संकेतों पर) पाठक बन्द स्थान हैं--

विचारखीय निषय-

राम एक परं ब्रह्म राग एव परंतप । राम पर परं वर्त्त भी रामी बढा वारकम 🏗

W235----

राम ही पर्रमण है शुस थी पर्रतप है, शुस ही पर्र तम्ब और रामधी वारक मधारी।

इतर के स्त्रोक में भी रामश्री के कुछरे नाश धाने हैं

परमहा, परंतप, परंतत्त्व और तारक महा। अतः अनेक शास्त्रों में जिस जिस जगह परंत्रहा, परतप, परंतत्त्र श्रीर त्रहा ये नाम और इन नामों की महिमा छाई है उन सब वो रामजी की ही सहिमा जाननी चाहिए, क्योंकि ऊपर के श्रोक में स्पष्ट वर्णन कर दिया गया है कि जाहे राम शब्द आवे चाहे परंब्रह्म, परंतप परंतत्त्व और ब्रह्म आए एक ही बात है। इस पर भी शंकारह जाय तो सत् पुरुषों की सत्स्था करके समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

अब राम नाम की और रामनाम के नामी राम जी की जिन जिन शास्त्रों में यथा शक्य महिमा देखी गयी है, सो नीचे लिखी जाती है। श्रीमझवद्गीता में रामजी की महिमा-इस प्रकार है और यहाँ परम् नाम से सकेत किया गर्या है। तीन लोक को बीज है 'र' रो म 'मो' दोय खड़' यह वचन भी अनन्त टरियाय महाराज के हैं कि 'र' भौर 'म' तीन लोक का बीज है, सो 'परम' शब्द में 'र' ष्प्रीर 'म' दोनों हैं हीं-

परमाप्नोति ( अ० ३।१६। )

पारी है कि-

'येद पुराण सन्त मत पहु, सक्ल सकृति फल राम सनेहु। सम कर मत समनायक पहा.

करिये राम पद पैकन नेहा ॥'

इसस्पित समास रूपेण बेदादि पूरवतम प्रस्कों के भाइर पूर्वक (निम्न प्रमाखों के संक्तों प्रर) पाठक बन्द ध्याम दे---

विचारशीय विषय---

राम पन पर अक्षा राम पन परंतप । राम प्य परं तलां भी रामी ब्रह्म तारकम् ॥

<del>- 100</del> राम की पर्रमक है शम की परंतप है शम की परं

तला भीर रामधी वारक आराहे।

इत्यर के महेक में भी रासत्री के इसके साह आयो 🕻

श्रादि रहित परं ब्रह्म ।
'परमं यान्ति' १३।३४
परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं ।
'परं-वेत्ति' १४।१६
परब्रह्म को जानते हैं ।

इन सव स्त्रों का पूरा अर्थ शीमझगबद्गीता में देखना चाहें वे देख सकते हैं। यहाँ अपका का कोई प्रमझ नहीं है। 'यचपि प्रमु के नाम अनेका, सकल श्रायिक एकतें एका।" है

'पर तत्त्व, राम जी ही हैं। राम जी सब से परे हैं ही। अत. नाम भेद से वस्तु भेद नहीं होता।

श्रव श्रागे श्रनेक प्रत्यों के प्रवत प्रमाण देखिये श्रीर मनन पूर्वक पिक्षे ।

#### ॥ मन्त्र में ॥

श्री भगवान् की पवित्र वाणीक्ष्प जो वेट हैं, इसके दो भाग हैं—मन्त्र खीर ब्राह्मण । ऋगादि चार संदिताएँ मन्त्र परमारमा को प्राप्त होता है। 'परस्—हण्ड्या।२।४६)

परमात्माको माद्मात्कार करके निवृत्त हो जाता है। ' पर भाषम् । ७।२४।

'परम मानको अपर्यात् अत्रमन्मा भाव को । 'परं पुरुषे । ⊏ ।१०

परम पुरुष परमत्साको । 'परमाग्रं १०।१२।

^{*} मसरं परम वेदित्यमं ।११—१८।

जानने योग्य पर श्रव्हर ।

'परं निधानस् १ ११।३८५ परम आश्रम ।

' अमाविमत-परम्-श्रक्ष ' १३।१२।

श्रादि रहित परं ब्रह्म । ्
' परमं यान्ति ' १३।३४
परब्रह्म परमात्मा की प्राप्त होते हैं ।
' परं - वेत्ति ' १४।१६
परब्रह्म की जानते हैं ।

इन सव स्त्रों का पूरा अर्थ श्रीमद्गगनदीता में देखना चाहें वे देख सकते हैं। यहाँ भ्रमका का कोई प्रसद्ग नहीं है। 'यद्यपि प्रभू के नाम अनेका, सकल अधिक एकतें एका।" है

'परं तत्त्व, राम जी ही हैं। राम जी सब से परे हैं ही। श्रतः नाम भेद से वस्तु भेद नहीं होता।

अब आगे अने क अन्यों के अबल अमाण देखिये और मनन पूर्व क पिरंथे।

### ॥ मन्त्र में ॥

श्री भगवान् की पवित्र वाणीक्षप जो वेट है, इसके दो भाग हैं— मन्त्र छोर ब्राह्मण । ऋगादि चार संहिताएँ गर्म ही साम नाम महिमा सम् 5 माम के मन्य है कीर कार्मी बचारपान परंत्रक का प्रति पादन सुन्दर-सुन्दर बचनों में हुआ है। दिल्ह्यांनापं-

'वेवाहमेतं पुरुषं महान्तमावित्यवर्धे तमस परस्तात् '

इसमें स्टा वो चन महापुरूप को समन् अनान् प्रकृति से परे महाचा गया है। इसी प्रस्तर खन्तर्य के सासरीय स्टूक में बहा तमा है कि—

नासदासीधी सदासीचदानीं

मासीद्रभी नी स्वीमापरी यत्। स्वानीस्थावं स्वस्था ववेके

मानारपात स्वथमा तव्क तस्माद्धान्यशापर किंपनास ॥

सर्वात स्वृष्टि के बारण में प्रश्नति के दोनां इस्य-अपये स्वीर कारस जाने के समाग थं ( नेच मा इदमपे अस्त्रासीत् मेब सरासीत राजपण १०४१क)। तम समय बढ़ी एक प्रदेशका प्यामीतिक प्रथम के बिमा ही केवन अपनी राकि से जीवित स्वासी परे कीर कुछ वहीं था। \$

# वाह्मण भाग में—

मन्त्र भाग के ज्याख्यान स्वरूप ऐतरिय, शतपय, पड्र विश, गोषय श्रादि प्रन्य वेट के श्राद्धण भाग के अन्तगत हैं। इनमें परंतस्य का वर्णन मन्त्रनाग की अपेक्षा व्यक्षिक विस्तार से हुआ है।

परंवस्त्र का नारायण नाम वैदिक साहित्य में सब प्रथम भाह्मण नाग में ही मिलता है। पुरुप स्क का न्याख्यान करते हुए शतपथ ने कहा है—

पुरुषो ह नारायणोत्रकामयत अतिविष्ठेयं सर्वाणि भूतानि ।

अर्थात् नारायण पुरुष ने यह इच्छा की कि मैं सब भूतों को प्रकृतिसंष्ट्र जीवों को — अतिक्रमण करके अर्थात उससे परे हूं। परतत्त्व की इस अतिरियति के कारण उसकी अप्रता निरितराय है

वस्मादाहुर्विष्णुर्दैवानां श्रेष्ठः ।

#### ञ्चार्गयक में

ब्राह्मण प्रन्थों में यज्ञविधान के साथ—साथ ज्ञान खौर भोंक का भी समावश है। ज्ञान, वेराग्य छौर भिक्त के प्रतिपादक छश का स्वाध्याय—प्रवचन वीतराग महात्मा बहुधा छरण्य में (बन में) किया करते थे। इससे उस छश का नाम श्रारण्यक पढ़ा। छारण्यक प्रन्थों में भी स्थल-स्थल पर प्रतिच्या का चण्न प्राच्यक भाषा में फिया गया है। दिग्दर्शनार्थ-

पिरम पर भाकाशाहम भारमा महान् प्र_व र ( बहुरारण्यक ४ ४/५० ) इस क्यन में परवारमा का काश्रम्मा परुरस, रश्चस धनाउ

प्रकृति से 'सापरासंख और इससे परे बता कर-' सर्वस्य वशी सर्वस्येशान सर्वस्याधिपति ?

( बहर्याग्ययक श्रास्त्र १)

इस वचन में ७स सगस्त विश्व का मन् ग्रास ह कीर नियामक महाचा गया है।

**छपनिपद् में**—

माह्मय साग के स्पासमा-प्रविपादक मन्त्रों को स्पनिपर् करते हैं। इन्होंने हो परंतरक को इतनी क्या को है कि प्रधीय बोने कावा है कि ये इसी क इपासक हैं और अपनी स्टबाक्सलियों द्वारा बसी की सबस बशायना में मिरठ है।

विकारीनार्थ-' पतवृष्येशासरं परम । ( कठ० १।२।१६ )

वंदी कविसासी परंतका है।

' एतदालम्बनं परम् ' ( कठ० १। २। १७ ) यह ही सर्वोत्तम श्रालम्बन है। अत्तरं ब्रह्म यत् परम् ' (कठ० १। २। ३ ) अविनाशी बहा परतत्व है। अत्तरात परतः परः ' ( मुग्डक २।१।४ ) प्रकृति से परे जीव से भी वह परे है। परात्परं पुरुपपैति दिन्यम् ' मुग्डक ३।२।८ ) ज्ञानी व्यक्ति परात्पर पुरुष का सामीव्य पाता है। ' ब्रह्मविदाप्नोति परम् ' (तैतिरीय० २।१।१) महावेता व्यक्ति परतत्त्व को प्राप्त करता है। यस्मात्परं नापरमस्मि किंचित् । (श्वेताश्वतर० ३।६) उससे परे और मुझ नहीं है। ' तत्त्वं नारायण: पमम् । ( नारायणीपनिषद् ) नारायण ही परतत्त्व है।

#### रामायण में---

जिस रामायण के लिये यह सूक्ति प्रचलित है कि

पर केंद्र भी महर्भि पात्रभीकि के हार पातायण रूप से प्रकट हुआ है। हर बा बच्ची पातायक में यर्टक का सम्बन्ध निरुप्त हुआ है। हर बादिक-क्य के साधक रात क्यों मालाव विष्णु ही हैं। हसी बादी सम्बन्ध सम्बन्ध के यह सीक्ष्म है कि यर्दक्य में विष्णु से हैं। एक क्षप बाद्या किया वा विकारीतायें ----

'सवाझारायक्यो देव "(६।११७) 'स्वमोकार, परोस्पर "(६।११७)

इन वचनों में मध्येत स्तुति करते हुए करते हैं कि है राम जाप माराव्या हैं, प्रवत्सकृत हैं और परास्पर हैं।

इसी मकार कथ्यात्मत्तामायता के कायोध्या कारड में क्र तथा है कि महर्षि काति ने शीराम को शरीवस्थ शास्त्रया बात

हमा है कि महिंव चात्रि ने मीराम को परंत्रका भारायस्य वर्ष कर कनकी विविध्युर्वक पूजा की— मुस्ता रामस्य वचमें राज्ञ हास्त्रा हरिंपरम् ।

### स्मृति में—

साघारण घम⁸, विशेष धर्म, वर्णाश्रम धर्म, श्राचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त छादि विषयों पर प्रचुर प्रकाश डालने वाले घर्म-प्रन्यों को स्पृति कहते हैं। यद्यपि सामान्य रूप से श्रुती। तर सभी प्रन्यों को स्पृति कहते हैं तथापि विशेष रूप से—

### ' मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवत्कयोशनोङ्गिराः '

( याज्ञवल्फ्यसमृति १।१।४

इत्यदि वचन के खनुसार मन्त्रादि महर्षियों द्वारा प्राणीत धर्म प्रन्थ स्मृति रूप में व्यवहृत होते हैं। इनमें यथा-स्थान परंतत्त्व का समरण किया गया है। इनहरणार्थ मनु-स्मृति का एक बचन है--

प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणीयसाम् । रुममांभ स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥(१२।१२२)

खर्यात् समस्त जीव—निकाय के शासक, अगुस्तरूप जीवों से भी अधिक अगु, सुवर्णीपम वर्णविशिष्ट, निर्मल बुद्धि द्वारा प्राप्य पुरुष को प्रस्तन्त्व सममस्ना चाहिए। स

#### वद्य सूत्र में—

कारणस्य विरक्त क्यमिष्टर—सम्मां या एक नक्षेत्र मही वनक्यावदाने न प्रमुख किया था जिलका भाग नद्य मृत है इस सुप्त मन्य में नद्या के नाम से राजनी का ही नयान है कई सुक्त पेसे हैं जिनमें 'परं —राष्ट्र का जी सासात् प्रयोग है। जैसे

#### 'पराचु तच्खुवे ( २।३।४१)

श्रक्त सूत्र में एक पराजिकरण नामक श्वतंत्र काविक्यण है विकास सुने प्रकृत का सिद्धान्य श्वापित किया गर्या है विकास परे और कुछ नहीं है।

#### महा भारत मं---

महामारक-नामक व्यासन्द्रत प्रत्य धरवन्त प्रसिद्ध है इसमें स्थान-स्थान पर पर्श्वस्त्र की महिमा गांची शयी है बराहरखायें-

एव प्रकृतिरध्यका अर्घो देश सनावनः ।

१५

परश्च सर्वभूतेभ्यस्तस्मात् पूज्यतमो हरि: ॥ समापर्व ३८१२४)

श्रयीत् श्री भगवान् श्रवाड्मतसगीचर मृत का ए हैं, जगत के सनातन कर्त्ता हैं श्रीर समस्त भूतों से परे हैं, इससे वे - पूज्यतम हैं। एव—

> नीलोत्पलदलश्याम पद्मगर्थास्योद्मया । पीताम्बरपरीधान लसत्कोस्तुभभूपण ॥

त्वमादिरन्तो भूतानां त्वमेव च परायगम् । परात्पर्तरं ज्योतिविश्वातमा विश्वतोमुखः ॥ (वनपर्व)

हे जील कमल दे समान वर्ण वाले, अरविन्त्र के अन्तर स्तल के समान अरुणाम नयनवाले, पीताम्बर धारी, कौस्तुर सविमूजित सगवन् । आप प्राणियों के उत्पादक और

विनाशक हैं। आप में ही उनकी स्थिति है। आप इस विश्व ही अन्तरात्मा हैं। आप सर्व व्यापक है, प्रकाश स्वरूप हैं और परात्पर हैं। इसी प्रकार—

श्रपि देवा न जानन्ति गुह्यमाद्यं गृज्तपतिम्।

नी राम नाम महिमा नारायधे परं देनं परमात्मानमीश्वरम् ॥

परे पुराध पुरुषे पुराखामा परे च यत् ॥ (द्रीसपर्त) व्ययोग वेषक भी परंतरव मारायक की नहीं कानने है, को कि गुद्ध काच कमलित परमास्य देशर के के

रचिता इरि. निक्यु हिरस्यगर्नोहि पूर्व प्रस्तों के भी प्रश्न

द्यानयोनि दरि निर्व्यु मुमुसूबां परायवाम्

कीर सब से परे 🕻 । पुराण मं---सर्गे प्रतिसर्ग, वंश शन्यन्तर और वंश्वनुत्ररित का का मतिपाइन वरने वाक्रे साम्यका नाम पुरस्य है। यहहे

व्यासको ने एक प्रत्य संदिता बनायी बी--पुरायसंहितां को पुरायार्थविशास्त् ।

(विष्या प्रसाय शक्षर) इसी के आभार पर अभ्यान्त पुराक्ष-संदिवाएँ यवा

**प्रसिद्ध हुई । शब्ध पुराय आदि अठारह पुराय हैं. बिनमें भी** 

समय विराधित हुई को महापुराक और क्यपुराक के माम से

मद्भागवत मुकुटमणि है। इस सभी पुराओं में परंवत्त्व के चैभव का वर्णन है। व्यासजी हाय डठाकर बारम्बार घोषण कर रहे हैं कि—

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुज मुत्याप्य चोच्यते । न वेदान्तात् परं शास्त्रं न देवः केशवात् परः ॥

अर्थात, वेदान्ता से वद कर कोई शास्त्र नहीं और संगवान केशव से परे और कोई देव नहीं है।

# विष्णु पुराण का वचन है—

त्वामाराध्य परं ब्रह्म याता मुर्क्ति मुमुत्तवः । वासुदेवमनाराध्य को मोत्तं समवाष्नुयात् ॥ (१।४।१८)

अर्थात है भगवान् ! मुक्ति की कामना करने वाले अने के जीवों ने परब्रह्म श्रापकी श्राराधना करके मुक्ति को प्राप्त कर लिया बामुरेव की स्नारावना किये विना मोख को कौन प्राप्त कर सकता है १

#### आग्रंम में—

चारम का चर्च 🐧 कान माप्त कराने बाका । आरमायवीवि चाराम[ा]। पश्चरात्र तन्त्र वे सब**्चा**राम (वैध्यूब जाराम ) के पर्योग हैं। वी मिप्यूपासकों को-आगवदों का प्राचीम केप्पूच चाहित्य पात्रारात्र शास कहताता है, जिसकी क्षीय

**एम** भी राम नास सदिसः

संदिवार' १ सारवतसंदिता ९ अवास्यसंदिता भीर पौष्टर संदिता गुमत्रम करकाठी हैं। समय पाकर पौराखिक सामित्य 🖫 धर्म्यन पाञ्चरात्र साहित्य का मी काथिकाधिक विकार इमा। इसकी १०८ संदिवाएँ मानी खादी हैं। बदावि इससे

मी अविश्व संहिताओं की नामावसी आजकत निकरी है। पाइस्रात्र में परंतरम का वैशव पुत्र' पुत्र' विकार पूर्वक समुग वर्णित है । विश्वरानार्व--

(भ) 'परमेवव् समास्यावस्' (सात्ववसंदिवा १।२६)

(मा) ^{*}नासुदेश पर प्रमुं ! (सात्वत सीहिता ३।४)

( इ ) अप्रमेपमर्भ निष्यु शर्कं त्नां गतो अस्म्यहम् । गुसातीर्त पर शास्तमब्धनामं सुरेश्वरम् ॥ (मध तस्त्र)

थर्बाठ् प्रश्न का माम पर्द है। वासुदेव ब्रमु हैं पर्वत्त्व है। में ही बिच्यु नामरू परंतरव की शहस वाया है को बामीप

8 E

हैं, त्रिगुणावीत हैं, शान्त हैं, सुरेश्वर हैं श्रीर जिनकी नामि से मधावास कमज का प्राटुनीय हुआ था ।

### श्रावार्यों की रचना में—

श्राचयों ने परंतस्व श्री भगषान् के शित अपनी स्तयाः खित्रयां समर्पित फर अपना सपर्योभाव प्रदर्शित किया है। खाहरणार्थाः—

दिव्यधुनिमकरन्दे परिमलपरिगोगसिचदानन्दे । श्रीपतिपदारिवन्दे भवभयखेदिच्छदे वन्दे ॥(शंकराचार्य)

श्रयांत् में श्रीमन्नारायण के उन चरणारिवन्दों को प्रणाम करता हूँ जिसका मकरन्द गगाजी है, सत् चित्, श्रामन्द की जिसमें से सुगन्य निरुत्त रही है और जो संसार के समस्त भय और खेद का शमन करने वाले हैं।

श्रितितभुवन जन्मस्येमभङ्गादिलीले विनतिविधभूतन्नातरत्तेकदीले । श्रुतिशिरसि विदीप्ते नहाणि श्रीनिवासे कार्यात् कीवत के द्वित्र निश्चिक मह्मायको का उत्तम पिन क्षीर क्षम करने वात्र वात्र पानको की प्रका में निर्देश कक्कार्यकर कानिवाहों में महिचावित्र, की निवास पर्देश में निर्देश मिला के ।

स्यभावतोक्रपास्तसमस्यवीष, .... व्यूहाक्रिमं श्रेष्ठः परं बरेयपं व्यायेम क्रय्यां कमजीस्यां हरिम् ॥ (जिल्लाकोनायः)

भाषांत निकिश्व-देश-मत्थनीक, धनस्य करवाय शागक स्यूराङ्गी वरस्प्रीय, कास्त्रमयन, इस्ति, परंज्या जो छन्या व

इस सम प्याप्त करें। अन्ता करका शहावर्ष सामगानवया श्रृह्या

कृष्यात् परं गाँस्त वैनं-यस्तु-वेषविवर्गितम् ॥ (वक्षमानावां)

(वझ नावाये) सर्वात् हे मेरे इत्यां शावधान डोकर सुन ते। मी रूप

व्यवात् इति देश्य । सावधानः दोकर सुन हो । से से परे कोई भी निर्दोष विश्य क्यु (तस्य) नवी है । *

## संतवाणी में—

सत्वगुण ही जिनना विभूषण है, ऐसे महामना संत महा-हमास्रों ने परंत्रय की स्तुति, ध्यान, भजन करके स्वपना जन्म सक्त बनाया है। ऐसे महात्मा भारत के सन्नी प्रान्तों में हुए हैं। दक्षिण में आल्वारों ने समय समय पर प्रकट हो कर पर तस्य पूजा को धारा को निर्मल और अज्ञुल्ए। बनाये रखने या स्तुत्य प्रयत्न किया था। ध्यपनी पवित्र, मेममयी बाजी से उन्होंने भागत भूमि को भावुकता से श्राप्लावित कर दिया था। उनके वचनों में श्राक्रपेल था। वे प्रेमोन्तारमन्दर थे। उनके नाम हैं विष्णु चित्त, गोदा, सरोयोगी भूतयोगी, महायोगी, मुनिवाइन, भक्ता हिरेगु, मिक्त सार, कुत्रशेखर, मधुर, शठमोव खौर परकाल । तिग्दर्शनार्थ कुलगेखर विरंचित मुकुन्दमाला का एक श्लोक दिया जाता है।

चिन्तयामि हरिमेव सन्ततं, मन्दमन्द होसताननाम्बुनम् । नन्दगोपतनयं परात्परं, नारदादिमुनिवृन्दवन्दितम् ॥

परं पूच्य पुराणों एवं अन्य प्रन्थों में राम नाम की अत्यन्त्र मधुर महिमा देशिये---

रसने तन्नाम त्याह-र्मुनयस्वत्त्वदर्शितः ॥ ७ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, सत्यमेतन्ययोच्यते

····	बी राम शास महिमा राम १४				
स्मरन्तो	रामनामानि,				
	माबसीदन्ति मानवा ॥ 🗔 ॥				
मन्म कोटी	दुरित श्रमि ^{क्} षु				
	सम्पद च विपुक्ता भुवि मर्स्य ।				
रामनान	मतत द्विज भक्त्या				
	म <del>ोद्</del> यदायि मधुरै स्मरतुस्म ॥				
	थर्ष *				
महो ! हुए मनुष्यों के चरित्र की संस्तुत हैं जो वे शक्त					
	माम का स्वरूप नहीं करते। राम साम क्रेने में				
र्ज़ भी कप्र मही होता सुनने में भी करवन्त सुन्दर है हो भी					
हुँच मतुष्य पत्रमा समाया सहाँ करता। ज्ञात् में मनुष्यों के किय					
पुष्टि भरमन्त्र की हुकार्र हैं। परन्तु राग भाग से बह मी सिक					
	इससे वह कर महत्व्य के क्षिप और क्या कच हुए।				
	ों के शरीर में पाप क्रमी तक रहते हैं, अब दक्ष कि				
वह सुक्षों के देने वाले यम माम का समस्य नहीं करते। हे बिज					
ध छ से सिव	मृत्यु समय को शमुच्य राम मास का शमरया करता				

है, वह महान पापात्मा होने पर भी मोक्ष को प्राप्त करता है। है श्राह्मण श्रेष्ट ! राम नाम समल अधुमीं का निवारण करने चाला, कामनापूर्ण करने वाला और मोक्ष देने वाला है; चुडि-मानों को सटा राम नाम समरण करना चाहिए।

में मत्य कहता हैं-जिस ममय में मनुष्य राम नाम स्मरण नहीं करता, वही ममय व्यर्थ जाता। जो रचना (जीम) राम नाम रूपी श्रमत के स्वाद को जानती है, करवहानी मुनि उसी जीम को रसना कहते हैं। मै बार बार सत्य कहता हूँ कि राम नाम स्मरण करने बाला मनुष्य कभी दुःख को प्राप्त नहीं, षोता । जो करोड़ों जन्मों के सप्रहित पापों का नाश श्रीर मसार में महान सम्पत्ति चाहते हैं, उन्हें भिक्त पूर्वक निरन्तर हो राम नाम स्मरण करना चाहिए। पद्मपुराण ।

व्राह्मणः श्वपनीं भुझन् विशेषेण रनस्वलाम । त्रश्नाति सुरया पकं मरणे राम मुचरन् ॥ सुच्यते पात का त्तरमान्नात्र कार्य्या विचारणा । (नारमीय पुराण) मी राम नाम महिमा

बचारक कर कम पाप से मुक्त हो खाता है, इसमें विचार करने **वी धोडे कावरवकता** शही iⁿ ( नारद प्रशाय ) सक्तुसरितं येन, रामरित्यक्षर द्वयम् ।

पद्धः मरिकर स्तेन मोत्ताय गर्मन प्रति ॥ (बी स्टम्ब प्राचा)

"विसने 'राभ' इन को अधरों का एक बार भी वयरण किया है उसने मानो सोध को कौर जाने के लिए इसर कर 明章以

(शेस्ट्रम् पुराय) म्पायेद्वारार्थ दुर्व, स्त्रामावियु च कर्नसु ।

प्रायश्चित्रं हि सर्वस्य बुक्ततस्येति वैभृति ॥ 🗲

( भी गरम प्रात्त ११२३०१८ )

"स्वानादि शुन कर्मों को करते हुए श्री नारायणदेव 'राम' का ध्यान वरना चाहिए। यह राम स्मरण ही सम्पूर्ण हुष्कर्मी का प्रायिश्वत्त हैं, इस विषय में श्रुति भी सहायक है।"

रांसार सर्प सन्दष्ट नष्ट चेण्टैक मेपजम् । रामेति वैष्णांव मत्रं श्रुत्वा मुक्तो अवेन्नर ॥ ( लिझ पुराग्र २।७।११)

"संसार सर्वद्वारा डँसे जाने से निश्च प्ट हुए पुरुष के लिए एक मात्र 'राम' इस मन्त्र को सुनकर मनुष्य मुक्त हो जाता है।"

यन्नाम कीर्तनं भक्त्या, विलापनमनुत्तमम् । मेत्रेया शेष पापानां, धातूनामिव पावकः ॥

( श्री विष्णु पुराग ६।८।२०)

"हे मेत्रेय । सुवर्ण आदि घातुओं को जिस प्रकार आदि पिछला देता है, उसी प्रकार जिसका मिक युक्ति नाम सकीर्वन (राम समरण) सम्पूर्ण पापों का अत्युत्तम नाश करने वाला (,,जपाय) है।

रामेति द्वय्त्तरं नाम यस्य वत्ति प्रवर्तते ।

भी शम बाम महिमा	्र धम	
भस्मी भवन्ति तस्याशु महा पात	फराशय ।	
भ्रथ		
शस पद दो कक्षर किसकी जिद्दापर पापों की सस्ति (दे८) भक्षी न्ठ का कावी		¥स¢
नाम्नोस्ति यास्ती शक्ति पाप निदंश तास्त् कर्तुं म शास्त्रीति पावर्क प न तास्त्पापमस्तीह, यास्त्राम हरे उ	।।तकी भर	U
न्यविरेक भयादादुः प्रायमित्रन्तरं		रत )

'भगमान 🕏 माम 🗪 🖎 में पाप नारिशमी शक्ति 🖘 जितना वस होता है, क्तना शरीर सं किये <u>ह</u>थ पाप का यक्त नहीं। व्याहरण कामानिक कारि हैं।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।

सहस्रमाम वृष्ट्रियं राम नाम दरामने 🗈 🍠 'राम नाम भी महिमा भारतीय नव'वरी में देतिये उसमें लिखा है कि हे राम! आपने उनना पुरुषार्थ नही किया, जितना कि आपरे नामने।

त्वन्मन्त्र जापको येस्तु त्वामेव शर्गा गतः । निर्व्दन्द्वों नि:स्पृहस्तस्य हृदयं ते सुमन्दिरम् ॥ (अ॰ रा॰ वाल्मीकिजी अ स. ६, ४६.

श्रयीत् हे राम! जो आपके 'राम नाम' मन्त्र का स्मरण करता है। श्रापकी ही रारणमें रहता है द्वनद्व होन स्त्रीर नीस्पृह उसका हदम आपका मन्दी है।

राम रामेति रामेति रामेति च पुनर्जपन् । स चार्यडालोऽपि पूतात्मा, जायते नात्र संशयः॥ ( पद्म पुराण ) ७२।२०।२६

राम राग राम शम इस प्रकार वार-बार समरण करने वाला मनुष्य यदि चाग्डाल हो तोमी वह पवित्रत्मा है। इसमे तनिक भी सन्देह नहीं है।

अय स्रोकार्थ देने से विस्तार हो जायगा। अतः निम्न पक्ति यों में केवल श्लोक दिये जाते हैं ---

रुशक्रिश्मीरमिराममस्यात ।

चारा राजे इत्यावल शब्दश्तम चभ्यस्यात् सार्यस्य काही क्रामिम्य विश्ववि हांच वद्याच्ये सायगाया (विधारयवस्त्रामी)

माखपत्यपु शेपेपु शाक सीरेप्नभीएर । मैप्खमेष्यपि मैत्रे<u>ष</u> राम मैत्र कलाधिक ॥१॥

शतकोट पी महाम त्रा, उप मंत्रात्राखयोदश ।

एक एव महामन्त्री, राम नाम पराहपरम् ॥

मयापरमादि सीराध्य ६रि शोप शिव' शिवा । तेपां प्राक्षों महा मेशो. राशेवि भाइतद्वयम् ॥ १ ॥

मसीको मास्करे चैव शिथे क्राकी हरावपि । राममंत्र प्रमावेष सामर्थ्य चायते प्रमा ॥ २ ॥

(भी ह्रवशीर्थ पचरात्र)

(ऋरवंद) १०।३।३

(शिवरीय)

(भारबाज संविता)

विना शक्तिं कथं कार्य कि कर्त्तव्येन वा वलम । तदाकाशद्भवेद्वाणी रामनाम हृदं कुरु ॥ १ ॥ तदा संसरति विश्वं लयं यान्ति मुमुक्तिभिः तरमाद्राय महामंत्र आदि मंत्र उदाहतः ॥ २ ॥ (जैमिन)

श्री रामेति परं मंत्रं तदेव परम पदम् । तदेव तारकं विद्धि जन्म मृत्युमयापहम् ॥ (हिरएयगम सहिता)

श्री रामेति परं नाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् । ब्रह्म हत्यादिपापघ्नमिति वेदविदी विदुः (सनत्कुमारसहिता)

घटश्च कलशः पदार्थस्यामिधायकः । तथैव ब्रह्मरामश्च नूनमेकार्थ तत्परः ॥ (अगस्त्य संहिता)

रमन्ते योगिनी यत्र नित्यानंदे चिदानम्बि ो

भी राम माम महिमा	IIA ~ ~	३१
इति रामपदे मासी पर्र क्रह्माभिपीयते (रामः	॥	a )
भी राममंत्र राजस्य माहारम्य गिरिनापाः मानावि भगवाल्यसमुर्थेजस्पायकः लीयन (हरणह	n	)
शाम नाम्न समुत्पर्धं प्रवाशे मोस इ। इन्पं बच्चमसिम्रासी वेदाण्यस्या पिकारिः (सवागः)	<b>9:</b> p	)
्रकारम् परव्रम्म नारमीकार संयुवन् । ॐ दिन्तुमः मकारोपं धार्व रामाचर रकार स्वस्थां क्षेपं लंगहाकार उच्यवे		II
मकारोसि पर्व क्षेत्रं सस्वमसि सुबोण् विद्वापको 'र'कार स्यात्स द्वाप्याका मकारामन्द् वार्य स्यात्सविदानेद सम्यय	श्री॥ रडघवे मृ॥	
(महासम् प्रसास केपिया हुमें नील केण्डे सम		

त्री राम वर्णाभ्यां सिद्धिमवाद्मीतिमे मतम् ॥ ( महाशंभु महिता )

ून्त वट वीजस्यः प्राकृतं।स्ति महाद्रुमः विकास वीजस्य जगदेतच्यरा चरम् ॥ ( याज्ञवल्य )

र'काराव्जायते ब्रह्मा रकारव्जायते हरिः। 'र'काराज्ञायते शंभू रकारात्सर्वशक्तयः (रुद्रयामलक)

ें ब्रह्म विप्ताु महेशाद्या यस्यांशा लोक साधकाः। तं रामं सन्चिदानन्दं नित्यं रामेश्वरं भजेत् ॥ ( इनुमत् सहिता )

रामानाम परं नाप्यं द्वेयं ध्येयं निरंतरम् । कीर्तनीयं च बहुधा मुमुन्नुधिरहर्निशम् ) (जावालि सहिवा

्रवातः सर्वे वेदांष्ट्रा सर्वे मंत्रांश्च पाविति । तस्मात्कोटि गुगं पुग्यं रामनाम्नैव सम्मते ॥

मनाचादपि संस्पृष्टो यथानसक्त्रयी बहेत् । क्योष्टपुदस स्पृष्ठे रामनाम दहेरपम् ॥

शुरायस्येव सी दीप्स्य हत्स्वमहानमं तम ॥ 🏸

.रकारोऽनळ बीज स्पद्ये सर्वे वदयास्य । करना मनीमर्ट सर्व मस्म कर्न शुभाशुमम्

'ब्राकारी मानुवीमं स्यात् , वेद शास्त्र प्रकाशक ।

( श्रीमदाश्मीक्षिय ग्रमायग्र )

मकारख्रन्द्र चीनं स्याद्य द्वां परिपूर्णम् । त्रितापं हरते नित्यं शीवलत्यं करोति च ॥ वैराग्य ' हेतुः परमो रकारः कथ्यतें वृधैः । श्रकारी ज्ञान हेतुश्र मकारी भक्ति हेतुक: ॥ ( श्री मद्वाञ्मी किय रासायण )

ष्राकृष्टिः इतचेतत्मां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा-मा चांडालममूकलोकसुलभो वश्यश्च मोर्त्ताश्चियः ्रें नी दित्ता न च दित्तिणां न च पुरश्चर्यामनांगीत्तते भैत्रीयं रसनास्प्रवेग फलति श्रीरामनामात्मक्:। (श्री महाल्मीकि रामायण)

### साखी--

ऐसे गुरु के मिलन से आवागमन न शाय । विन गुरु हान सी इन्द है, काल फास में जाय। पर भव अगम अथाह है, काल जाल पह घार। पार होन की द्वार इक, गुरुगिरा कडिहार ॥

	नी राम भाग भहिसा राज			
गुरु	गुरु में मेद है, गुरु मुरु में माद	ŧ		
	सदा सी अन्तिये, शब्द वताये दाव			
	शब्द			
रहु	'रंग्रों 'मा स्मा की शरणे हो,	. 2		

सब सन्त उपारम धूनरी ।
धाविमकी वन बोह्या,
धूनि क्षिया सुकरेव ।
कर्म धेनीरा क्षे रखी,
सुत काले जयदेव ॥ १
तीन क्षेक वाना वन्यी,

नाम जेत युनि हारिया, सुरपति सकत भरेश॥२ जिन निम्हा गुन गाह्या,

ब्रह्मा निपूर् मदेश

विन पस्ती का मेर ी

घर का पाहनाः तामी जावे नह ॥३॥ वंद क्रीडा कियो. चार निरंकार किय राम । विने कवीरा चूनरी. पहिरे हरि के दास ॥ ४॥ ( कवीर शब्दावली ) कहै कवीर सुनो हो साधी, परगट कहूं वजाई । रामनाम सो सार शब्द है, और कथन सब बाई ॥१॥ 'सून्य और, अजपा मरे, अनहद हू मिर जाय सनेही राम ना भरे. कह कवीर धनाई ॥ २॥ 'कबीर' सात गांठ कोपीन के

की धोसमास महिका राम १८								
~~~	*****		म म	ه				
				। ।	(T) 1			
ाम	अमस	मावा रा	ŧ,					
		मिने	इन्द्र	की र	क ॥३॥			
री	साचूजन	णानिर	ì,					
		লি য়ি	दिन	ग्रमरे	राम ।			
বেৰ	ब्रिपे	न अमत	सी.	•				
	,			घे दा	माथा			
		(41	रीद बीजक	विश्वनाथ	श्रीका)			
नाम	निया	सी सब	किया.					
		योग	यश	भाष	R I			
भप	त्तं व	तीर्थ पर	राम.					
-11	41			की	धार ॥११			
सर्	धाया	उस प्						
	-11-11	371		कत	पुरस्त ।			
					_			

.

ζ

1

जिन पकड़ा निज मूल॥२॥

'रज्जव' यह मत सार ॥३॥

मेटे हरि भजे,

तन नम तजे विकार। निवेरता,

'दादूं' ये मत सार ॥ ४॥

राग राम नपु जिय सदा सानु रागरे।

किल न विराग, जोग जाग, तप, त्यागरे॥ १॥

राम सुमिरत सव विधि ही की राजरे।

राम की विसार वी निषेध सिरताज रे॥ २॥

राम नाम महा मिन, फिन नग नालके।

समदृष्टि

नीवां

दया

श्रापा

सब

पुनश्र—

शीवल हृदय,

रसना नाम उचार

शील संतोप सत्य,

लिए फनि निपै, व्याकुल विद्वालर ॥ ३ ॥ े काम तक वेत फल मार दे। चद, पेडित, पुरारि र ॥ ४ ॥

. प्रेम परमार्थ की सार रे। भाम तुल्लसी को जीवन-अधार रे॥ ४॥

बरीसो माहि पूसरो हो सी करी।

मीको ती रागको नाम कल्पत्तक किस कल्पाना करो ॥ १॥

करम उपासन, इान, **बेहमत सी सन मांति लगी**।

मीबि हो साबन के अन्धेबिश क्योंसमत रंग इसे ॥२॥

्षाटत रही स्वान पातरिस्वी, कानहैं न पेट भरी ।

हीं समिरत नाम सुधारस पेखत परुसि धरी ॥ ३॥ ्रिंश औं परमारथ हू को नहिं कुंजरो-नरी । वियत सेतु पयोधि पपाननि करि कपि कटक तरी ॥ ४ ॥ श्रीति प्रतीति नहां नाकी. वहँ वाको कान सरो । मेरे तो माय वाप दोड श्राखर हों सिसु अरिन अरो ॥ ४॥ शंकर साखि जो राख कहीं कछु ती नरि जीह गरी । अपनीं भली राम नामहिते तुलसीहि समुिक परो ॥ इ ॥

राम नपु, राम नपु, राम नपु, वावरे ।

पोर सक-नीर-निधि नाम निज नान रे ॥ १० पक्री साधन सब रिक्रिसिद्धि साधिरे। प्रसे किन्न रोल जीन संगण समाधिरे ॥ १ ॥

भन्नो की है, पोच को है, हाहिनी बी वान र। राम नाम ही लॉ अन्त सप ही की काम र॥ री

नग नम बाटिका रही है कृतित कुछ दें। पूर्वा कैसी धीरहर देखि तून सूख देहं। राम नाम खाकिजो मरोसो करे कौर दें 'तुखसी' परोसो त्यागमांने कुर कौर दें। प्रा

'तुबसा' परासी त्यागमाम कुर कोट र ॥ ४ ॥ ॥ चीपाई ॥ राम माम कर मनिव प्रभावा.

सन्त पुराया उपनिषद नाग राम राम कदि जे जुम हा हीं,

विन्हिंद म पाए पुंच समुहाही माकर मा

अधमत मुकुत होइ श्रुति गावा । जासु नाम वल शंकर काशी, देत सबहो समगति अविनाशी ॥

जासु नाम (राम) त्रयताप नशावन,

सो प्रभु प्रगट समुक्त जिय रावन । लाकर नाम (राम) लेत नग मांहिं, सकल श्रमॅगल मृत न साहीं !

विवशहूं जासु नाम (राम) नर कहिं,

वनम अनेक रचित अघ दहाही ।

सादर सुमिरन जे नर करहिं,

अव वारिधि गोपद इव तरहीं श

बारक राम कहत जग जेऊ, होत तरन तारन नर तेऊ ।

अन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं,

अन्त राम कहि आवत नाही । हरें भाषें कुभायं अनख आलस हैं,

नाम अपन मगल विसि दस्है। पहुँ जुग पहुँ अति मान प्रमाऊ, असि विशेष नहीं भान उपाऊ।

नहीं कति करम न मिक विभेक्ष,

राम नाम अवर्धनन एकू । सन मरीस तभी मो मज रामदि,

प्रेम सहित गाव गुन ग्रामीर। सी मन तरे कछ संसय नाहीं,

नाम प्रताप प्रकट किस मंदि ।

राम नाम विधु अवन अदीपा, सीहत समाम सीह नित पीला।

नाम काम तर्र काल कराचा, समित्रत समन सकल जसकानी ।

सुभिरत समन सकत जगजाना । महा मत्र नोह जपत महेस,

महा मन्न नाइ नपत गहसू, काशी मुकृति हेतु उपवेधि ।

काशा मुकृति हतु उपवधः । मदिमा नासु मान गनराकः,

पुमान गनराक, प्रथम पुनियत नाम प्रमाकि॥

दोहा:---

कृत जुग तेता द्वार, पूजा मख अरु जीग।
जो गित होई सो कली, हिर नाम ते पाविहें लोग।
राम नाम नर केसरी, कनक किसपु किल काल।
नापक जन प्रह्वाद जिमि, पालिह पालिह दिल सुरसाल।
कलजुग सम जुग आन नहीं, जो नर कर विश्वास।
गाई राम गुन गन विमल, भव तर विनिहं प्रयास।
नाना पथ निर्वाण के, साधन अनेक बहु भाँति।
तुलसी तु मेरे कहे, रट राम नाम दिन राति॥

दोहाः--

राम नाम मातु-पितु, रवामि समरथ हितु, श्राश राम नाम की, अरोसी राम नाम की। श्रेम राम नाम ही सों, नेम राम नाम ही की, नानों ना मरम पद, दाहिनी न वामकी॥ स्वारथ सकल परमारथ की राम-नाम,

	• 1	राम म	म महि	मा	राम		۷٩
राम	नाम	रीन द्	[बसी	म क	ाहू का	मकी ।	-
राम	कीश	(पथ,	सरवस	मेरे	राम न	ाम,	~
काम	घेनु ।	तम	त्रक,	मोसे ।	रीन स	ाम की	n
राम	मातु,	पितु,	-		परम	हिस	ı
सार्दु	सस	π, τ	तहाय,	7 .		দ্বিত	,
वेसु,	कोसु,	378			4	. 10	

सार् देसु, पर्यं, पत्रु, पाषु, परनिवरिः।

नावि-पांवि सब भांवि सामि रामहि इमारि पर्ति !

परमारथ, स्पारम सुजसु, शुक्षम रागर्ते सकत फर्म मद 'तुलसीदासु,' क्रव अव

स**वहुँ एक** रामतें मीर म^{6द}ीं

राम

ده مسم ۱۹**۵** (۱

कवित्त

जांगें जोगी-जगम, जती-जमाती ध्यान धरें । डरें उर भारी लोभ, मोह क्रोध, काम के। जागे राजा राज काज, सेवक समाज साज, साँचे सुनि समाचार, बड़े वेरी बाम के । नार्गे वुध विद्याहित, परिखत चिकत चित, जागे लोभी लालच, धरोन, धन, के। जागे भोगी भोग हीं वियोगी, रोगी सोगवस, सोवे सुख तुलसी भरोसे राम नाम के ॥ राम हैं मातु, पिता, गुरु, बन्धु श्री संगी, सखा, सुनु, स्वामि सनेही। राम की सों, भरोसो है रामको राम रँग्यो, रुचि राच्यो न कही। जी श्रत रामु, मुएं पुनि रामु, सदा रघुनाथिह की गति जेही । सोई जिए जगमें 'तुलसी ?

नी राम नाम महिना मत् डोसत भीर मुप परि देवी। नो जननी, सो सखा, सोइ माइ, सी मामिनि, सी सुतु सी हितु मेरी। सोइ समी, सी सला, सोइ सेवक. सी गुरु सी सुरु साइव वेरी । सो तुनसी प्रिय प्रायासमान. कवां ली बनाय कहीं बहुतेरी। भी विणि देह की गेह की नेहु, सनेइसी रामकी होइ सवेरी ॥ त्रमु से रूप, प्रवाप विनश् से, सीम से सीख गणेस स माने । इरियम्ब से सांच, बढ़े विधि-से. मपदा से महीप विपे-सुस्त सार्ने ।

चिर जीवन जीमेर्वे अभिकाने ।

सुकसे मुनि, सादर से वकता,

'ऐसे भेये तो कहा 'तुलसी' जी पै राजिय लोजन रांघ न नाने॥

दोहा

रे मन सब निरंस हो, सरस राम सों होहि।
भन्नो सिखावन देन हों, निसि दिन तुनसी तोहि॥
न मिटै भव संकट, दुर्घट है,
उप तीरंथ जनम अनेक अटी।

किल में न विरागु, न कर्म कहूँ, सबु लागत फीकट भूँट

नटु स्थों निन पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक थाट बिता सदा सुव चाहिये ती,

रेंसना निक्षितासरे राम हामु विहीय 'मरी' भेपते,

निनरी सुपरी कवि की किस इ की नामहि र्वे गवकी, जनिकाकी,

अगामिसकी पति गै पस पूनी नाम प्रदाप पढे कुसमाज

वनाइ रही पति पांडु बधुकी वाकी मली अमई 'तुलसी'

ने हि प्रीति प्रतीति है भासर हु।

नाम झनामिस से सम तारन, तारन बारन बार वह को

शाम हरे प्रश्लाव निपाद.

पिवा-भग सांसवि सागर छुकी नाम सी प्रीवि प्रवीवि विशीव.

निक्यो कतिकास कराज न चुक

राखि है रामु सी नाम विरं. 'तकवी' इससे वस जासर दुनी सकत कामना दीन जे. राम मिक रस बीन नाम सु प्रेम पियूष हद, तिनहूँ हिये मन भीन।

राम

राम नाम का बल श्रीर विश्वास के उद्धार-

नाम प्रसाद सोच नहिं सपने। नासु पतित पावन वड़ वाना,

गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना । ताहि (राम) अजिह मन तिज कुटलाई,

राम भेज गित केहि नहिं पाई रिक् कवित्त—

सब अँग हीन, सब साधन विहीन, मन वचन मलीन, हीन सब करत्ति हों। बुधिबल हीन, भाव भगति विहीन, हीन गुन, ज्ञानहीन, हीन भागहूं विभूति हों।

तुनसी गरीय की गई-यहोर राम नामु, जाहि जिप जीहँ रामहू की वैठो धृति हों। प्रीति राम नाम सों,

मना मरसरें भाग सार्द्ध न की ही. श्रावि शार्रे हा निश्रम्यास राही ≀ श्चमस्तामर्थे नाम है सार आहे.

पुनी तूलमा तृतिको हीन साहै ।।

भर्य — हे मन । मत्सर प्रस्त होकर राम नाम स्मरण भतहोड़, श्राटर बुद्धि से नाम स्मरण का ही श्रवलंबन राव। नाम

स्मरण मज साधनों का सार है। इसनी दूसरी उपमा ही नहीं। यह अनुपमेष है।

षहू नाम या राम नामी तुलेना, श्रभाग्या नरा पामरा है कलेना ।

श्रभाग्या नरा पामर विषा श्रोषधी घेवलें पार्वतीशें,

विषा श्रीषधी घेतल पावतीशे, जिवा मानवा किंकरों की गूसे ।

अर्थ - दूसरे मन्त्र की राम मन्त्र से तुलना नहीं हो सक्ती, सक्ती, यह बात अभागे मनुष्य की समम में नहीं आता। मगवान् शकर ने हलाहल विषयान करके हमी औपिध का पान

भगवान् शकर ने इलाइत विषयान करके इसी ऋ पिध का प किया था। किर दूसरे पाभर जीवों की तो बात ही क्या है ?

भना राम विश्राम योगेश्वरांचा,

नपु ने मिले नेम गौरी स्वयं नीववी तापसी चंद्र मीली.

हराचा ।

कार्य--को भी एसप्री वागेश्यों क विशान स्वान हैं, जिनके सास बरास रोकर ने बद दिया है, कीर स्वयं शास्त हुए। वे शि भी रामश्री कार्य--काल में हमको हुकार्येगे।

भये राम काली तथा भोर हाली,

rTu

ननीं अपर्थ प्राची नमा नाम काची। इदि नाम है वेद शास्त्री पुराण,

स्रोक

हार नाम इ. पद शास्त्रा पुराया, पहू कार्गर्ले पोक्षिकी व्यास गर्यी॥

चाय-जिस के गुरुके राम लाग नहीं निस्त्रता, रसकी हानि होती है। को राज नाम को तुषक समस्ता है समझ सीयन कार्य है। येर शाओं में तथा कास मझराब ने पुराखें

में नाम की दी साम की शहिया खुल गाई है। (समय भी शासी समसासत्री महाराज)

(I and Add day

कवित-

कहां व्रत नेम गजेन्द्र कियो,

कहा वर्ष नेम गजन्द्र किया,

कहा वेद पुराण ,पढ़ी गणिका।

श्रनामिल कौन श्रचार कियो, निशि वासर पान सुरापन का

च्याघ कहा चप योग कियो,

बहु नीवन को जु हुतो हनका।

तुलसी अप मेरू सुमेर जरे,
हिर नाम हुताशन की किशाका॥

एक शब्द में किह समकाऊं सुनही सद संसार। राम नाम सी सार शब्द है, और कथन है छारा॥१॥

(श्री हित्वाक्यम्) राम नाम तिहुँ जीक में अवसागर की नाव। सद्गुरु खेवट बांह दे सुन्दर वेगी आव॥ १॥

राम नाम महिस्य राम नाम पिप्रप कवि निप पीवे मित हीन । संदर होने मटकर्ते भन बन यागे दीन ॥ २ ॥ ा राम नाम भी पन कर राम नाम नाम यान । ्राम नाम सी निक्ति रहै शुरूर राम समान uan किरीर क्सोटी राम की, 'मूल टिकै न कीए। राम कसीटी सी सिंह, भी मरत्रीया होय ॥ १ ॥

क्वीर करता है 'कंद नात है चीन कहा मसी शैंपना, सुव्यता है सब कीय ।

महिं तर मसा व हीय ॥२॥

राम तुमारे नाम विम.

नी मुस निकसे झीर । 'दातु' उस अपराधी भीव की,

वीम क्षीफ नहीं द्वार ॥ ५ म

भावस राम बरावर जानंत. पेंसी यो चाक अभी अग्रिमाई। क्यों सब खेती मिली अस घास में बोही गयो सब बीज कुमाई ॥ वेण्या को पूत पिता कहे कीन की जानत हैं सब लोग लुगाई । इमि आन तजे बिन राम मिले नहिं रज्जव को ही है राम दुहाई ॥

चारूं वेद डँढ़ोर के, श्रंत कहेंगे राम ।
रज्जव पहिले लीकिये, ये तामें ही काम ॥
कवीर हरि के नाम सों, कोटि विन्न टल नायँ।
राईमान विशंदरा, केता काठ जराय ॥ १॥
रामनाम की श्रोषधी सतगुरु देइ बताय।
श्रोपध खाय रु पच रखे, ताकी वेद न नाय॥ २॥

सवैया-

ज्ञान अज्ञान परे पा पावक,

सो सतमान नरेही नरेंगे

पारस मैल विकार हरेड़ हरेंगे के अपन अज्ञान विधे कोऊ अमृत

बान भजान हुरी विये

वासुके सौक दरेरी टॉरेंगे । बान प्रमान रहे निव रामको : समयस्य विरेती विरेती ॥

> पद ---क्ट---

कीय विभि पाइये रे, मीव हमारा सोह ॥ टेक ए पास पीव परदेस हैरे वब सम प्रवट नॉर्डि !

वाब सन मिंन न देखिये, परतट मिसी न झाह । एक सेन संगद्दि र हैं, यह बुस्त सद्धा न माह ॥२॥ सब साम नेद्रै वित हैं जब पन सिन्ने न सोदिए

विन देशे तुल पाइये, यह सादी मन मोहि ॥१॥

सब अस नेडे दूरि हैंने, जब अस मिन्ने म मीडिए चैंन निकट नहीं बेलिये, समि रहे क्या होह शहा कहा करों कैसे मिलैरे, तलपे मेरा जीव। 'दादू' ब्रातुर विरहनी, कारण अपने पीव।। ४॥

॥ पद् ॥

राते माते नाम तुम्हारे काहे की परवा है हमारे ॥ टेर ॥

भिलमिल-भिलमिल नूर तुम्हारा, परगट खेले प्राण हमारा ॥ १ ॥

नूर तुम्हारा नैया माहीं, तनमन लागा छुटे नाहीं ॥ २ ॥

प्रेम मगन मतवारे माते, रंग तुम्हारे 'दादू ' राते ॥ ३ ॥

| विरह विलाप | |
 श्वेनयराक्ष्यों रहै रे, तुम्हारे दर्शन विन वेहाल ॥ टेक ॥
 परदार्श्र तरिकरि रहे, हम नीवैं किहि आधार ।

सदासनावी प्रविमा, अप के लेह उनारि ॥१॥ मीपि गुसी है है रहे, अब काहे न परमट होह। राम सनेही संगिया, दुमानाहीं कोई ॥ २ ॥ ग्रंवरनामी किपि रहे, इस क्यों भीवें हुरि।

तुम विम स्याकुत केशया, नैन रहेबला पुरि ॥१ आप अपरक्षन व्हें रहे, इम क्यों रैनि विहाह 'बाव' दरसका कारणे. वसिंफ वसिंफ जिल्लाई धर

१) विरह---र्चिता ॥

सी दिन कषडूं आविगा, दाइ जन पीव पविमा ॥ टेक

चयुं हीं अपने अंति जगाविया. वन सन दुस्त मेरा काषेगा ॥ १

पीय अपने बैन सुनावैसा. वर भागन्द अंति न मारीमा ॥ । पीव मेरी प्यास मिटावैगा.

	मा रा	स शाम सहिया	राव	12
मनहीं	मनसी	समुक्ति सया	गो,	-
काम	कल्पना	भानन्द एक करे न की पुरस—शहा		ह# 1
इदि	पैमि	पहुँचि पारम 'दादू'सीव	हि, त्सहिंग सैन	प्रथा
•		॥ रस	H	
स्वा इदि सुरन सिप पीयत इदि	रस पीवैं रसि मुनि र साधु साभिक प्रमन्त रसि रा	ारे, पीने स् प्रेम स्पें, सी। जाने स्पें, क्ष संवमन, सी मोनी मती, म भागादे, ऐस ना मम्बर, ऐस ना मम्बर, ऐस	प्रविनासी प्रांख इत विष्णु नहेर रस पीचे शेष सर्वी सर्वे सुखदे ता व्यवस्य व्यमे तिमा प्रस्त देहास	#टेकम र । : त १ म च । इ ॥२॥

यह रस मीठा जिन पिया, सो रस ही मांहिं समाइ। मीठे मीठा मिलि रह्या, 'दादू' अनत न नाइ ॥ ४ ।

॥ ग्रानन्य शरण ॥ Fra to.

नूं हीं तूं गुरुदेव हमारा, सव कुछ मेरे, नांव तुम्हारा ॥टेका

ज्जमहीं पूजा तुम हीं सेवा,

तुमहीं पाती तुमहीं देवा ॥ १ ॥

जोग नग्य तूं साधन नापं, 🕝

तुम्ह हीं मेरे आपे आपं ॥२॥

न्तप तीरथ तुं व्रत सनाना,

तुम्ह हीं न्ताना तुम्ह ही ध्याना ॥३॥ अबेद भेद तूं पाठ पुराना,

'दोदू' के तुम पिगड पुराना ॥४॥

मना भीत राम नाम सीजै.

साप संगति सुमिरि सुमिरि,

ति त्रपनी गति, ऐसें जन कीये ॥ २ ॥

केते तिरि तीर 'लागे, न बन्धन भव किलमल बिख जुग जुग के,

छुटे

राम नाम खुटे ॥ ३ 🗈

भरत करम सब निर्वारि, कीवन जिप सोई दाद दुख दुरि करण

रम	राम शाम महिन्य				44	
	पूजा	नहिं	कीई	R	8	ħ
	11	पद ।	ı			
र्न हाडू ? मीर्ग जारक विरय					_	
	कहा	करे व	क्तिं र	ोटा	n ē	देक स
र्दी स्नामी ।		र्थे न्या । मंत्रि		न	i i	ı
मच्द कच्छ	रहें व	वि ने	वे,			
मन स्नै		कार भर		लाइ	n	₹₩
जिनका सप्र		स्मा वस्राहारा		म	ieï	1
	विन	ह की	40	नाई	ŧ (t	२ ॥
सापे मूठ		कर्तृ ग		*	ıŝ	ı

दादू साचा सहजि समाना, फिरि वै भूठ विलाई ॥ ३ ॥

।।मंगल।।

नूर रह्या भरपूर, अमी रस पीनिये,
रस मेंहिं रस होइ, लाहा लीनिये ॥टेर॥
'परगट तेन अनंत, पार निहं पाईये।
'मिलिमिलि भिलिमिलि होइ, तहां मन लाईये॥१॥
सहनें सदा प्रकास, नोति नल पूरिया।
चहां रहें निजदस, सेनग सूरिया ॥२॥
सुख सागर नार न पार, हमारा नास है॥
ईस रहें तामांहिं, 'दाटू' दास है॥ ३॥

पद्-

्रें सोई साध सिरोमणी, गोबिन्द गुण गाँव। साम भने विषया तने, श्रापा न ननावै ॥टेक॥

रामदास इक राम विन.

दुषा कोऊ नाहिं ॥ १ ॥

षिन साधु संसार में

सुमिरावे निज माम ।

दया वोध मांही कही करि करि ऊंची वांह।

सुंदर कहत एक दियो निन राम नाम ॥

दयावंत जिनके वसै राम राम उर माह ॥ १॥

गुरु सो उदार कोड देख्यो नांहि सुन्यो है ॥

CIम वीरोमनाममहिसा ७०
राम राम सब कोइ कहै, ब्रह्मा विप्तु महेरा। राम परणा सापा गुरु, देवे यो उपदेश ॥ १ ॥ राम परख शिव पर्म कूं, बानत नोर्डी कोय। शिव सुमरे ठाकूं मने, सो शिव परमी होय॥२॥
पद
भर रे राम नाम सुमरीनै । यार्धुं क्यागे सन्त उपरिपाः मेरा सास्ति अरीनै ॥ टेर ॥
यासूँ ^{भू} त प्रहाद उपरिय, करनी साच करने। यासूँ दश मस्दर उपरे _र -
गासू वर्ष नवस् उनस्नि गोरस धान गहिने ॥१॥ यार्द्धे गोपीचन्द्र भरवरी, पैसे पार कैंपी से ।

यार्स् रैका-चैका उधरे,

ब्राप ब्रजर नरी ने ॥२॥ यासूँ रामा नन्द उधरिये,

यासूँ जन खिदास उधरिये,

यासूं कालू कीता उद्धरे,

यासूं जन हरिदास उद्धरिये,

दादू दास पतीने ।

नन हरिरामा कहै सब ही की.

पद

मनवा राम भजन रट वल रे।

पीपा जुग-जुग नीने। यासूँ दास कवीर नामदे, नमका जान कटी नै॥३॥॥

मीरा वात भनीजे ।

वास अमरपुर कीने ॥ ४॥।

नपता दील न कीने ॥ प्र ॥:

बी राम नाम महिमा	(TR	9 8
द्रम संकार निकाल की तपही,		
	निर्वस रे	॥ टेर ॥
देख कुसङ्ग पार नहीं दीने	,	
महां ग	इरिकी ग	त रे।
जो नर मोझ मुक्ति को चाँ	ì,	
करै सन्ता	बीच मिस	हरे ॥१॥
संग्रय शोक परै करि सवही	•	
द्वद्र हूर काम क्रोध भरम कर कांने,	कर _् दि।	बरे ∤
राम सुम	र इक इस	रे ॥२॥
मनना उद्घट मिश्मा निजम	न सुं,	
पाया क्रे	म अटस	रे ।
पांच पचीस एक रस कीना	,	
सहम मई	सन सवरे	म ३ ॥
नल सिल रोग रोग रगरग	में,	4
वासी प	क भटक	₹ ા

नहिं वो पालय नावसी.

लख चारासी धार १। टेर ॥

सतगुरु सब्द नो कहे रे

मनवा ताहि न भूत ।

ऐसी नग में कोई नहीं,

राम नाम सम तुल गरा।

साधु विना कुँग सीखंबै,

चुड़ा सप नर

राम भर्नन की रीति ।

वापडा

कर कर जग मूँ प्रीति ॥ २॥

यारी हरि से कीजिये रे,

दूजा दाव निवार 1 पासी पिन से ग्वेलतां,

कदे न आवे हार ॥ ३ ॥

साधु मिल्या सुस पाइया,

-

सुरत शब्द से मिसरे ॥४॥ पट

मरम गुरु मनिर साची नाम सुखाय ॥ टर॥ सदगुरु मारा सिरमखी रे, मैं सदगुरु का रास।

उनके पास किसमियों, वे काटे नम की पास से १ ॥
भीम, निग, वप, वप करे रें, मड़सठ टीरथ माय।
उर मादम इक बार निर्तुं, नम के ग्रेसे नाय हरस
वेद क्या छुन सीसके, बाचे देय क्यार है।
नाम नियारी रह नयों, कर कर सोकाचार सह।
विन गुरु गम निम्मय विनां, कह करहो करा।

चन हर रामा उस्त नीय हैं देख रही चे दूर ॥४॥ पद

मुखी वर नारियों—रे प्रपनी पीव पुकार ।

XX

उपज्या परमानन्द नन हरिया निरभय भया जिन मेटचा दुख द्वन्द्र ॥

पद

रे नर सतगुरु सीदा कीने। इन सीदा में नका बहुत है, पक---मना होय लीजे ॥टेर॥

पिता सुत आत सनेही, सात

चौरासी लिख ही नै ॥ १ ॥

जे कोइ चाहे राम भक्ति को

गुरु की शरण गदीने ॥२॥

गुरु चिन भरम न थाजे भवका

कर्म न काल कटीजै ॥ ३॥

ें गुरु गीविन्द विन मुक्ति न जीवकी कहियो वेद सुनीजी ॥ १॥ एसी मझी मोदि सरगुर दीनी ! तन मन अरप अतर में सीनी ॥टेका

भक्षां सुक्त बहुत सुख पाया। निरस्तत मही नयन सुन्त पाया ॥१॥

सूंपर मनन मया मन मेरा।

चासत मिटग्या मरम भ्रंघेरा ॥२॥ पीयन माडी हदय में उसी ।

चलक बहर नामी भाष प्रमी ॥३॥

रीम रोग में सर्वविदायी ।

उसरी आय जनम पर भागी ॥४॥

इंडा पिनका सुनमस् अरगी ॥४॥

४२ फेवर एको धून सामी।

मुक्ति द्वार में प्राण समाया। नन्म मर्गा दुइ रोग मिटाया ॥६॥

व्रह्मादिक सनकादिक नाँगे।

राम नड़ी शिव शेप बखारी ॥ ७॥ श्रनन्त कोटि संतां या पाई।

रामदास गुरुदेव वताई ॥ 🖂 ॥

॥ वद ॥

- गुरु मेरे ऐसी कदर बताई । ताते सुरत शब्द घर आई ॥टेक॥

रसना नाम नेम करि लीया।

निश दिन प्रीति लगाई ।

हिरदे मोहि प्रेम प्रकास्या । आतम की गम पाई ॥१॥

सब ही वन गुँकागा।

क्षाभी माहिं नाद परकास्या।

मीरामनासमी(भा राम अन
पिंद्रम दिसा की बाटी सुद्धी।
मेक वृत्यक हुन भाग ॥ २ ॥ ; सहमौ उन्नट झारि पर आया ।
तिरवंखी के तीरा
रामदास सुनसामर माही । पुगत देस नदै_दीरा ॥३ ॥
पद
मुक्तवी कादमा हे हैं वी रमता राम पिहासा। ~ समता सुमति सम्हायके,
त् तमि वे कुमति कुवान ॥टेकाः। सत ग्रुव शरकः पर करी है
संस्तीमाठि की शादा। शान सदाय कर द्वेष कर,
हैं अने कापहरा कोड ते रेतर काम क्रीचन सीत के हे,

लालच लीभ पछाड । हर्प शोक को ढादि के, वें शंसय की शिर काड़ ॥२॥ मोह मेल दे गाह टै है. यो सब दुख की धाड़ ।

हेप ठुकराय ने. राग तुँ कर करमा सं राड़ ॥३॥

गर्व गुमान उड़ायदेए,

निशदिन राम उचार । 'राम चरण, तम ही मिलै.

त् पूरण वहा मभार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सन्त सबै शिर ऊपरै जिनके साची टेक । राम चरण ढूना सबै, राम श्रासरे भेक ॥ राम चरण सन्ता तणो, मैं हुं खानाजाद ।

श्रीशस्त्राधमद्विमा श्रम	ج مريد
दूर्मा स् अलगो रहूँ, आके बाद पियाद ।। सद सन्ता सू बीनती, कीअ्यो वाप विपार परस ही मत विङ्कल्यो, में स्वीवालाव तुम्ही	
चम्पक झन्द —	
ये खोटा मोटा चना, यं परमट पाडे हेला : सद राम नाम की वाखी, यं सामां तथी निशासी ॥ कोई पैठा याखी वाषे, ये मते खग्या दे सापि कोई निर्मुख सा पद गाँदे, सद सामां के मन गाँदे ॥	ř
मं हवे तब सुं पाछा,	
ये थण्य सम्मे कार्या। ये मुल सू क्रूट सापै, ये इष्ट साथ को राले॥	<u>,</u>

₹

स् ये पर्धन रह हुडा, ये कूड़ कपट मूं पूठा (

सतगुरु की सेवा शूरा,

ये साध मता में पूरा ॥४॥ पाणी पीवे छाण्यो,

यां सव घट स्रातम ये हिंसा सू रह डरवा,

ये निरख निरख पग धरता ॥ ॥॥ ये नांहिं दुख का दाता,

ये चाह्रै सब कुशनात । की भोजन पानै, थदा

के भिन्ना करके खावै॥ ६॥

निरमल चुद्धि शरीरा,

ये जैसी शीवल मति सो साधू ऐसी

ये द्रजा सकल उपाडू ॥ ७॥

त्रीरा

नएयो ।

भी राम माम महिमा	रीश दः
कोई स्याखा की विवास,	
में साथ कहत नहीं डरपूं,	ाँ के दीकारा । वैसी घर ूँ ॥⊏॥
कोई सामा साम पिछांगे,	स्म व जार्गाः
'रामचरकः' इम नाई,	गर्दि क्वाई ॥ ६॥
यं न्यास पुत्र शुक्रदेवा, सामस्त मां	दिक्दिमेगा।टका
कोई पाकी करी न मान,	
सी हमसे य सूर्ण साचा राजी होते.	हमदा ठाने ॥ १ ¤
4	त गडाये ॥२॥

मत्स मारी मूठा पामी ॥रेते

सादिष रात्री,

मामा

द्र३ राम

ये तछ त्रतह सब नागे,

हरिजी का सन्त वखाँगे ॥४॥

यु रामचरण सत भाखी,

विच गीता ने दे खासी ॥५॥ (स॰ रामचरणजी)

भ तिताला ॥

ूभ्या में न्यारा रे। सत्तगुरु केजु प्रसाद भया में च्यारा रे ॥ श्रवन सुन्यो जव नाद भया मैं न्यारा रै। छुटीवाद विवाद भया में न्यारा रे ॥ टेक ॥ लोक वेद की संग तच्यीरे, साधु समागम कीन । माया मीह जञ्जाल तें हम भागी किनारी दीन ॥ १॥ नाम निरंजन लेत है रे और कछुन सुहाइ । ्रिनसी बाचा कर्मना सब छाडी ज्रान उपाइ ॥ २ ॥

मन का भरम विलाइया रे भटकत फिरता दूरि ।

राम भी राम नाथ मंद्रिमा उलटि समाना भाष मैं स्थ प्रमटन्या राम इजूरि ॥३॥ पिंद्र मद्यापक महातही देशा विन भीर न कोई। सुन्दर ताका दास है जातें सब पैदाइस होह ॥ 🗴 ॥ सोई मन राम कीं भावे ही। कनक कामिनी पर हर नहिंबाप बंधावेही ॥ (टेक) सव ही सीं निरवैरता कह न दुलावे ही । शीरक बानी बोक्रिकेरस अमृत प्यापे हो ॥ १॥ कैठी मींन महे रहे के श्रारतम नावे हो। अरम क्या संसार की सब दृरि उडावे हो ॥ २ ॥ पेची इस्त्री बोस की मन मनहिं मिलाने हो ?

अरम क्या संसार की सब हरि उड़ावे हो ॥ २ ॥ पंची इन्द्री बांस की अन अनहिं जिलाने हो । काम कीच अब्द लीअ की पान पोदि पहाने हो ॥ ३ ॥ बांचा पद की पीक्ष के ता शाहि समावे हो ।

चौथा पर की चीन्द के दा नाहि समावे हो। सुन्दर ऐसे साधुकी द्विंग काल न वाबे हो। ॥।। समामीदि राग पंपारा हो।

प्रिति वित्र संसार साँ मन किया न्यारा हो ॥ (टक)

सतगुरु शब्द सुनाइया दिया ज्ञान विचारा हो ।

भरम तिमर भागे सबै गिह किया उच्यारा हो ॥ १ ॥

चाखि चाखि छाडिया माया रस खारा हो ।

नाम सुधारस पीजिये छिन बारम्बारा हो ॥२॥

मैं बन्दा ब्रह्म कांना का बारन पारा हो ।

ताहि भी कीइ साधवा जिनि तन मन मारा हो ॥३॥

श्रान देवकों ध्यावर्ड ताके मुख छारा हो ।

श्रान देवकों ध्यावर्ड ताके मुख छारा हो ।

सुन्यों तेरी नीकी नांऊ हो।

मोहि कछु दत दी निये विलहारी जांऊँ हो।। टेक ॥

सव ठाहर होड आइयो रुचि नहीं कहांऊं हो।

ब्रह्मा विष्णु महेश लों अरु किते वताऊं हो।। १॥

में अनाथ भूखी फिरों तोहि पेट दिपांऊं हो।

धुकालगे तें गिर परों तव ही मरजांऊं ही।। २॥

दुर्वल की कछु वूमिये कवकी विललांऊं हो।

तेरे कछु घटि है नहीं मैं कुटुम्ब निवांऊं हो ॥३॥

एक पींचारा ऐसा झावा, कर्म पीमसा के कारसा,

भाषणी राम पठाया n टेक ॥

पींत्रसा प्रेम मुठीया भन की. जय की बाता जमाई।।

प्यान धुनि बंध्यो श्रति द्वाे. छन्न कित हवाई ॥ १॥

करम कांटी काढ़ करक गण ग्यान के सकेती।

प्रसुके भागे मेले ॥ १॥

पैज सपेव ममाम करकै.

मोई नोई कई पिनावश आये.

राम नाम महिमा 50 त्य रुई सवन की पीजे । परमारथ कुंद ही धरी है, मसकत कछु न लीजै ॥३॥ रुई वहुत पीजी वहु विधि कर, मुदित भये हरि राई । दाद् दास अजव पीजारा, 'सुन्दर ' बिल विल जाई ॥४॥ ॥ पद ॥ सखी म्हारो नीद नशानी हो। पिवनी रो पन्थ निहारतां, सारी रेन विहानी हो ॥टेर॥ सात सखी मिल सीख दिवी, मन एक न मानी हो। देखे कल विन ना पंडे, जिय निश्चय जानी हो ॥१॥

Œн	मी राम नाम महिमा प्य				
ब्रह्दन्त					
भ्रम्तर	मुख पिय—पिय वानी हो पेदल पिरह की, वे पीर न मानी हो ॥				
वर्षी	चातक मन विज बुस्ती,				
' मीरा	मक्स्ची विश्व पानी हो । ग्रम्माकुळ विरहनी,				
	सुध नुध विसरानी हो ।				
	।। पद ।।				
पिया तीरे नाम झुमा लुमानी हो । नाम सेव विरवा सुबया,					
	मैसे पाइन पानी हो ॥टेर				
सुरुव	कवहू ना कियी,				
मनिका	षहु काम कमानी हो । कीर पडाय र्जा ,				

ष्ट्री शम नाम महिमा

रैकुएठ पठानो हो ॥ १ ॥ श्रमं कुंनर नीयो, वाकी श्रमध घटानी हो । नमड़ छाड़ दरि श्राविया, पश्च जूण छुटाणी हो ॥ २ ॥

नी नाम इमारे गुरु दियी

मोड वेद वलानी हो।

सीरां दासी बार्रें अपनी

रख अपना कर जानी हो ॥ ३ ॥ राम राम है, राव राम है. राम राम है, राघन राम 1.

४ कीन मंत्र वह, निसे जप रहे

अष्टादश छः ऋक्, यजु, साम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, रायव राम ।

इ कीन योग वह योगी निसप्र वार फेंक ने

रान ह, रान राम ह, राष्ट्री राम रामं है राघन राम । ∤ सुस्थान है वह, जिससे -

। सुसभाव है वह, विससे -पक्त पि अप्राण्डिति सिद्ध सहस्र सब काम र्रे स्ताम है सीम सीम है.

रामक इति दार्मार्टरामि है, राघव राम। २ कीन अमृत वह भितिको पैकिर દર राम राम है, राम राम है, राम राम है, राघव राम । १३ कीन भुवन वह, जिसमे बस कर पाता जीव सहज विश्राम ? राम राम है, राम राम है, राम राम राधव राम । १४ कीन वर्ण दो. चार वर्ण के दूपगहर भूषण अभिराम ? राम राम है, राम राम है, राम राम है, राघन राम । १५ शवरी ने जी शास्त्र पढ़ा था वतलाना 'तु ' तुलंशीरांम ? गम राम है, राम राम है, राम राम है, रावव राम । १६ कीन नमन वह, निसमे सारे

देवों की साष्टांग प्रसाम ?

राम राम है, राम राम है, राम राम है, राभव राम ।

नीमापराध— इस होने से बच बर लाग (एस) कर की किये

सिंद्रिन्दासित नाम वैमम कवा की शेरापोर्मेन्द्रपीर कदा गुरु शास्त्र पेर पचने नाम्म्यर्प वाद प्रम

नामास्तीति निषिद्धवृत्ति निहित स्यागी च घर्मास्तरैः स्वान्ये नाम अपे शिषस्य च इरेर्नामापराचा दशः ॥

इस इरर के अप्रेक में शाद शक्त करने वाले सम्बन्धे कवि श्रीप्र शास—भाति वरने के जिए वस साम्परश्य काने होत्र को बुक्त शास मध्य वरने के जिए शास्त्रों का आहेंगे है। कहि बात सम्बन्धन--

राम माध्यकी क्रोंपिंध सठगुरु दिनी बताय । < क्रोंपिंध स्ता कर पंच रसे, साकी बेहन कांच त

दस दोष ये हैं-

१—सिन्नदा—सत्पुरुषों की निन्दा, सच्छास्त्रों की निन्दा. मन्मन्त्रों की निन्दा इत्यादि से मतलब है। इनमें से किसी की निन्दा के साथ किया हुआ नाम जप सदीप होने के कारण राम प्राप्ति में पूरी बाधा हो जाती है।

२—'श्रसित नाम वैभव कथा' —श्रसत्पुरुष के सामने नाम का माहात्म्य कहने से नामके फल में हास हो जाता है।

प्रश---

राम नाम से तो श्रानेक पापो तर गये, किर पापियों को राम नाम क्यों नहीं सुनाना चाहिए।

उत्तर—

श्रनेक पापी राम नाम की शरण लेकर तिर गये हैं मो तो पर सत्य वात है। उन पापियों ने जिस दिन नाम की शरण ली थी, उसी दिन से पाप — प्रवृत्ति सर्वथा त्याग दी श्रीर राम नाम स्मरण में श्रारूढ हो गये। कारि पुरूप सदा दिल अगवान् में कहापि अेद सुद्धि नहीं होन्य कादिण। यावण् सात्र विश्व राम सब देखने का भरपूर कान्वास करना वाहिए।

'सहरार बावन में बानदा यह बहुत बड़ा भारी दोष है।

इस निये सद्गुर बनाने के पहले बहुत विचार करने की आवरवनता है। मुख्य होपनिया में सद्गुर घोगम मधा पुरूष के दा विश्वस्थ बत ने हैं— भोजयो बीर स्वानिस्मा । सामी के जानने वाले हो बोर स्वान हुए खबरवा ही काम-कांचि राग-कोंबाद विकारों से सब ना रहित हों। ऐसे बनाइकोंन की शरण जाने से बीड़े प्रश्लावाप कीर समझ करना के जान तो कससे करदिए सन्त से स्वरूप जान नवी होता।

य शास-विधिष्ठत्युव्य पर्तते काम कारसः।

न स सिद्धिमवाप्नीति न सुखं न परां गतिस् ॥

श्रर्थात् जो मनुष्य शास्त्र—विधि का त्राग करके श्रपनी इन्छानुसार श्राचरण करता है, उसे न तो सिद्धि मिले हैं। न सुरा मिलता है श्रोर न परंगति ही होती हैं।

द्यान्त-

दूसरे स्थान में जाने वाली चिट्ठी के लिफाफे पर इर पैसे के टिकट न लगाकर छ, पेसे भी पुढ़िया बाय कर लिफाफे में डाल कर बन्द कर हैं और तिफाफा लेटरवक्स में डाल हैं। इस बिधि का नतीजा क्या होगा ? यही ननीजा। होगा कि किलीयरंस करने वाला, आहमी जिक्कफा खोल का छ पैसे तो लेख में डाल लेगा और लिफाका रही की टोकरें में टाखिल होगा। अस्तु शास्त्र विधि हमारे लिये कल्याग् करने वाली वस्तु हैं। शास्त्र मर्याटा संहित नाम समरण न करने से महा प्रतिवन्त हो जाता है।

६—' वेदवाक्य में अथ्रद्धा' कहा गया है कि –' वेदोऽखिली धमें मूलमू' चारों वेद राम रिक्क के मृल हैं। ऐसी स्थिति में जब राम-क्रिका मूळ स्वरूपवेशमें की चलता की रेटब राम म्यम स्मरणस्मी शमर्जक मध्यरपी पक्ष प्रेसे हे सकेगी है

७---'सारू अन्वारप्रसः ---शर्भ इत् वो श्रसः वासेनास का क्षप करने काजा सतस्य अस्त होता है।' इसमें तक हारायह

कहना- असी यह ही स्पेगी को अपनी और जाशांपित करने की कदिराकों के हैं। महार कहाँ देवाड़ एम माम होने से भी अकित

दो ती दें⁹⁹पड सावता श्रूपने औं कश्ने पाडा सुनुष्य धान में र्देश काता है और माम ध्याया मही कर सन्ध्या 1 द 'नामारकेति के पद्र पदि' शाम वा अद्यासमान कर हर में

दिंसा चोरी, व्यामियार चावि याप धर्म करता को चौर कहत रहे- नाम भी बढ़ा महिमा है। साम स्मरण करके बढ़ सब पार भी मृगा। यह सावना भी बड़े सारी अवदे की भवटी है। कह न्यम प्रेमी को करानि शास विरुद्ध कर्म नहीं करता चाहिये ।

६--- 'विद्वित त्यागी'--- उत्तम मर्थ-माममाविके बर्म-बीते 'बाग स्थान के बागे सम्बत-बन्धा को

<ीक्र नहीं।' भी स्कृत हा यस स्थापना भीर चटा र क्या राजा भी धामनाम अभी के लिये पाता है।

१०- धर्मान्तरैः साभ्यम् ' गम नाम के तुल्य ही दूसरे धर्म सममता जैसे दान, पुराय, श्रवादि के समान राम नाम को सममता बढ़ा भारी दोप है। गम नाम रामजी का स्वरूप है. भला श्राम कर्म गम नाम की समानता कर कैसे सकते है ? कदावी नहीं । श्रतः ध्रम व मीं के साथ साथ शम नाम को सब से श्रे घ्र सममा कर रामस्मरण करना चाहिए कमें कितने ही उत्तम हो, सकाम भाव से किये जाने वाले निस्सन्देह बन्यन के हेत है, पर वदी चत्तम वर्स निष्याम ओव से की आज्ञा समम कर रामजी के लिये हो किये जायेँ तो अन्त करण शुद्धि क्षप फल देने वाले हो जाते हैं, पर याद रखना चाहिए राम नाम की बराबरी कोई कम नहीं कर सकता।

इन दस दोषों से वचकर नाम जप किया जाय तो तत्का ज रामजी भी प्राप्ति हो सकती है--

राम राम सब कोई कहै, दस-ऋत कहे न कीय। एक बार इस ऋत कहै, तो कोटियज्ञ फलहोय ॥

🏂 अत' दस दोघों से बचकर यदि एक बार राम नाम स्मार्ख मरे तो करोड़ यक्नो का फल स्त्रका गणजी मिल जारे हैं।

राम शास माहमा (१००
 शासमी की मिक्त करनी हो प्रशक्तो कावना काम बदमने को
 नाममी कोशिया करनी चाहिए-

'साची संगत सामकी जे कर मान काय।

' इरिया ? यसी सा करे, कारत करना डीय अ

सन्त वाक्यम्---काः समराम समन की जो द्वी सनमें।

दीप दूर ने ढाल राम क्यूं राखे वनमें । वन से पाप निकास कर भाव मिक वित्रार।

सील साच सन्तोष-भन पारण सुँगव पार । पारण सुँगव पार, शन रट साचा मनमें । करेंद्र ससगराम, अभन की जी हुवे सनमें।

यदि शम्मक वश इन दोवों में से किसी तरह का नामा-पराध को काम का सस कापाध संस्टान के स्पाव भी पुन

पंताभ को काम का सस्य चपग्य संस्टान के स्पाव भी राम नाम स्मरण की है— CY

नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरन्त्यपम् । श्रविश्रान्तप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणिच ॥

इति ॥

कोइ तुर्वी मैना सबे मैं ।

।) खुद मस्ती।। कीर होसा मस्त कीर माल मस्त

कीइ स्वान मस्त पहिरान मस्त

कोह राग रामियी घूने में 1) कीह क्षमक मस्त कीह रमक मस्त कीह शवरंत्र चौपड़ खुने में .। एक सुद मस्ती विन कीर मस्त सब पड़े क्षनिया कूने में ।। १ ॥

कीह ब्राक्त का गस्त कीह शाकत गस्त कीह श्रीक्ष ताह दोती में । कीह येद मस्त कतेच गस्त कीह महके में कीह काशी में ।:

काह महक न काह कीह ग्राम मस्त कीह पान मस्त

कीह ग्राम मस्त कोह पाम मस्त कोड सेवक में कोड दासी में । एक सुद् मस्ती विन श्रीर मस्त सव पंडे अविद्या फासी में ॥२॥ कोइ पाठ मस्त कोइ ठाठ मस्त कीइ भेरच में कीइ काली में । कीइ ग्रन्य मस्त कीइ पन्य मस्त कोइ श्वेत पीत रंग लाली में ॥ कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोई पूरण में कोइ खाली में । एक ख़ुद मस्ती विन श्रीर मस्त सव बन्धे अविद्या नाली में ॥ ३ ॥: कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोइ वन पखव श्रीनारा में । कोइ नाति मस्त कोइ पांति मस्त कोइ वात मात सुत दारा में ॥ कीइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त

पम शुग्र शाम महिस कोइ मस्मिद ठाकुर द्वारा में। पक सुद मस्ती विन ग्रीर मस्त सब बद्दे अविद्या घारा में ॥४॥ कोड राज मस्त गज बाज मस्त कोइ खप्पर में काइ फ़र्ल में । कोइ जुद्ध मस्त कोइ ^मुद्ध मस्त कोइ खड़ग कुठार बसुद्ध में । -कीइ प्रेममस्त कीइ नेम मस्त को इ इहीं के में को इ मुक्त में । . प्यक सुद मस्ती विंन क्रीर मस्त सब नक्के अविद्या जुक्हें में ॥ ५ ॥ कीड शाक मल कीड लाक मस्त कोइ सासे में कीइ मजमब में।

कोइ शाक मल्ल कोइ लाक मल्ल कोइ काल मल्ल कोइ काल में कोइ मलमज में। कोइ मोग मस्त कोइ स्थित में कोइ पंचल में पूर्व कोइ स्थित में कोइ पंचल में

मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥६॥ कोइ उर्ध्व मस्त कोइ अधः मस्त कोइ बाहिर में कोइ अंतर मैं। कोइ देश मस्त विदेश मस्त कोइ औषधि में कोइ अन्तर में ॥ कोइ त्राप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में । एकं खुद मस्ती विन श्रीर मस्त सब अमे अविद्या नंतर में ॥७॥ कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में व कोइ गुफा मस्त, कोइ सुफा मस्त कोइ तूंवे में कोइ लोटे में॥ ्कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ अस्ती में कोइ खोटे में। एक खुद मस्ती विन और मस्त सव

की राम नाम सीहैसा राप्त १०६
रहे भविया टीटे में सदम
यह सीक्षिक मस्त कहैं। सी बरता
दैनाया के इंग्लंब में ।
कीन करे तिनकी निनती सब सकदे हैं हड़ संग्रह में प्र
हिन में इस्ट तुस्ट इक दिन
में स्थिति सदा भर्मगम में ।
एक हुए महरी विन कीर मस्त
सब मुद्धे अविद्या र्वमस में ॥६॥
रामेथी नित्र इसारी ही ।
हुम क्लिकी की नहीं भोषी नग सारी हो। टेर
भाव इमारे पीतमा वसि भाउ में तेरे ही ।
र्ग्योभितक मजर्म्य कूँ विरहित यूँ टेरे ही ⊾१०
बाट तुम्हारी मीमता केता दिन बीता हो ू
ुदुमरे हो स्वाहर नहीं हुए रह्या नपीका हो ॥रेले

राम विद्योहै में दुखी मन करत अनोहा हो। पाचुं वैरस हुय रही वं कियां विद्योहा हो ॥३॥ दुख मेटरा सुख सागर निरघारं। श्राधार हो । सहनराम' की वीनती घर आओ मेरा प्यारा हो ॥४॥

उपसहार

नाम रूप गति अकथ कहानी, समुंभत सुखद् न नात पखानी । श्रगुण सगुण विच नाम सुसास्ती, ्डभय प्रवोधक चतुर दुवाषी ॥ अगुन सगुन दुई बहा सरूपा, अक्य अगाध अनीदि अनूपा। डमय श्रगम जुग सुगम नाष्ते, कहेऊं नाम यड़ ब्रह्म रामते। ें मत षड़ ' नाम दुहु तें,'

किये नेंहि जुग निज वस निजवूरें।

भी रास साम सहिमा प्रीहि सुमन निन जानहिं अनकी. कहरूँ प्रवीति प्रीति रुपि मनकी। की पड़ खोट कृदत अपराधू, मुनि गुण मेद समुक्ति इहिं साग्रा (इसमीवामधी) भगवान् ! पुरुषोत्तम भी इत्याचनुत्री न व्यपमी विका-वासी गौराको में भी इसी प्रकार कथन करते क्रस सास्त विक राम रहस्य को संवादय 🗐 सिष्ट किया है--बासत् को मापछुठा सें सत् तरक 'रामजी' को इस प्रशाद दिन्या कर---'नास तो विद्यते भाषो ना भाषो विद्यते सदः'' (3) 4125) न्नयात बसरय बस्तुका मान नाही होता और सत् तस्य (शम) का कभी सभाद नहीं दोता। यो समग्राकर भतम स्वरंप सनाहि

धामन्त्र निर्मुण् निराषार रासधीका सन् बहुबर, धाद धारवान्त्र विक्रसम्य भाव से शवशी को (का बानते योग्ब हैं, बसको) बरामें की इस प्रकार भविष्या करते हैं चौर कसक जानन का प्रस श्रमश्त्व सिद्धि बताते हैं, एवं कटिबद्ध होकर बड़े गम्भीर स्वर से वह घोपणा करते है-

'अनादिमत्परं-न्त्रहा न सत्तन्ना सदुच्यते ?

वह जोय (रामजी) श्रनाटि मत् हैं, श्रोर उस जोय-को न सत् कहा जा सकता है श्रोर न असत् ही।'

श्रव पाठक सञ्जन, बिचार करें सला स्वय भगवान कहते हैं कि वह बाणिद्वारा न सन् कहा जाता है श्रीर न श्रसत्, क्यो की बाखी का विषय नहीं। यथा--यतो वाचो निव--तन्त (तै ३-२।४।६) जिससे बाखी निवृत हो जाती है।

वात समम के वाहिर हो गई, क्यों की श्रनादि तो ६ पदार्थ हैं श्रीर श्रनिवचनीय भी बहुत से पदार्थ है। श्रव रामजी को कैसे सममता १ इसका समाधान यह है की समग्र श्रनादि श्रनात्म पदार्थ श्रनादि शान्त अर्थात् श्रमावरूप श्रनिवचनेय हैं, श्रीर रासजी श्रनादि श्रनत्त भावरूप है। यह राम रहस्य ठीक—ठींक सममने की इच्छा वाले सज्जन को नेक सलोह दी जातो है कि वह गीता के निम्न श्रोक के श्रनुसार किसी तत्वदर्शी भगवद-प्राप्त सन्त के पास जाकर—

उपवेदयन्ति वे हार्न हानिनस्वस्य इर्शिनः ॥ (गी क्षरेश) इस प्रकार मस्ति नेति वृष्णकत् वाकाम करके काळालुसार

इस प्रकार सीके नीयि व्यवस्त् प्राव्यान करके आध्याप्रसार सेवा द्वानुष करके काको प्रसन्न हुए बाल कर इस प्रकार प्रमा करने चाकिएँ, बच्च क्या हैं सोख क्या है विचा क्या है। क्यांच्या क्या है ?" तब कर महास्था के हारा कर-

हेरा होता चौर बर्ध हिन छस्तेन करने के बार समक्ष में बारस्यत्व है कि राम रहस्य डैका गृह है। रामायण मी सुनहु तात यह अक्षय कहानी ।

समक्रव बनहीं, व बाव बसानी। हमारे धाचार्यदेव भी कहते हैं।

'७ अगम अर्थे कोई बिरखा बाने जिन खोना दिनपाया'

पेसा होने पर भी कस की प्राप्ति का सावन बताते ई-'सर् शुरु मिते को कर्य बतावें जीव अद्युक्त मेला, वस करने में समी कल्याण कामना वाले सन्जनों से निवेदन है कि महात्मा पुरुषों का संग करके अपना कल्याण सम्पादन अति शीघ कर तेना चाहिए, और राम नाम का महत्व जानने के लिए गो० तुलसीदामजी के निम्न लिखित चौपाइयों की तरफ ध्यान देना चाहिए-

' जाना चहिंह गूढ गति जेऊ, नाम जीह जिप जानहिं तेऊ।

श्वर्थात् राम नाम का प्रभाव जानना चाडी तो जीत से जव करके देख लीजिए। अब शम नम और शमजी का क्या सबन्य है सो नी सन्त जानते हैं। यथा-

को बढ़ छोट कहत श्रपराधू,

सुनि गुन भेदु समिकहिं साधु।

बोलो राम श्रीर राम नाम महाराज की जय।

वेदारत प्रवाधी सोला वर्णन

112

ध्यप्रवास्मागप २

सम

(१) ब्राभिवाप-मानमराप (बान्तकरख के हेपारिनाव) (२) ब्माविकाप-शामिताय (स्वूक्त देह सम्बन्धी ब्याघी)

क्रप्पास २ आन्तिज्ञान धीर आस्ति ज्ञान का विषय (१) आर्थाभ्यास-भाग्तिकाम का विषय (सर्पांतिक या

हेड प्रपन्न । (२) द्वानाच्यास—भाशिकान (सर्वाहिक का या प्रपत्न)

बासरमञ्जू का झान (बासरमावना)

(१) प्रमायाग्त चासन्भावना (वेद में चासन्भव का द्वान)

(२) प्रमेयगत असन्तावना (प्रमाण के विषय मोशानिक में चसन्त्रवं का कान।

निप्रद २

(१) क्रम विप्रद-धम निधमादि से चित मिरोच कर्मा ! (२) इट निमध्-सुप्राची द्वारा प्रारही का निरोध कर के विधे

प्रति का मिरोप करना। सच्य २

(१) श्वस्त्य क्रभ्रयः-

(२) शहरम सध्य

बेहान्त पदार्थ संद्वावर्थन बातस्य व

(२) विषयामन्त्र-काग्रत वर्ष स्वप्न में विषय की प्राप्तिरूप निमित से पकाम हुए चित्त में कामन्द का जो साग्रिक मृति विस्व

(३) पासनामन्द-सप्ते से क्लाव आदिक कामीक्टरंग में

(१) पुरव कर्म (१) शाय कर्म (१) शिम कर्म ।

(१) ब्रह्मानल-समाधि में भाविश्व या श्वितिगव को विम्बम्द जानन्त है सो।

एपचा ३ (१) प्रत्रेषक (२) विशोधका (२) कोकेच्या । कर्म व

फ़रूप सेशामन या मात्रावन्त ।

को जामनाञ्चन होता है।

कर्च ३ (१) संचित करी-बन्धान्तरों में संचय किये इय करें : (२) भागामी कर्म-बतमान बन्ध में कियसाता कर्म । (१) प्रारव्य कर्म-क्वेसन बन्म का जारमक कर्म ।

क्रमंदि ३ (१) कमें-वेद विदित कमें। (२) विका- वेद विदय कर्रे।

का सभाव ।

(३) वेड विक्रिय और वेड विक्रत होनों कर्रों के क्यांपरे

कारणवाद ३

- (१) च्यारम्यवाद (न्याय मत का परमागुवाद)
- (२) परिणामवाद सांख्यमत का प्रकृति का परिणाम जगत है
- (३) विवर्तवार (वेदान्त मत में जैसे-निर्विकार प्रद्य में अधिष्टान ब्रह्म से विसम सत्ता वाला अन्यया खरूप जगत्, सी ब्रह्म का विवर्त (किंत्यत काम) है।

जाग्रत ३

- (१) जामत जामत—वर्तमान जामत में स्वरूपाकार वृति । (२) जामत स्वप्न—जामतावस्था में मनोगाज्य का होना ।
- (३) जामत सुपुपि —जामत में भ्रमपूर्ण जङ्ब्ति। ैं जीव ३
 - (१) पारमार्थिक जीव—साक्षी (फूटस्य) चेतन ।
 - (२) व्यवहारिक जीव —सामास अन्तःकरण रूप जीव।
 - (३) प्रतिमासिक जीव-सामास अन्त करणक्प व्याहारिक जीव में स्वप्न में अध्यस्त जीव।

जीव के नाम ३

- (१) विश्व-जामत् विषै तीन देहीं (शरोरों) का ध्रिसमानी जीव।
- (२) तैजस-स्थप्त में सूद्रम श्रीर कारण देह का श्रमिमानी जीव।
 - (३) प्राज्ञ-सुषुप्ति में कारण देह का अभिमानी लीव।

(१) व्यक्तिमृत् ताप-चळ्ळाचेचर प्रायति से होने काळा उस प्रास्टब १ (१) प्रच्या प्रास्टम (१) चानिच्या प्रास्टम (६) परेच्छ

प्रारम्य । मस ३ (१) विराट ">) दिख्या गर्म (६) ईएवर ।

सच्या दोप १ (१) धारुपाति दोप-लक्ष्य के एक वश में वर्तने वाला ख्रण

 (२) व्यक्ति क्याति वीप-कावय में ज्यात दोकर प्रकारम में भी वर्तना ।
 (३) व्यक्तम्य तीप-कावय में कावया का न वर्षना ।

यदार्च श्रुप्तिंच भाष क द्वारपाल (१) सम (२) शन्तीप, (३) विचार, (३) शस्मंग।

(१) सम (२) शन्तीप, (३) थिपार, (३) सस्मैग । इस्त में प्रतिवर्ण्य

(१) विषयों में श्रासिक। (२) वृद्धि की मन्त्रता।

- (३) बुतर्क ।
- (४) दुराग्रह ।

ज्ञान में प्रतिवन्ध निवृत्ति का उपाय

- (१) शमादि-यह विषया शक्ति के नाश का हेतु हैं।
- (२) अवण-यह बुद्धि की मन्दता का नित्रतेक है।
- (३) मनन-यह कुर्तक का निवर्तक है।
- (४) निविध्यासन-दुरायह का निवर्तक है।

विवेकादि , ४

(१) विवेक, (२) वैराग्य, (२) पट् सपत्ति, (४) मुमुत्तता । पदार्थ पचविध

श्रमाव ५

- (१) प्रागभाव-कार्य की उत्पत्ति से पूर्व जो कार्य का स्वभाव।
 - (२) प्रध्यसाभाव-नाश के पश्चात जो स्रभाव होवे सो ।
- (३) श्वन्योन्याभाव-परस्पर में जो परस्पर का स्रभाव।
- (४) श्रत्यन्ता भाव-तीन काल में जो श्रभाव।
- (४) सामायिका भाव-समय पाकर वस्तु का श्रभाव हो जाना।

कोश ५

- (१) श्रन्नमय कोश।
- (२) प्राणमय कोश ।
- (३) मनोमय कोश 🗁
- (४) विज्ञान मय कोशः

प्रमाण ६

- (१) प्रत्यदा पांच लाने निद्रयाँ।
- (२) श्रतुमान प्रमाण-जैमे पर्वत में श्रिप्त के ज्ञान का हेतु शुँखा।
- (३) उपमान प्रमाण-सादश्य का ज्ञान।
- (४) शब्द् प्रमाण-चेद ।
- (४) श्रर्थापत्ति प्रमाण-जैमे दिन में श्रभोजी स्यूल पुरूप छे रात्रि में भोजन का जानरूप हेतु ।
- (६) अनुपलविध प्रभाण जैसे घर में घड़ा के अभाव के ज्ञान फी हेतु घट को अप्रतीति कहा जाता है।

भ्रम ६

(१) कुल, (२) गोत्र, (३) जाति, (४) घर्ण, (४) श्राश्रम, (६) नाम।

लिङ्ग ६

- (१) उपक्रम उपसंहार-(श्रादि श्रन्त की एकता)
- (२) श्रम्यास-(एक वार पठन)
- (३) अपूर्वता-(अलीकिकता)
- (४) फल-(मोच)
- (४) अर्थवाद-(स्तुति)
- (६) उपपत्ति-(श्रन्कूल द्रष्टान्त)

े वेद-श्रंग ६

(१) शिचा, (२) फल्प, (३) व्याकरण, (४) निरुक्ति,

गम	येदान्त पदार्थं संज्ञा वसर्थ	19.
(४) सम्ब	(६) व्योक्षित्र।	
गल ६		
(१) सीस्य (४) चचर र शास्त्र	शास्त्र (२) योग आस्त्र (३) पूर्य भागीसा शास्त्र (४) त्र्याच शास्त्र (भीमाँशास्त्र ६) वैशेषिक
	पदार्थ-सप्त विघ	
ध्यवस्था ७		
वंधन (१) कहार (२) कावः (३) विनेश् (४) परोड् (४) कपरें (४) शाकः (७) दितः		पथा-
चेन ७	(चेतन (पंडे धर्म सम्पन्न)	
	चेतन (पश्चिम सम्पन्न) चेतन (पनिचा मिशिष्ट)	r
(३) शस	चतन (शुद्ध चैतन-समाध्यि चैतन) ता चतन (सम्वे करण में चाया	्र द्वमा चेवन)

(४) प्रमाण चेतन (इन्द्रियों द्वारा शरीर से बाहर निकल कर घटादिक विषय पर्यन्त पहुंचने वाली वृति।) (६) प्रमेय चेतन (विषयाकार-याने घटादि पदार्थ प्रवाच्छिन्न)

(७) प्रभा चेतन-(घटादि विषया कार हुई जो वृति है उसी प्रमा कहते हैं, इसी को प्रमिति चेतन या फल चेतन भी कहते हैं।)

पदार्थ अष्ट विघ

पाश =

(१) द्या, (२) शंका, (३) भय, (४) लग्जा

(४) निन्दा, (६) कुल (७) शील (५) धन ।

सद =

(१) कुलमद (२) शीलमद (३) धनमद।

(४) रूपमद (४) यौवनमद (६) विचामद ।

(७) तपमव, (८) राज्यमद्।

नव विघ पदार्थ

संसार ह

(१) ज्ञाता (२) ज्ञान (३) ज्ञोय, (४) भोका (४) भोग्य (६) भोग (७) कर्त्ता (८) करण (६) क्रिया।

पदार्थ दक्ष विधः—

् पदाय दस विधः— सामी क्योत नेतनस्य

नाड़ी घोर देवता १०

गम	पनान्य पनार्थ मक्षा भर्तीम	197
(3) f (3) g (3) t (4) t (5) t (6) t (6) t	हा (स्वरण्ड) हरि वेचना । पंताबा (स्वर सूर्य) जहा वेचना । सूर्यणा (सम्प्रमा) जड़ वेचना । तिसरी (वाधिया नेज) हन्द्र वेचना । हामि जिहा (बाम नेज) बच्च वेचना । पूरा (वाकिया बच्च) क्ष्म वेचना । यमारिक्ती (बाम बच्च) इस्कुर (गुरा) ग्राप्यी वेचना । इसकुरा (स्वर) सूर्य वेचना । रांक्रनी (सामि) चन्द्र वेचना ।	
भ्रान सा	यकादश विघ(११) यन ११	
(£) (8) (8) (8) (6)	विश्वस-सरय- शासाय का झान । वैदाय-नारा बान पवाणी सं वपरामता पर संपर्ध- (सम १ दम २ अझा,६ स एम ४ चीर मितिकाइ) गुमुद्दता-कवल परमानंद की प्राप्ति की इच्छा एरपमि-विधि पूर्वक सहुक शरस होना । भवरा- सक्य मान भ्यान	
(=	मतन	

-

(ह) निदिध्यासन

(१०) मनोनाश-रज, तन स्वभाष का श्रभाव श्रीर शुद्ध मतो गुणमय पवित्र भाव के पश्चात् कर्त्ता पने का श्रभाव।

(११) वासना चय-निजस्वरप पूर्णे खुख् को समानता में समग्र एपणात्रों की समाप्ति।

द्वादशविधपदार्थ

नाक्षण के त्रतः—

(१) ज्ञान (२) सत्य (३) शम (४) इम (४) श्रुत (६) अमात्सर्थ (७) लज्जा (५) तितिक्षा (६) अनस्या (१०) यज्ञ (११) टान (१२) वैर्य पदार्थ त्रयोदशः—

भक्त लच्याः—१३

(१) निष्काम् भाव 🍃

(२) संसार में दुख दर्शन।

(३) परलोक में नश्वर चुद्धि

(४) तत्त्व दशीं सद्गुरु की शरण।

(४) गुरू में निर्दोप बुद्धि

(६) परमेश्वर में सर्व कर्म समर्पण । (७) शीच, तर, तितिक्षा श्रीर, मौन ।

(५) साधुः मगः और स्वस्य ज्ञानः।

राम	मेदान्त पंतार्थ	संका वर्णम	188
(६) मध्यपर पाव (१०) समेत्र सराव (११) चालिकेती (११) सभी मृद्धो (१६) स्व पर हुई पद त्रिपुद्धी १४	हरान । में बावला अक		==
हिम्द्रिव चम्पारम (१) श्रीत्र (काम) (१) खचा (चम (१) चहु (मैत्र) (४) खिहा (१) सिहा	ही काय	विषय काषिभूत शब्द स्पर्य स्प स्स	
(१) बारू (१) इस्त (१) पेर (४) कास (४) ग्राप	वारित इन्द्र बाममझी मजापति पम	वसम केमा देखा गमन रिक्षोग मक स्वाग	,

घहचना

ध्यन्तः करण की त्रिपुटी

(१) मन	चन्द्रभा	सकल्प विषय
(२) ব্রব্ধি	त्रह्या	निश्चय
(३) चित्त	वायुदेव	चिन्तन

स्द

पदार्थ पच दश विधः---

माया के नाम १५

(४) ऋहकार

(१) माया (२) श्रविद्या (३) प्रकृति (४) शक्ति (४) सत्या (६) मूला (७) तूला (८) योनी (६) श्रव्यक्त (१०) श्रव्यक्त (११) श्रजा (१२) श्रज्ञान (१३) तम (१४) तृच्छा (१४) श्रनिवचनीया।

पदार्थ पोडश विधः—

(१) हिरएय गर्भ (२) श्रद्धा (३) श्राकाश (४) वायु (४) तेज (६) जल (७) पृथ्वी (८) वर्शोन्द्रिय (६) मन (१०) श्रन्न (११) बल (१२) तप। (१३) मत्र (१४) कर्म (१४) जोक (१६) नाम ~_

सत्सङ्ग के भ्रयता सिद्धान्त

भगवान् कहत हैं, हे अर्जुय---(१) नामकान् अनान् इच्ट्या क्रियों अवित यो नर । स याति परंग स्थानं विष्कुना सह मोदते ॥

त्रस्माञ्चामानि कीन्तेष मधस्य हट मानस । नाम युक्त प्रियोऽस्मार्क नामयुक्ती मयार्जुन ॥

नाम युक्त प्रियोऽस्माक नामयुक्ता मक्ताजुन ॥ क्यान् नाम (राम) युक्त पुरुषों को देश कर को सनुष्य

क्यान् भान (राम) शुक्त पुरुषों को देश कर को सहाय्य प्रस्तन होता है वह पत्त पास को भाग होकर शुक्त दिक्सु के साथ बानन्द करता है। बाद ह कहुने गंहद विकास संस्ता

सास संप्रत करो ! श्वसमुक्त स्वक्ति युक्ते वदानिय हैं। हे कार्युस हुम नाम पुक्त को क्यो ! (श्रीसम्बक्तिम 'रिवर' करा)

(१) ब्यक्रान भाषयम् विश्लेष परीक्षकाम भारतेक्षकान शाक विमोश तथा मिर-इश वर्धि में सात चित्रानास की सब

होकि विभन्न चर्या स्थापन कीर सोक्ष संभव है। (पयदसी ग्रीर सीव)

- (३) सुन्ती होने ना उत्तम उपाय दूमरों का टोष न देखना है केवल एक दिन अनुष्ठान करके अनुनव करलो।
- (४) फरना बढ़ी है जो कर्त्त व्य है। श्रत कर्त्त व्य का पूरा पालन होते ही सदा सुख की प्राप्ति हो जाती है।
- (४) भगवान के सनी विधानों में परम सन्तुष्ट रहने याला भगवत्प्राप्ति के अनि निकट पहुँच चुका है।
- (६) समय ही मच्चा धन है। समय से भगवान खरीदे जाते हैं। श्रद समय को सार्थक करना चाहिए।
- (७) छपना स्वमाय नहीं पलटा तो सममतो श्रमी बहुत इह करना वाकी है। स्वमाव ही स्वरूप बनता है।
- (म) अपना काम भगवान् ने अपने को ही करने की आज्ञा दी हैं। अत अपना कार्य अपने को ही करना चाहिए
 - (६) राम नाम साधन में ४ महायकप्रवत हेतु है
 - (क) नाम प्रेमियों का सग।
 - (ख) नाम समर्गा का नियम ।
 - (ग) भो गों में वैराऱ्य फीमावना।
- (घ) सन्तों के जीवन-चरित्रों का अध्यायन और सत्सग। मेरा तो इड विश्वास है कि राम नाम समस्य से अस्मनव मी संनव हो जाता है।

यम पेदान्त पदाचे संज्ञा नर्योम

(१०) पश्चमातपाय है चीर निर्वेशका महा प्रयम है। (११) मानव शरीर का क्षणित क्षपयोग हो जाना पर पुर्वि

मानी काम है। पाकन क्षेत्रे की सदा सुद्ध की प्राप्ति की कारी है।

धात्म निवेदन ।

सप कुछ क् है, कैं ही कें है, से नहीं कुछमी हैं है नाम । करवा परवा और करावा सिरमन सुष्टा एके साथ । यो कुछ किया कराया हैं ने हूं ही केरझ एक झमाट ॥ पुष्प पुनारी पूना सारी हूं हीन मावा तुम्हकी माय ॥

(54)

पूर्वमद पूर्वमिद पूर्वात्युर्व मुद्रस्यते ।
 पूर्वम्य पूर्वमादाम पूर्वमेनापशिष्यते ॥

शुद्धि-पत्र

श्री वाएं। यन्य के प्रेमी पाठकों से सविनय मानुनय नम्र निवेदन यह है कि प्रस्तुत वाणी में यन्त्र-तन्त्र प्राय हरव-वीर्घ शानादि की अनेक अशुद्धिएँ रह गई हैं जिसका कारण हमारी श्रमाय वानी के सिवाय श्रव किसको वतलाया जाय। श्रत हमारी भूल की तरफ न देख कर कुपालू मज्जन निम्न लिखित असाधा-रेण भूलों को सुदार कर पढे और साधारण (हुग्व-डीघीटि) विटियों को स्वयं सुवार ने की कृपा करे। अशुद्धि शुद्धि ãâ लाइन वर Ę धर 3 विवातक विघातक 8 ?3 प्रत प्रद १५ हुरानी पुरानी 80 3 वाग्गी वग्गी 20 20 मार्गी त्रागी 38 þ दरियाव परिया १४ 3 दरिभाव दरियाव १४ g श्चनुभवगिरा श्रमुभव 38 Ł 88 अ.प छाल्प 3 कन्यांग कल्याग् 88 88 अभिनियाँ श्रमिमानिया १७ १७ सम्पादक सम्पादन

जड

25

जिड

भगुद्धि दङ्ग पर्यो	रा द उ.म प्रार्थी	98 15 15	लाइन ४ ४
सरी मरता सनगळा	सम्य भरना	2 2 F	₹¥ 23
रित नो विराज्ञा	स-मध्या परित ना	~ E B	9 18 19
हाऊ इरान	विराभ्या टाइ ^{द्} रान	33 33 34	†o { **
इ.एडामन्त्रा निन्दा जिन्दिन	डरजायम्बा निन्दा चिन्तिन	के ई इंट इंट	9
मिरि डर्ग ऊम 4व	9विष्ठम उमे भव	8.0 8.0 8.4 8.4	7 73 74 2
भनुष्म उपनिषद् धेर्डु	चनुष्टय उपनियद् च नु	to to te me	\$ 8 E
डनमुति भन्ना कब्बत	धनमुनि मुद्रा ध वस्न्र∕	\$ £	1
•प्रमच रू सुर्वि	भग्नम् मित्रि		
ष्मञ्ज	+\ પ		

शुद्धि '	मुष्ठ	लाइन
भुव	इ ६	¥
मल	इ.प	r
খা	१०४	२७
पुरजा पॉय	१०६	ą
पॉय	१०७	ą
होय	१७७	=
मेरु	१०७	28
ऊत्रा	४०६	3
नामि	११०	5
दरिया	११६	3-
चित	११७	ક્
चुध	११७	२१
इनके	११७	ત્રફ
त्र्यनहर उ.ची	११८	3
	४४५	ጞ ፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞
वादशाह् सुका	१५८	3,
उत्तर हरी वोल	१४८	५ ४
जहाँ	१६६	3
শ্বাম	१७२	7
किरमिर किर	१७४ मिर १७५	इ १
श्रल च	१७५	3
लोह	१८१	१४
कीरी	रूर १८६	१३
चन्दर	१ दस्य १ ज ५	3
गगन	5 <i>28</i> 622	१०
	120	83

भगुद्धि			
	শুরি	वृष्	सारन
तक्ष पर्यो	न∦ु	\$ =	y
संग्र	पश्चामा	žς	7
मरता	सरा	38	19
मनताझा	मरना	ED	**
रित	म सामा	5	7
	चरिम	33	\$8
र्ना ८	मा	В	19
विराभ्ना	विराज्या	3.8	,
डा क	राइ.	33	ţ»
इरोन	दैरान	₹¥	83
%प्रवासम्बा	उन ज ायल्या	20	
निस्दा	निन्दा	Se.	
ত্রিন্টি ন	चिम्तिन	7.5	9
मरिडत	দ্ বি ছ ন্ত	3.0	
इ.स	3भे	32	43
ধর	सत	24	47
च्तुग्रम	चनु एव	ž.	8
उथ निपद्	प्र पनिप द ्	3ru	<u> </u>
घेडु	चनु े	χĘ	\$5
उ नमुवि	उनमुनि	ब्र वृद्	5
मन्त	गुहा	पर ₹ ३	2
फेक्सल	चेवस	₹₹	
दामच र्	4 प्रमचे मु	v-\$	₹₽
सुदि	सिद्धि ँ	w	-
क्रजा(ज	व्यवस्थ	F	
में	라	EV	*
*1		• 3	5

	' (8)
• भगुद्धि	शुद्धि	
	उस *	प्रम
चैप हन स	केव ह न	₹£
न्ने		158
सीम्बा	d.	³ o₹
₽ ₫	सीन्हा	210
ररशय	सुन	\$ 2
শীঅ	दरराख	er
নি শ্ব	षीय	5
· ·	निष	925
पेड पड़	₹ ₹	22%
. 2	भार	\$5€
सक्स	मोक्षे	₽₩
बर रात्या	सङ्ख	>₹≈
गुन्तासकी	ब्रह्मण	244
Q -31049	धुक्समन् गमती	Atta:
<u>।</u> सगाय	\$	2 25
exec.	श िगार्	机
नद	≸रख	3 6 5
सीन्द	वन	565
विकास विकास	िका	ခုနှ _{စ်}
Ŧ	विद्वदी	ŧξ
<u>चवा शा</u>	से	3 4 4
शिमी	पायाः	ه او د
क्रि	निमे	Do≹ .
रा. सटब्र	€ ₹	ως.
संदर्भ वर्षे	ਚੱਢਣ	3
40	पर्	tic t
	-	₹812

(ሂ)

ሗ अशुद्धि शुद्धि लाइन वेठ मेदी पाम Ros मेटी आश १५ 308 का X नींद 20 380 नाद परिच्छेद द्सरा श्रग्रुद्धि शुद्धि पृष्ठ लाइन

कपना 8 श्रपना नहीं करते 8A ++++++ হ্ श्रकामयत 3 3 कामयत पुरुपपे ति 23 ৩

पुरुपमुपै ति नापरमस्मि ११ नापरमिन्त ११ परम १५ जगत्पेतिम्

११ \$£ \$3 पमम् गजत्पे तिम् १६ पुरार्गी मे ς पुराण मे ξ ξ १७ इस इन १७ वेदान्ता वेदान्त হ্হ १४ ताव तावत् मुक्ति जगति मुक्ति जगति २२ १०

तिष्ठन्ति २२ तिप्रान्ति 23 २३ रामेति नामेति ৩ ર્3 नमामृतस्वाद 22 नामा मृत श्याट म्बत्त्वदर्शिन २३ १४ स्वत्त्व दशिति ध्यायेन्नाराग दुव ध्यायेन्नारायण देव २६ १४ २७ १३

Die

पिछला पिघला द्धयत्तरं रसा स्वर दन्द्र

ł.	(1)		
मग्रुद्धि	स्रवि	18	सार्
ह देग	इत्य	35	
मवी	मस्दिर	23	5
नोमी	योभी	30	11
वेदान्दस्था	वेदान्तर्या	80	
रामाग्रर	रामाचर द्रथम्	₹ <	,
नाय	बारवं	30	έ π ,
सिद्धिमबाद्यीसिमं ३	गतम् , सिद्धिञ्जाप्नोतिः		
जगदेतर यरा	C) configuration	नमत २२	*
नम	जगदेतम्बराकः मन		¥
स्रोमत	लोम स र्हे	3.8	•
पिलाचेगा	यय पिसारमा	92	\$£
विधा	निया	44	*
क्या	राम कथा	\$ <	*
सवाक्ष	सवही	45	£
नंस	पंस	ξ ⊏ ξ£	Ł
नम	मन	şe.	4
द्धार	द्वार	46	£
ग्यद्द वे	ऑड के		*
म उ	কুঁত দ	nf.	ક
त्यसी	सासी	20	\$8
स मा	111	=3	8
मर्द	अद नाम	44	\$0
त्यागे हम	++++	#E	\$
सिट	++	1.6	£
उ लोम	सोम	१०४	54
	7117	रेर्द्रम	52

अगुद्धि	शुद्धि	áb	लाइन
ण्क वार	वार वार	388	१६
नामकान	नाम युक्तान्	१२६	3
मानीं	मानी का	१२८	3
*** .	স্মালা	१२८	8
पूर्णन्य	पूर्णस्य	१०८	११
नोट'—परि	रेच्छेद दूसरा मे पृष्ठ ७३	की जगह ७४	श्रोर ५४
क जगह ७३ व	n सम्बन्ब है, श्रतः सम्ब	ग्न्धानुसार प ड	ना चाहिए।
		_	

अपने में भूल रह गई है।

